MOU Holder and Distributors
RN METALS Pvt. Ltd
Distributors of SAIL & VSP products in Telangana
Stockist of MS Beams MS Channel, MS Angle, MS Plates, TMT Bars
A-23/5 & 6, APIE, BALANAGAR, HYD.-500 037
040-23774718, 040-23774719, 9160111471

खबरें जो सोच बदल दे
शुभ लाभ
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

MINISO
Please visit store nearest to you at these locations :
IRRUMMANZIL (L&T MALL)
MOOSARAMBAGH (L&T MALL)
KOMPALLY (TNR PLAZA)

Postal Regd.No. HQ/SD/523/2026-28 | बुधवार, 26 अगस्त, 2026 | हैदराबाद और नई दिल्ली से प्रकाशित | Epaper : https://epaper.shubhlabhdaily.com | संपादक : गोपाल अग्रवाल | पृष्ठ : 10 | मूल्य-8 रु. | वर्ष-8 | अंक-235

राम ते अधिक राम कर दासा !!

रामलला को 10 हज़ार, सेवकों को चार करोड़

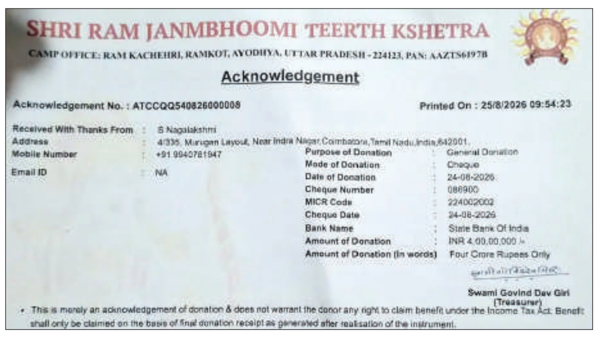
SHRI RAM JANMBHOOMI TEERTH KSHETRA
CAMP OFFICE: RAM KACHEHRI, RAMKOT, AYODHYA, UTTAR PRADESH - 224123, PAN: AAZTS6197B
Acknowledgement
Acknowledgement No. : ATCCQQ540826000008 Printed On : 25/8/2026 09:54:23
Received With Thanks From : S Nagalakshmi
Address : 4/335, Murugan Layout, Near Indra Nagar, Coimbatore, Tamil Nadu, India, 642001.
Mobile Number : +91 9940781947
Email ID : NA
Purpose of Donation : General Donation
Mode of Donation : Cheque
Date of Donation : 24-08-2026
Cheque Number : 086900
MICR Code : 224002002
Cheque Date : 24-08-2026
Bank Name : State Bank Of India
Amount of Donation : INR 4,00,00,000 /-
Amount of Donation (in words) : Four Crore Rupees Only
Swami Govind Dev Giri (Treasurer)
• This is merely an acknowledgement of donation & does not warrant the donor any right to claim benefit under the Income Tax Act. Benefit shall only be claimed on the basis of final donation receipt as generated after realisation of the instrument.

अयोध्या, 25 अगस्त (एजेंसियां)। रामलला के प्रति आस्था और मंदिर में कार्यरत कर्मचारियों के प्रति संवेदना का एक अनोखा मामला सामने आया है। चेन्नई से अयोध्या पहुंची महिला श्रद्धालु एस. नाग लक्ष्मी ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के लिए 10 हजार रुपये का दान दिया, जबकि मंदिर में कार्यरत कर्मचारियों के वेतन और सुविधाओं में बढ़ोतरी के उद्देश्य से चार करोड़ रुपये का चेक समर्पित किया। महिला श्रद्धालु ने अपनी ओर से दी गई चार करोड़ रुपये की राशि के संबंध में अपनी मंशा भी स्पष्ट की है। उनका कहना है कि इस धनराशि का इस्तेमाल राम मंदिर में कार्यरत कर्मचारियों की सुविधाएं बढ़ाने और उनके वेतन में वृद्धि के लिए किया जाए। मंदिर परिसर में इतनी बड़ी राशि सीधे रामलला को दान करने के बजाय कर्मचारियों के हित में दिए जाने की बात चर्चा का विषय बन गई है। श्रद्धालु की ओर से चार करोड़ रुपये का चेक दिए जाने की रसीद भी सामने आई है।हालांकि, अब इस चेक को लेकर बैंकिंग प्रक्रिया से जुड़ा एक महत्वपूर्ण सवाल भी सामने आया है। बैंक से जुड़े सूत्रों के हवाले से दावा किया जा रहा है कि जिस खाते से चार करोड़ रुपये का चेक जारी किया गया है, उसमें इस राशि के भुगतान के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध नहीं है।

चेक की क्लियरिंग पर टिकी निगाहें

बैंकिंग प्रक्रिया के अनुसार, किसी बड़े मूल्य के चेक को खाते से भुगतान के लिए प्रस्तुत किए जाने के बाद बैंक निर्धारित प्रक्रिया के तहत उसकी जांच और भुगतान प्रक्रिया पूरी करता है।

▶8पर

अयोध्या में संतों की बैठक 'चंदा चोरों, अयोध्या छोड़ो' के नारे

अयोध्या, 25 अगस्त (एजेंसियां)। अयोध्या में कारसेवकपुरम के पास स्थित ओम आश्रम में राम मंदिर के चढ़ावे में कथित चोरी और चंपत राय के खिलाफ चल रही संतों की बैठक को पुलिस ने रोक दिया। संतों का आरोप है कि बैठक के बीच पुलिस आश्रम पहुंची और संतों को बाहर निकालकर आश्रम में ताला लगा दिया। इसके बाद नाराज संतों ने चंदा चोरों, अयोध्या छोड़ो के नारे लगाए। हालांकि, पुलिस का कहना है कि बैठक रोकने से पहले ही संत स्वयं आश्रम से बाहर निकल गए थे और इसके बाद नारेबाजी करने लगे। संतों का आरोप है कि चढ़ावा चोरी के मामले में छोटे आरोपियों पर कार्रवाई की गई, जबकि बड़े आरोपियों को बचाया जा रहा है। संतों ने कहा कि जिला प्रशासन आरोपियों का साथ दे रहा है और वह नहीं चाहता कि बड़े आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई हो। इसी वजह से संतों की बैठक नहीं होने दी जा रही है। ▶8पर

बांके बिहारी चंदा चोरी
पाई-पाई भगवान की, चढ़ावा चोरी अब बस

मथुरा, 25 अगस्त (एजेंसियां)। वृंदावन के श्री बांके बिहारी मंदिर में आने वाले दान और चढ़ावे को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट कहा कि मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा दिया गया एक-एक पैसा पहले दानपेटी में डाला जाए और दान की पूरी राशि मंदिर के खाते में जमा होनी चाहिए। अदालत ने कहा कि चढ़ावे की चोरी किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मंदिर से जुड़े सेवायत, पुजारी या कोई अन्य व्यक्ति श्रद्धालुओं से प्राप्त दान की रकम अपने पास नहीं रख सकता।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि श्रद्धालुओं की ओर से दिया गया दान भगवान के लिए है और उस पर सबसे पहला अधिकार भगवान का है। मंदिर के खजाने में राशि जमा होने के बाद ही सेवायतों या संबंधित लोगों को नियमानुसार उनका हिस्सा मिल सकता है।

दरअसल, मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची तथा न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ के सामने एक वीडियो पेश किया

गया था। वीडियो में तीन लोग मंदिर की दानपेटी के सामने खड़े दिखाई दे रहे थे और श्रद्धालुओं से पैसे लेकर उन्हें पॉलीथिन की थैलियों में जमा करते नजर आ रहे थे। वीडियो देखने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने मंदिर में दान की व्यवस्था को लेकर सख्त निर्देश जारी किए।

सुप्रीम कोर्ट श्री बांके बिहारी महाराज मंदिर की प्रबंधन समिति की याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था। मंदिर में कथित चढ़ावा चोरी को लेकर वरिष्ठ अधिवक्ता मनिंदर सिंह ने उच्चस्तरीय समिति की स्थिति रिपोर्ट अदालत के सामने पेश की।

▶8पर

हिजाब यूनिफार्म नहीं!
स्कूल ड्रेस कोड का पालन हो

प्रयागराज, 25 अगस्त (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने प्रयागराज के टैगोर पब्लिक स्कूल की 11वीं कक्षा की एक मुस्लिम छात्रा की याचिका खारिज कर दी है। छात्रा ने स्कूल की निर्धारित यूनिफॉर्म के साथ हिजाब पहनने की अनुमति मांगी थी। अदालत ने कहा कि हिजाब पहनना इस्लाम धर्म की अनिवार्य धार्मिक प्रथा साबित नहीं होता।

न्यायमूर्ति जे.जे. मुनीर और न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि स्कूल का ड्रेस कोड सभी विद्यार्थियों के लिए समान, गैर-भेदभावपूर्ण और अनुशासन बनाए रखने के उद्देश्य से लागू किया गया है। अदालत के अनुसार, निर्धारित नियमों को लागू करने का अधिकार शैक्षणिक संस्थान के पास है।

कोर्ट ने धार्मिक साक्ष्यों की कमी को बताया आधार

सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता की ओर से ऐसा कोई धार्मिक या कानूनी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे यह साबित हो सके कि हिजाब पहनना इस्लाम में अनिवार्य धार्मिक प्रथा है।

अदालत ने कहा कि केवल किसी प्रथा को धार्मिक आस्था का हिस्सा बताने के आधार पर धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के तहत राहत नहीं दी जा सकती।छात्रा की ओर से यह तर्क दिया गया था कि वह कक्षा 6 से 10 तक बिना किसी विरोध के हिजाब पहनकर स्कूल आती रही है। इस पर अदालत ने कहा कि किसी संस्थान की ओर से पहले दी गई सहमति या अनुमति अपने आप में स्थायी कानूनी अधिकार पैदा नहीं करती।

हाईकोर्ट ने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासन और एकरूपता बनाए रखने के लिए निर्धारित यूनिफॉर्म का पालन महत्वपूर्ण है। यदि किसी स्कूल की ड्रेस नीति सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से लागू होती है और किसी विशेष छात्र या वर्ग के साथ भेदभाव नहीं करती, तो व्यक्तिगत पसंद के आधार पर उसमें बदलाव की मांग नहीं की जा सकती।

पीठ ने कहा कि स्कूल अपनी पहचान, अनुशासन और शैक्षणिक वातावरण बनाए रखने के लिए निर्धारित नियम लागू कर सकता है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि पहले किसी विद्यार्थी को दी गई छूट या ढील के आधार पर भविष्य में हमेशा के लिए नियमों में बदलाव की मांग नहीं की जा सकती। अदालत ने कर्नाटक हाईकोर्ट के पूर्व फैसले का भी हवाला देते हुए कहा कि उस फैसले से अलग राय अपनाने का कोई पर्याप्त कारण उसके सामने नहीं है। ▶8पर

किराना हिल्स खुलासा
शायद ड्रोन लक्ष्य से भटका

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के किराना हिल्स इलाके में भारतीय हथियारों से हमले की खबरों को लेकर पूर्व चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने स्थिति स्पष्ट की है। उन्होंने मंगलवार को नई दिल्ली स्थित विवेकानंद केंद्र में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान बताया कि सरगोधा और उसके आसपास रडार की तलाश कर रहा भारत का एक ड्रोन निर्धारित लक्ष्य नहीं मिलने के बाद किराना हिल्स के किसी हिस्से में जा गिरा होगा।

किराना हिल्स सरगोधा से करीब 10 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इस क्षेत्र में पाकिस्तान के परमाणु प्रतिष्ठानों की मौजूदगी को लेकर पहले भी चर्चाएं होती रही हैं। इसी वजह से ऑपरेशन सिंदूर के दौरान किराना हिल्स को निशाना बनाए जाने की अटकलें सामने आई थीं।

जनरल अनिल चौहान के मुताबिक, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने सरगोधा और उसके आसपास मौजूद रडारों का पता लगाने के लिए बड़ी संख्या में लोइटरिंग म्यूनिशन भेजे थे। ये मानवरहित हथियार निर्धारित क्षेत्र में घूमकर अपने लक्ष्य की तलाश करते हैं।

उन्होंने बताया कि लोइटरिंग म्यूनिशन की एक निश्चित संचालन अवधि होती है। यह करीब दो घंटे तक किसी क्षेत्र में घूमकर लक्ष्य तलाश सकता है। यदि इस दौरान उसे निर्धारित लक्ष्य नहीं मिलता है तो वह नीचे आकर किसी स्थान से टकरा सकता है।

जनरल चौहान ने इसी संदर्भ में कहा कि संभव है कि ऐसा ही एक हथियार किराना हिल्स की किसी पहाड़ी से टकराया हो। उन्होंने इसे किराना हिल्स में धुआं दिखाई देने की संभावित वजहों में से एक बताया।

पूर्व सीडीएस ने पाकिस्तानी मीडिया में दिखाई गई कुछ तस्वीरों का भी उल्लेख किया। उनके अनुसार, इन तस्वीरों में किराना हिल्स से धुआं निकलता हुआ दिखाई दे रहा था।

उन्होंने कहा कि इसी कारण यह सवाल उठ सकता है कि आखिर उस इलाके में धुआं क्यों दिखाई दिया।

हालांकि, जनरल चौहान ने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा कि भारत ने किराना हिल्स को जानबूझकर निशाना बनाया था। उनका बयान एक संभावित घटनाक्रम की ओर इशारा करता है कि रडार की तलाश में भेजा गया कोई मानवरहित हथियार निर्धारित लक्ष्य नहीं मिलने के बाद पहाड़ी से टकरा गया हो।

किराना हिल्स पर एयर मार्शल ए.के. भारती का बयान अलग था

किराना हिल्स को लेकर जनरल चौहान का ताजा बयान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना के एयर ऑपरेशंस के महानिदेशक रहे एयर मार्शल ए.के. भारती ने इस संबंध में अलग बात कही थी।12 मई 2025 को किराना हिल्स को निशाना बनाए जाने की अटकलों पर प्रतिक्रिया देते हुए एयर मार्शल भारती ने कहा था कि भारतीय वायुसेना ने किराना हिल्स पर हमला नहीं किया था। उन्होंने यह भी कहा था कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि वहां कोई परमाणु प्रतिष्ठान है।इस तरह किराना हिल्स को लेकर पूर्व सीडीएस जनरल अनिल चौहान की टिप्पणी और एयर मार्शल ए.के. भारती के पुराने बयान के बीच अंतर दिखाई देता है। हालांकि, दोनों बयानों में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जनरल चौहान ने संभावित रूप से किसी हथियार के दुर्घटनावश पहाड़ी से टकराने की बात कही है, जबकि एयर मार्शल भारती ने किराना हिल्स को जानबूझकर निशाना बनाए जाने से इनकार किया था।

भारत ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया था। इस आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में मौजूद आतंकी ढांचे को निशाना बनाया था।

▶8पर

बिकिनी 'कृति' राहुल
महिलाओं को पसंद की आजादी

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन इन दिनों अपने एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर चर्चा में हैं। उन्होंने हाल ही में रक्षा बंधन के विज्ञापन को लेकर चल रहे विवाद पर अपनी चुप्पी तोड़ी थी। कृति ने कहा था कि त्योहारों की खूबसूरती कपड़ों में नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी भावनाओं और परंपराओं में होती है। अब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कृति सेनन के इसी पोस्ट को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर साझा करते हुए उनका समर्थन किया है। राहुल गांधी ने महिलाओं की पसंद और आजादी को लेकर स्पष्ट संदेश दिया है।

राहुल गांधी ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर कृति सेनन का पोस्ट साझा करते हुए लिखा, एक महिला क्या पहनती है, वह क्या करती है और कहां जाती है यह उसकी पसंद है।राहुल गांधी ने महिलाओं को उनकी आजादी का इस्तेमाल करने के लिए ट्रोल किए जाने पर भी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा, महिलाओं को अपनी आजादी का इस्तेमाल करने के लिए ट्रोल करना बंद करें। राहुल गांधी की यह इंस्टाग्राम स्टोरी सामने आने के बाद कृति सेनन का पोस्ट एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा में आ गया है। रक्षा बंधन के मौके पर कृति सेनन ने भारी ट्रोलिंग के बीच एक पोस्ट साझा किया था। इसमें उन्होंने त्योहार की वास्तविक भावना और महिलाओं के पहनावे को लेकर होने वाली टिप्पणियों पर अपनी बात रखी थी।

▶8पर

तिरंगा परिधान!
उर्वशी के गाउन पर उठे सवाल

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। बॉलीवुड अभिनेत्री और मॉडल उर्वशी रौतेला हाल ही में जयपुर में आयोजित मिस यूनिवर्स इंडिया 2026 के ग्रैंड फिनाले में नजर आईं। इस दौरान तिरंगे के रंगों से प्रेरित उनका गाउन सुर्खियों में आ गया। केसरिया, सफेद और हरे रंग के स्ट्रैपलेस, फ्लोर-लेंथ गाउन की कमर पर अशोक चक्र से मिलता-जुलता डिजाइन भी दिखाई दे रहा था। उर्वशी के लिए यह एक ग्लैमरस फैशन मोमेंट था, लेकिन सोशल मीडिया पर उनके परिधान ने एक पुरानी बहस को फिर हवा दे दी है। सवाल उठ रहा है कि तिरंगे से प्रेरित कपड़े पहनना

देशभक्ति की अभिव्यक्ति है या इसे राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान और उसके इस्तेमाल से जुड़े नियमों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उर्वशी रौतेला लगातार तीसरी बार मिस ▶8पर

टीएमसी बागियों पर एक्शन सुप्रीम कोर्ट ने माँगा जवाब

नई दिल्ली, 25 अगस्त (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की करारी हार के बाद पार्टी से अलग होकर एनसीप-ीआई का दामन थामने वाले सांसदों के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। शीर्ष अदालत ने सायोनी घोष, यूसुफ पठान समेत 20 बागी सांसदों को नोटिस जारी कर उनसे अपना जवाब दाखिल करने को कहा है।

तृणमूल कांग्रेस के नेता अभिषेक बनर्जी ने सुप्रीम कोर्ट का रुख करते हुए मांग की थी कि लोकसभा अध्यक्ष को 20 बागी सांसदों को अयोग्य ठहराने से जुड़ी याचिकाओं पर जल्द फैसला लेने का निर्देश दिया जाए। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए बागी सांसदों से जवाब मांगा है।

अभिषेक बनर्जी ने अपनी याचिका में लोकसभा अध्यक्ष के

कार्यालय और लोकसभा महासचिव को भी नोटिस जारी करने की मांग की थी। ▶8पर

कार्टून कॉर्नर

चीन समुद्र के अंदर बना रहा दुनिया की सबसे लंबी हाईस्पीड रेल सुरंग

बीजिंग

चीन समुद्र के अंदर दुनिया की सबसे लंबी हाईस्पीड रेल सुरंग बना रहा है। चीन अपनी अत्याधुनिक इंजीनियरिंग और विशाल बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के जरिए दुनिया को लगातार चौंका रहा है। पूर्वी चीन के झेजियांग प्रांत में बन रही निंगबो-झोउशान हाईस्पीड रेलवे की जिंतांग अंडरसी टनल इस परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

निर्माण के दौरान इंजीनियरों ने समुद्र के भीतर अत्यधिक पानी और मिट्टी के दबाव के बीच 21 दिनों में 104 शील्ड कटिंग टूल्स की जांच और उन्हें बदलने का चुनौतीपूर्ण काम पूरा किया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, यह काम परियोजना के सबसे कठिन चरणों में शामिल है। विशेषज्ञों के अनुसार, इतनी अधिक गहराई और दबाव के बीच कटिंग टूल्स को बदलना बेहद जोखिमपूर्ण होता है। इस उपलब्धि से चीन की स्वदेशी तकनीक की क्षमता का भी प्रदर्शन हुआ है, जिसने वास्तविक परिस्थितियों में लंबे समय तक अत्यधिक दबाव का सामना किया।

जिंतांग अंडरसी टनल की कुल लंबाई 16.18 किलोमीटर है, जिसमें 11.21 किलोमीटर हिस्सा शील्ड टनलिंग तकनीक से बनाया जा रहा है। यह सुरंग निंगबो शहर को झोउशान द्वीपों से जोड़ेगी। वर्तमान में सड़क या फेरी के जरिए दोनों क्षेत्रों के बीच यात्रा में करीब डेढ़ से दो घंटे लगते हैं, लेकिन हाईस्पीड रेल सेवा शुरू होने के बाद यह दूरी केवल 26 मिनट में पूरी होने की उम्मीद है। परियोजना में दो विशाल शील्ड मशीनें निंगबो और झोउशान की ओर से एक-दूसरे की दिशा में खुदाई कर रही हैं। महाद्वीपीय हिस्से की योंगझोउ मशीन को 4,940 मीटर की दूरी तय करनी है। इसके रास्ते में 24 अलग-अलग नरम और कठोर चट्टानी परतें हैं। करीब 70 प्रतिशत मार्ग इन्हीं चट्टानी परतों से होकर गुजरता है। कुछ चट्टानों की मजबूती 191 मेगापास्कल तक बताई गई है। टनल का सबसे गहरा हिस्सा समुद्र तल से करीब 92 मीटर नीचे है, जहां पानी और मिट्टी का दबाव सामान्य वायुमंडलीय दबाव से 8.5 गुना तक अधिक हो सकता है। करीब 2,000 मीटर के हिस्से में भी दबाव छह गुना से ज्यादा है। ऐसे हालात में पारंपरिक तरीके से काम करना बेहद मुश्किल है। इस चुनौती से निपटने के लिए निर्माण टीम ने तीन साल तक गहरे समुद्र में इस्तेमाल होने वाली सैचुरेशन डाइविंग तकनीक का अध्ययन किया और शील्ड टनलिंग के लिए चीन का पहला घरेलू सैचुरेशन हाइपरबेरिक सिस्टम तैयार किया। इसे डीप-सी स्पेस स्टेशन नाम दिया गया है। इसमें रहने, स्थानांतरण और नियंत्रण के अलग-अलग माड्यूल हैं, जिनमें नौ कर्मचारी लंबे समय तक रह सकते हैं। कर्मचारी काम की जगह पहुंचकर एक बार में आठ घंटे तक काम कर सकते हैं और लगातार 28 दिनों तक चौबीसों घंटे शिफ्ट में काम किया जा सकता है।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिका ने सीरिया को आतंकवाद प्रायोजक देशों की सूची से हटाया

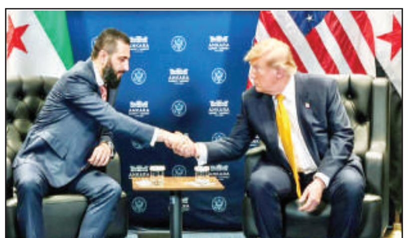

वाशिंगटन। अमेरिका ने सीरिया को आधिकारिक रूप से अपनी स्टेट स्पान्सर आफ टेररिज्म (आतंकवाद प्रायोजक देश) की सूची से हटा दिया है। अमेरिकी वित्त विभाग की ओर से जारी अधिसूचना के बाद विदेश विभाग का यह फैसला प्रभावी हो गया। यह कदम पहले की गई घोषणा और उसके बाद कांग्रेस में हुई समीक्षा प्रक्रिया पूरी होने के बाद उठाया गया है। इस फैसले के साथ सीरिया पर उस विशेष श्रेणी से जुड़े कई कानूनी प्रतिबंधों का असर समाप्त हो जाएगा, जिनमें अमेरिकी सहायता, रक्षा संबंधी निर्यात और कुछ वित्तीय लेनदेन पर पाबंदियां शामिल थीं। अमेरिकी प्रशासन का यह निर्णय सीरिया के प्रति वाशिंगटन की नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव माना जा रहा है। अमेरिकी वित्त विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) ने भी नियमों में संशोधन कर सीरिया को आतंकवाद प्रायोजक देशों से संबंधित नियामकीय प्रावधानों से हटाने की पुष्टि की है। हालांकि, इससे यह जरूरी नहीं कि सीरिया या उससे जुड़े सभी व्यक्तियों एवं संगठनों पर लागू अन्य प्रतिबंध स्वतः समाप्त हो जाएं ।

नेतन्याहू का दावा बोले- ईरान ने मेरे बेटे को मारने की कोशिश की

तेलअवीव। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान पर आरोप लगाते हुए दावा किया है कि

ईरान ने उनके एक बेटे की हत्या करने की कोशिश की थी। अब खबर है कि हत्या की इस साजिश की जानकारी कई महीनों से थी, लेकिन इस पर गैग आर्डर यानी सूचना जारी करने पर रोक लगी हुई था। अब खुद नेतन्याहू ने आगे आकर ईरान पर इस तरह के आरोप लगाए हैं। बता दें कि नेतान्याहू के 3 बच्चे हैं। 35 वर्षीय बड़ा बेटा यार नेतन्याहू 2024 की शुरुआत से अमेरिका के मियामी में रह रहा है। यहां उसे शिन बेट की सुरक्षा मिली हुई है। वहीं उनका छोटा बेटा अवनेर काफी हद तक सार्वजनिक कैमरे और चकाचौंध से दूर रहता है। वह इजरायल में ही है। नेतन्याहू की एक बेटी नोआ नेतन्याहू-रोथ भी है। नोआ यरुशलम में रहती हैं। इजरायल के चैनल 14 को दिए एक फोन इंटरव्यू में उन्होंने कहा, एक अविश्वसनीय घटना घटी है। ईरान ने मेरे एक बेटे को निशाना बनाया और उसे जान से मारने की कोशिश की। हालांकि इंटरव्यू के दौरान यह स्पष्ट नहीं हुआ कि उनके 2 बेटों में से किसे निशाना बनाने की कोशिश की गई थी। वहीं ईरान की ओर से फिलहाल इस पर कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। नेतन्याहू का यह दावा ऐसे समय में आया है जब घरेलू सुरक्षा एजेंसी शिन बेट ने पूर्व सेना प्रमुख गादी आइजनकोट को सुरक्षा देने से इनकार कर दिया है। हालांकि नेतन्याहू ने अपने लिए सुरक्षा बढ़ाने की अपील की है। नेतन्याहू ने 24 घंटे की सुरक्षा का समर्थन करते हुए कहा, ईरान ने मेरे बेटे को मारने की कोशिश की, इसलिए यह सुरक्षा कोई लक्जरी नहीं है। इसके बिना ईरान को मौका मिल जाएगा।

150 दिन में जेन-जी का नेपाली प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह से हुआ मोहभंग, बालेंद्र की लोकप्रियता में आ रही तेजी से गिरावट

काठमांडू। नेपाली प्रधानमंत्री बालेंद्र बालेन शाह को पद संभाले 150 दिन पूरे हुए हैं। 27 मार्च को काठमांडू की

सत्ता संभालने के बाद, वे इसतरह के नेता के रूप में उभरे थे जिनसे देश के पुराने राजनीतिक चक्र को तोड़ने की उम्मीद थी। लेकिन, उनके शुरुआती 150 दिनों में ही यह उम्मीद धूमिल होती दिख रही है और जेन-ज़ी वेव की चमक फीकी पड़ गई है। कभी अंडरग्राउंड रैपर और इंजीनियर रहे शाह ने जेन-जी क्रांति पर सवार होकर जीत हासिल की थी। मार्च के चुनाव में उन्होंने चार बार के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को हराया, जिससे उनकी राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) को बहुमत दिलाने में मदद मिली। युवा मतदाता, जो वर्षों से अस्थिर राजनीति से ऊब चुके थे, ने उनमें बदलाव की ऊर्जा देखी। हालांकि, जुलाई तक वही पीढ़ी, जिसने उन्हें सत्ता तक पहुंचाया था, अब उनके इस्तीफे की मांग को लेकर काठमांडू की सड़कों पर उतर आई। बालेन की लोकप्रियता में तेज़ी से गिरावट के कई कारण रहे। अप्रैल में उन्होंने भारतीय बाज़ारों से आने वाले सामान पर कड़े कस्टम नियम लागू किए, जिससे आम नेपालियों की रोजमर्रा की खरीदारी प्रभावित हुई और जन आक्रोश के बाद सरकार को यह फैसला तुरंत वापस लेना पड़ा। मई में, भारत से जुड़ा सीमा विवाद भी उनकी अपनी गलती से सामने आया। जून में एक अजीब राजनयिक घटना हुई, जब उनकी पार्टी के चेयरमैन रबी लामिछाने ने भारत का दौरा कर उच्च-स्तरीय बैठकें कीं, जबकि बालेन ने स्वयं विदेश सचिव जैसे विदेशी राजनयिकों से मिलने से इंकार किया था।

अमेरिका के डी-डे प्लान पर ईरान ने कहा- तेल की एक बूंद लेके दिखाए

तेहरान

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन की डी-डे योजना पर ईरान ने कड़ी आपत्ति जताई है और धमकी दी है कि वह फारस की खाड़ी से एक बूंद भी तेल बाहर नहीं जाने देगा। यह चेतावनी अमेरिका द्वारा ईरान के खिलाफ अब तक के सबसे कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाने की घोषणा के बाद आई है। ईरान ने स्पष्ट किया है कि यदि अमेरिका का यह आर्थिक युद्ध जारी रहता है, तो फारस की खाड़ी से कच्चे तेल का एक भी बूंद निर्यात नहीं होने दिया जाएगा।

ईरान की सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सचिव मोहसिन रजाई ने एक सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लिखा कि अमेरिका के इस कदम का करारा जवाब दिया जाएगा। रजाई ने कहा, अगर यह आर्थिक युद्ध जारी रहा, तो ना सिर्फ होर्मुज जलडमरूमध्य बल्कि फारस की खाड़ी में कहीं से भी एक बूंद तेल निर्यात नहीं होगा। रजाई ने यह भी चेतावनी दी कि जो भी देश ईरानी जनता के खिलाफ अमेरिका के इस आर्थिक युद्ध में हिस्सा लेगा या उसका समर्थन करेगा, ईरान उसे अपने खिलाफ युद्ध की कार्रवाई मानेगा।

इससे पहले, अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्काट बेसेंट ने घोषणा की थी कि अमेरिका ईरान पर अब तक का सबसे बड़ा आर्थिक हमला शुरू करने जा रहा है। बेसेंट ने कहा कि अब यह युद्ध निर्णायक दौर में पहुंच चुका है। एक बयान में स्काट बेसेंट ने लिखा, अब हम अंतिम दौर में प्रवेश कर रहे हैं। अब इकोनामिक डी-डे की शुरुआत होगी। हमारा मकसद तानाशाही को सहारा देने वाली हर आर्थिक जीवनरेखा को काटना है। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने भी इसका जिक्र करते हुए कहा कि यह किसी भी देश के खिलाफ की गई अब तक की सबसे विनाशकारी आर्थिक कार्रवाई होगी। ट्रंप ने चेतावनी दी कि ईरान के साथ व्यापार करने वाले और उसे मदद पहुंचाने वाले सभी देशों और कंपनियों को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। यह गौरतलब है कि ईरान और अमेरिका के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से ही तेल को लेकर वैश्विक स्तर पर हाहाकार मचा हुआ है। दुनिया के सबसे प्रमुख जलमार्गों में से एक, होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही बाधित है। ईरान ने साफ किया है कि जब तक अमेरिका नाकाबंदी नहीं हटाता, जब्त ईरानी संपत्तियों को आजाद नहीं करता और प्रतिबंधों में ढील नहीं देता, तब तक इस जलमार्ग को सामान्य रूप से नहीं खोला जाएगा। वहीं, अमेरिका ईरान को आर्थिक रूप से घुटनों पर लाने में जुटा हुआ है। इस बीच, होर्मुज में हमलों में कमी आई है, लेकिन दोनों पक्षों की बयानबाजी लगातार जारी है। हाल ही में गठित एक ईरानी न्यायाधिकरण ने उन ढेरों जहाजों की सूची जारी की है, जिन्हें इस मार्ग से गुजरने पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

चीन में फुटबाल और बाक्सिंग के करतब दिखा रहे रोबोट

बीजिंग। चीन की राजधानी बीजिंग में इस सप्ताहांत एक ऐसा अद्भुत और रोमांचक आयोजन हुआ, जिसने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा। यहां आयोजित वर्ल्ड रोबोट गेम्स में इंसानों के साथ-साथ रोबोट भी दौड़ते, फुटबाल खेलते और बाक्सिंग करते नजर आए। इस आयोजन में सबसे ज्यादा चर्चा एक ऐसे रोबोट माडल की हुई, जिसने दुनिया के महान धावक उसैन बोल्ट के 100 मीटर के रिकार्ड को तोड़ने का दावा किया। हालांकि यह रिकार्ड मानव-रोबोट सीधी तुलना में नहीं था, बल्कि रोबोट के अपने वर्ग में प्रदर्शन को दर्शाता था। रविवार को इसी माडल के एक अन्य रोबोट ने 400 मीटर की दौड़ में भी शानदार प्रदर्शन करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उसने यह दूरी 38.16 सेकंड में पूरी की, जिसे बाद में संशोधित करके 38.15 सेकंड बताया गया। इस प्रदर्शन के साथ ही रोबोट ने 400 मीटर की दौड़ में भी अपने पिछले रोबोटिक रिकार्ड को लगभग पांच सेकंड से पीछे छोड़ दिया, जो तकनीक के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग मानी जा रही है। ट्रैक पर दौड़ता यह रोबोट देखने में जितना अनोखा था, उसका दौड़ने का अंदाज उतना ही मजेदार था। दौड़ते समय वह अपने हाथ तेजी से हिलाता था और अपने शरीर को काफी आगे की ओर झुका लेता था। कई बार ऐसा लगा कि वह अब गिरने ही वाला है, लेकिन लड़खड़ाने के बावजूद उसने किसी तरह अपना संतुलन बनाए रखा और फिनिश लाइन तक पहुंच गया। यह नजारा दर्शकों के लिए खासा मनोरंजक था।

98 लाख से ज्यादा फीस वसूलने की तैयारी में अमेरिका

वाशिंगटन

एच-1बी वीजा के लिए ट्रंप बना रहे नया प्लान

अमेरिकी प्रशासन ने नए एच-1बी वीजा पर 1,03,265 डालर (लगभग 98,62,250 रुपये) का भारी-भरकम शुल्क लगाने का प्रस्ताव रखा है। जारी प्रस्तावित नियम के अनुसार, अत्यधिक कुशल विदेशी कर्मचारियों के लिए नए एच-1बी वीजा पर यह शुल्क लागू किया जा सकता है।

यदि यह प्रस्ताव लागू होता है, तो इसका सबसे अधिक असर भारतीयों पर पड़ेगा, जो इस वीजा के सबसे बड़े लाभार्थी हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि ट्रंप प्रशासन ने पिछले साल एक अस्थायी आदेश के जरिए यह शुल्क लगाया था, लेकिन अदालतों में चुनौती मिलने के बाद इसकी वसूली पर रोक लगा दी गई थी। अब प्रस्तावित नियम के माध्यम से इस शुल्क को स्थायी रूप देने की कोशिश की जा रही है।

जून में एक संघीय न्यायाधीश ने ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाए गए पिछले शुल्क को अवैध करार देते हुए इसकी वसूली रोक दी थी। बोस्टन स्थित अपीलीय अदालत इस फैसले की समीक्षा कर रही है। राष्ट्रपति की 2025 में जारी घोषणा सितंबर में (जारी होने के एक वर्ष बाद) समाप्त हो जाएगी। हालांकि, इस घोषणा में अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग को शुल्क को स्थायी बनाने के लिए नियम बनाने का निर्देश दिया गया था। गृह सुरक्षा विभाग द्वारा प्रस्तावित 1.03 लाख डालर का शुल्क एक सरकारी वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया। इसके बाद 30 दिनों तक सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी जाएंगी। उम्मीद है कि नियम को साल के अंत तक अंतिम रूप दिया जा सकता है। वर्तमान में, एच-1बी वीजा पर विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर आमतौर पर 1 लाख रुपये से 4.50 लाख रुपये तक शुल्क लगता है। ट्रंप के पिछले आदेश से कुछ मामलों में लागत में भारी बढ़ोतरी हुई थी। अदालती दस्तावेजों के अनुसार, फरवरी के अंत तक करीब 70 नियोक्ताओं ने 85 वीजा आवेदनों के लिए 1 लाख डालर का शुल्क भुगतान किया था। एच-1बी कार्यक्रम के तहत अमेरिकी कंपनियां विशेष क्षेत्रों में प्रशिक्षित विदेशी कर्मचारियों को नियुक्त कर सकती हैं। ट्रंप और अन्य आलोचक आरोप लगाते हैं कि कई कंपनियां इस कार्यक्रम का दुरुपयोग कर अमेरिकी कर्मचारियों की जगह कम लागत वाले विदेशी कर्मचारियों को रखती हैं।

इटली में 15वीं सदी की चार बेशकीमती पेंटिंग म्यूजियम से चोरी

रोम। इटली के मेसिना शहर में 15वीं सदी की चार ऐतिहासिक पेंटिंग एक म्यूजियम से चोरी हो गईं। माना जा रहा है कि चोरों ने भीड़ और म्यूजियम में बढ़ी गतिविधियों का फायदा उठाकर सुरक्षा व्यवस्था को चकमा दिया। घटना उस समय हुई, जब शहर में प्रसिद्ध धार्मिक उत्सव ला वारा के चलते बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। रिपोर्ट के मुताबिक, चोरों ने म्यूजियम की सुरक्षा प्रणाली को निष्क्रिय या दरकिनार किया और एक सुरक्षित डिस्प्ले केस को जबरन खोलकर उसमें रखी चार कलाकृतियां निकाल लीं। चोरी हुई पेंटिंग में से तीन प्रसिद्ध पुनर्जागरणकालीन चित्रकार एंटोनेलो दा मेसिना की महत्वपूर्ण वेदी चित्रकला पोलिटिको दी सैन ग्रेगोरियो का हिस्सा हैं। इस कलाकृति में मूल रूप से छह पैनल थे, जिनमें से पांच अब तक सुरक्षित थे, लेकिन चोरी के बाद इनमें से तीन पैनल गायब हो गए हैं। पोलिटिको दी सैन ग्रेगोरियो एंटोनेलो दा मेसिना की प्रमुख कृतियों में गिनी जाती है। इसे मूल रूप से मोनास्टेरो दी सैन ग्रेगोरियो के लिए तैयार किया गया था। वर्ष 1908 के विनाशकारी मेसिना भूकंप में यह मठ पूरी तरह नष्ट हो गया था। इस वेदी चित्र की एक खास बात यह थी कि यह एंटोनेलो दा मेसिना की जन्मस्थली मेसिना में सुरक्षित बची उनकी एकमात्र ज्ञात पेंटिंग थी।

ऑपरेशन सिंदूर में ईरान ने दिया था पाकिस्तान का साथ, पाकिस्तान के इस दावे पर भारत ने दी चेतावनी

इस्लामाबाद

अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच, पाकिस्तान ने एक बड़ा दावा किया है कि भारत के साथ उसके संघर्ष, विशेषकर आपरेशन सिंदूर के दौरान ईरान ने उसका साथ दिया था। हालांकि, इस दावे को लेकर ईरान या पाकिस्तान सरकार की ओर से आधिकारिक तौर पर कोई पुष्टि नहीं की गई है। साल 2025 में, भारतीय सेना ने पहलगाम में हुए एक आतंकवादी हमले के बाद आपरेशन सिंदूर शुरू किया था।

एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री इशाक डार ने कहा कि पिछले दो वर्षों में दोनों देशों के रिश्तों में सुधार हुआ है। उन्होंने जून 2025 में 12 दिनों तक चली लड़ाई और हाल ही में अमेरिका और इजरायल के साथ हुए टकराव, दोनों ही मामलों में पाकिस्तान द्वारा ईरान को मजबूत कूटनीतिक और राजनीतिक समर्थन देने का दावा किया। साथ ही, उन्होंने यह भी जोड़ा कि मई 2025 में भारत के साथ हुए टकराव के दौरान ईरान ने भी पाकिस्तान का जबरदस्त साथ दिया था। इस बयान पर अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। दरअसल, डार ने यह जवाब पाकिस्तान की नेशनल असेंबली को भेजे गए एक प्रश्न के उत्तर में दिया था। रिपोर्ट बताती है कि डार मई 2025 में ही ईरान के दौरे पर

गए थे और तब उन्होंने कहा था कि उनकी यात्रा का उद्देश्य भारत के खिलाफ समर्थन देने के लिए ईरान का शुक्रिया अदा करना भी था। हालांकि, ताजा मामले में पाकिस्तानी नेता ने यह स्पष्ट नहीं किया कि समर्थन से उनका सटीक अर्थ क्या था। इस बीच, भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने 14 अगस्त को चेतावनी दी थी कि भारत की उदारता और सहनशीलता को उसकी कमजोरी नहीं समझा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश जोखिम उठाने और कड़ा प्रहार करने में सक्षम है, चाहे परिणाम कुछ भी हों। एक आगामी सीरीज में दिए गए अपने पहले साक्षात्कार में, डोभाल ने कहा कि 88 घंटे तक चले सैन्य अभियान आपरेशन सिंदूर का मकसद दुश्मन के शिविरों को नष्ट करना था, खासकर उन ठिकानों को जो पहलगाम आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार थे। इससे पहले जुलाई में, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट किया था कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के अलावा किसी अन्य मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ कोई बातचीत नहीं होगी।

ईरान को मक्का डिफेंस पैक्ट का न्यौता: बदलेगा मध्य पूर्व का भू-राजनीतिक समीकरण

तेहरान

मध्य पूर्व की राजनीति में बड़ा और अप्रत्याशित मोड़ आता दिख रहा है, जो पूरे पश्चिमी एशिया के शक्ति संतुलन और वैश्विक भू-राजनीतिक समीकरणों को बदल सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स और अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक हलकों से छनकर आ रही खबरों के अनुसार, ईरान को सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान के मध्य हाल ही में गठित हुए शक्तिशाली तीन-पक्षीय रक्षा समझौते में औपचारिक रूप से शामिल होने का न्यौता मिला है। यदि दशकों से एक-दूसरे के कट्टर क्षेत्रीय विरोधी रहे शिया बहुल ईरान और सुन्नी बहुल सऊदी अरब के बीच साझा सुरक्षा तंत्र पर सहमति बन जाती है, तब यह न केवल मुस्लिम जगत के दो सबसे बड़े धड़ों को एक साझा सुरक्षा मंच पर ला खड़ा करेगा, बल्कि क्षेत्र में एक सर्वसमावेशी क्षेत्रीय सुरक्षा कवच के एक नए युग की शुरुआत हो सकती है।

यह दावा ईरानी संसद की प्रमुख मेहदी रहीमी ने लेबनान के बेरूत स्थित मीडिया समूह से बातचीत में किया। उन्होंने घटनाक्रम को ईरान की जीत बताया, क्योंकि वहां लंबे समय से क्षेत्रीय सुरक्षा कवच की मांग कर रहा था। हालांकि, ईरानी विदेश मंत्रालय या किसी भी अधिकारी ने घटनाक्रम की अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं की है, जो मिडिल ईस्ट में पूरे जियोपालिटिकल समीकरण को बदल सकता है।

दरअसल 7 अगस्त को सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान ने मक्का जाइंट डिफेंस एग्रीमेंट नामक एक तीन-पक्षीय रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। यह अमेरिका के नेतृत्व वाले नार्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइज़ेशन (नाटो) के आर्टिकल-5 सिद्धांत पर आधारित है, जिसके तहत किसी भी सदस्य पर हमला तीनों देशों पर हमला माना जाएगा। शुरुआत में, मध्य पूर्व में ईरान के बढ़ते प्रभाव को रोकने और सऊदी अरब को यमन में हूतियों और इराक से ईरान समर्थित मिलिशिया द्वारा बार-बार होने वाले हमलों के खिलाफ सुरक्षा गारंटी प्रदान करने के उद्देश्य से देखा जा रहा था।

यदि ईरान को गठबंधन में शामिल होने का प्रस्ताव सत्य साबित होता है, तब यह मध्य पूर्व के भू-राजनीतिक समीकरणों को पूरी तरह बदल देगा। दशकों से कट्टर प्रतिद्वंद्वी रहे शिया बहुल ईरान और सुन्नी बहुल सऊदी अरब के बीच दशकों पुरानी प्रतिद्वंद्विता, छद्म युद्धों और अविश्वास का दौर समाप्त हो सकता है। यह संकेत देगा कि दोनों देश तनाव कम करने और मुस्लिम दुनिया में ज़्यादा एकता के लिए अपने मतभेदों को दूर करने को तैयार हैं।

इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्की के बीच शुरुआती समझौते का स्वागत किया था। उन्होंने कहा, यह दिखाता है कि मध्य पूर्व कैसे एकजुट हो रहा है और देश कैसे प्रभावी ढंग से अपनी रक्षा कर सकते है। उन्होंने इस समझौते को एक बड़ा, साहसिक और महत्वपूर्ण पहला कदम बताया। तुर्की ने पहले ही कहा है कि यह पैक्ट अन्य देशों के लिए भी खुला रहेगा, जिसमें मिस्र और बांग्लादेश जैसे देश भी शामिल होने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। इस संभावित रणनीतिक बदलाव पर अब पूरे विश्व समुदाय, विशेषकर वाशिंगटन और पश्चिमी देशों की निगाहें टिकी हुई हैं।

'रेयर छोटी काशी री तीज महोत्सव' में उमड़ा उत्साह

बीकानेर, 25 अगस्त (एजेंसियां)। 'रेयर छोटी काशी री तीज महोत्सव 2026' हर्षोल्लास और पारंपरिक उमंग के साथ संपन्न हुआ। रानीबाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित रिद्धि-सिद्धि पैलेस में आयोजित इस रंगारंग कार्यक्रम में महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में बढ़-चढ़कर भाग लिया और विभिन्न सांस्कृतिक एवं मनोरंजक प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

शंकरा एडवरटाइजिंग एवं कार्तिक पब्लिसिटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में कैटवॉक, सावन क्वीन, मनोरंजक खेलों और अन्य प्रतियोगिताओं ने पूरे आयोजन को जीवंत बना दिया। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागी महिलाओं को आकर्षक रिटर्न गिफ्ट प्रदान किए गए, जिन्हें पाकर महिलाओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। कार्यक्रम में ब्रह्म गायत्री सेवाश्रम के अधिष्ठाता पंडित रामेश्वरानंदजी पुरोहित (दाताश्री), मेडिकल एस्ट्रोलॉजर, वास्तु कंसल्टेंट, मोटिवेशनल स्पीकर, योग प्रशिक्षक एवं 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जोधपुर की ब्रांड एम्बेसडर डॉ. मोनिका आर. करल, चेयरपर्सन महावीर इंटरनेशनल वीरा केंद्र नोखा-बीकानेर सरला अग्रवाल, नोखा तहसीलदार सुनीता चारण, उपनिदेशक जनसंपर्क विभाग बीकानेर हरिशंकर आचार्य, फोर्ट स्कूल की प्रिंसिपल एवं सरस फाउंडेशन की ऑनर पिंकी शर्मा, समाजसेवी विनोद गोयल, समाज-सेवी अरविंद मिढ्ढा, समाजसेवी डॉ. पूजा मोता, गृहिणी डिंपल गांधी, अर्हम इंग्लिश अकादमी के निदेशक सुरेंद्र डागा, समाजसेवी राज खजांची तथा नेल आर्ट स्टूडियो की प्रमुख जाह्नवी सोनी ने बतौर अतिथि शिरकत की।अतिथियों ने आयोजकों की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन महिलाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने, आत्मविश्वास बढ़ाने और सामाजिक सहभागिता का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने तीज जैसे पारंपरिक पर्व को आधुनिक स्वरूप के साथ मनाने की इस पहल को सराहनीय बताया।कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने पारंपरिक गीतों पर मनमोहक प्रस्तुतियां देकर समां बांध दिया। कैटवॉक प्रतियोगिता में महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों और आत्मविश्वासपूर्ण अंदाज से दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया।

वहीं, सावन क्वीन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति, आत्मविश्वास और आकर्षक अंदाज से दर्शकों का दिल जीत लिया। मनोरंजक खेलों और अन्य प्रतियोगिताओं में भी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। पूरे आयोजन के दौरान उत्साह, उमंग और पारिवारिक माहौल देखने को मिला। कार्यक्रम में महिलाओं के साथ उनके परिवारजनों की भी सक्रिय सहभागिता रही।आयोजन से जुड़ी रेनू जोशी ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए इस प्रकार के रचनात्मक, सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम भविष्य में भी लगातार आयोजित किए जाएंगे।

कार्यक्रम का सफल संचालन नीलम शर्मा ने किया।

बड़ी उपलब्धि : सीयूएसबी को नैनोप्रौद्योगिकी में अभिनव खोज के लिए पहला पेटेंट

पटना, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएसबी) ने नैनोप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारतीय पेटेंट कार्यालय ने विश्वविद्यालय को नैनोप्रौद्योगिकी क्षेत्र में अभिनव शोध के लिए उसका पहला भारतीय पेटेंट प्रदान किया है। पेटेंट आवेदन संख्या 201931047638 तथा पेटेंट संख्या 597876 है।

पेटेंट का शीर्षक संवर्धित सौर-उत्प्रेरण हेतु प्रथम एवं द्वितीय निकट-अवरक्त क्षेत्र में ट्यूनेबल प्लास्मोनिक होलो सिल्वर नैनोशेल्स का शून्य आरपीएम संश्लेषण है। यह उपलब्धि सीयूएसबी के रसायन विज्ञान विभाग के प्रमुख आविष्कारक प्रो. अमिया प्रियम, शोधार्थी श्री भावेश कुमार दाधीच तथा भुवनेश्वर स्थित कलिंग औद्योगिक प्रौद्योगिकी संस्थान के अनुसंधान सहयोगी डॉ. भव्य भूषण के शोध एवं अथक प्रयासों का परिणाम है।

सीयूएसबी के जनसंपर्क पदाधिकारी मोहम्मद मुदस्सीर आलम ने बताया कि इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह, कुलसचिव प्रो. नरेंद्र कुमार राणा, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अतुल प्रताप सिंह, विभाग के प्राध्यापकों तथा विश्वविद्यालय परिवार ने शोध दल को बधाई दी।

कुलपति प्रो. के. एन. सिंह ने कहा कि सीयूएसबी नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और व्यावसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए अपने शोध बुनियादी ढांचे तथा शैक्षणिक-औद्योगिक साझेदारियों को लगातार मजबूत कर रहा है।

सामाजिक उद्यमिता पर दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। फलकनुमा स्थित राजकीय डिग्री कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तत्वावधान में सामाजिक उद्यमिता विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक समस्याओं की पहचान, नवाचार, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था।

कार्यशाला के दौरान रिसोर्स पर्सन्स श्री विजेंद्र एवं श्री रामकृष्ण ने विद्यार्थियों को सामाजिक उद्यमिता की अवधारणा, इसके विभिन्न आयामों तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान में उद्यमशीलता की भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने प्रस्तुतीकरण, समूह गतिविधियों, चर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से जोड़ा। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी रचनात्मकता और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य प्रो. प्रवीण कुमार ने कहा कि आज के विद्यार्थियों को केवल रोजगार प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं को समझकर उनके समाधान की दिशा में पहल करने वाला जिम्मेदार नागरिक बनना चाहिए।

उन्होंने सामाजिक उद्यमिता को युवाओं के सर्वांगीण विकास तथा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रभावी माध्यम बताया।

कार्यशाला का संचालन एवं समन्वय डॉ. शशिकला, डॉ. बाबूराव एवं डॉ. मल्लेश ने किया। आयोजकों ने रिसोर्स पर्सन्स, प्राचार्य तथा सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला का समापन विद्यार्थियों के उत्साहपूर्ण सहभागिता और सामाजिक परिवर्तन के प्रति नई सोच विकसित करने के संकल्प के साथ हुआ।

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह का पांचवां दिन उत्साह एवं आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। आर्य समाज सुल्तान बाजार, महर्षि दयानंद मार्ग में चल रहे श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह के पांचवें दिन मंगलवार को धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में प्रातः एवं सायंकाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन की भांति मंगलवार को भी यज्ञ विधिवत संपन्न हुआ।

यज्ञ माता निर्मला योग भारती, ऋत्विक डॉ. मैत्रेयी शास्त्री, श्रीमती स्फूर्ति एवं आचार्य मिथिलेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ की धार्मिक विधियां संपन्न कराई गईं। इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता की।

सायंकाल आयोजित संध्या कार्यक्रम का संचालन पंडित बसंतजी के नेतृत्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सामूहिक रूप से किया। इसके बाद पंडित भूपेंद्र आर्य ने मधुर भजनों एवं प्रेरणादायक उपदेशों के माध्यम से माता-पिता के प्रति कर्तव्य और गृहस्थ जीवन के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि माता-पिता का सम्मान, उनकी सेवा और परिवार के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण मूल्यों में शामिल है।

'गृहस्थ जीवन ही वास्तविक स्वर्ग'

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए आर्य जगत के प्रसिद्ध वेद विद्वान आचार्य डॉ. जयेंद्र कुमार ने अपने प्रवचन में कहा कि गृहस्थ जीवन ही वास्तविक स्वर्ग है। स्वर्ग कोई दूर का स्थान नहीं है, बल्कि मनुष्य अपने सदाचार, प्रेम, कर्तव्य भावना और आपसी शांति के माध्यम से इसी धरती पर अपने गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग बना सकता है।

उन्होंने पंडित शिवकुमार शास्त्री द्वारा लिखित 'गृहस्थ में स्वर्ग' पुस्तक का संदर्भ देते हुए गृहस्थ आश्रम की गरिमा और उसमें निहित जिम्मेदारियों को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि परिवार में प्रेम, त्याग, संयम और परस्पर सम्मान का वातावरण हो तो गृहस्थ जीवन सुख एवं शांति का आधार बन सकता है।कार्यक्रम का समापन सामूहिक शांति पाठ के साथ हुआ। इसके पश्चात उपस्थित श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से भोजन ग्रहण किया।

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह के अब केवल दो दिन शेष हैं। आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं एवं धर्मप्रेमी बंधुओं से आग्रह किया कि वे शेष दो दिनों में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर वेदों के मधुर, प्रेरणादायक एवं जीवनोपयोगी उपदेशों का लाभ उठाएं और इस आध्यात्मिक आयोजन को सफल बनाएं।

मानव सेवा की मिसाल बना राधे-राधे ग्रुप, योगेश अग्रवाल ने सराहा सेवा भाव

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में मंगलवार को हिंदू अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल के सामने केबीआर पार्क वॉटर टैंक के पास नियमित अन्नदान सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जरूरतमंदों को भोजन वितरित कर मानवता और सेवा का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान योगेश अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानवता की सेवा में राधे-राधे ग्रुप जिस निस्वार्थ भाव से निरंतर जुटा हुआ है, वह समाज के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने कहा कि किसी जरूरतमंद के चेहरे पर भोजन मिलने के बाद आने वाली संतुष्टि और मुस्कान ही सच्ची सेवा का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

योगेश अग्रवाल ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप केवल अन्नदान तक सीमित नहीं है, बल्कि सेवा के माध्यम से समाज में करुणा, सहयोग और मानवता की भावना को मजबूत करने का कार्य कर रहा है। नियमित रूप से चल रहे सेवा कार्यक्रम समाज के अन्य लोगों को भी जरूरतमंदों की सहायता के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि आज के समय में जब हर व्यक्ति अपनी व्यस्तता में लगा हुआ है, ऐसे में समय निकालकर जरूरतमंदों की सेवा करना निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है। राधे-राधे ग्रुप की यह पहल समाज को एकजुट करने और सेवा को जीवन का हिस्सा बनाने की प्रेरणा देती है।

इस अवसर पर मनीष अग्रवाल, सुभाष अग्रवाल, भंवरलाल गुप्ता, योगेश अग्रवाल सहित राधे-राधे ग्रुप के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी सदस्यों ने नियमित सेवा कार्य को निरंतर जारी रखने तथा अधिक से अधिक लोगों को मानव सेवा

सनातन धर्म प्रचार भजन मंडली का भक्ति कार्यक्रम आयोजित

पेद्दापल्ली, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। सनातन धर्म प्रचार भजन मंडली, पेद्दापल्ली की ओर से प्रत्येक सोमवार को शाम 7 बजे से श्री भवानी शंकर मडला रामलिंगेश्वर स्वामी शिव मंदिर में भजन कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम में मंडली के सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं। भक्तजन लयबद्ध एवं भक्तिमय भजनों का सामूहिक गायन कर भगवान की आराधना करते हैं। भजन-कीर्तन के माध्यम से श्रद्धालुओं में आध्यात्मिक भावना और ईश्वर के प्रति आस्था मजबूत होती है। आयोजकों ने पेद्दापल्लीवासियों से अधिक से अधिक संख्या में भजन कार्यक्रम में शामिल होकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने का आग्रह किया।

विजयरमना राव ने किया पौधरोपण

पेद्दापल्ली, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। तेलंगाना सरकार द्वारा आयोजित वन महोत्सव कार्यक्रम के तहत राज्य सरकार के सचेतक एवं पेद्दापल्ली विधायक श्री चिंताकुंता विजयरामना राव ने पेद्दापल्ली मंडल के सब्बीथम गांव में स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं नेताओं के साथ पौधरोपण किया।इस अवसर पर उन्होंने पौधों की सुरक्षा और नियमित देखभाल सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लगाए गए पौधों की वृद्धि एवं संरक्षण का समय-समय पर रिकॉर्ड भी रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाना और उनकी उचित देखभाल करना सभी की जिम्मेदारी है।विजयरामना राव ने कहा कि अगले वर्ष तक सब्बीथम जलप्रपात को आम लोगों के लिए सुलभ बनाने की दिशा में आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। कार्यक्रम के दौरान गांव में बड़े पैमाने पर पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सरपंच, वन विभाग के अधिकारी, जनप्रतिनिधि, कांग्रेस नेता एवं कार्यकर्ता, महिलाएं तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

कुशलता से वाहन चलाएं, कर्तव्यनिष्ठा से निभाएं

पेद्दापल्ली, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। रामागुंडम पुलिस कमिश्नरेट के अंतर्गत पुलिस वाहनों के चालकों को अधिक कुशल, सतर्क एवं जिम्मेदार बनाने के उद्देश्य से कुशलता से वाहन चलाएं... कर्तव्यनिष्ठा से निभाएं नारे के तहत एक दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम पुलिस कमिश्नर अंबर किशोर झा के निर्देशानुसार आयोजित हुआ।रामागुंडम पुलिस कमिश्नरेट के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में पुलिस कमिश्नर अंबर किशोर झा ने भाग लेकर चालकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पुलिस चालक शारीरिक रूप से चुस्त, मानसिक रूप से सतर्क और अनुशासित रहकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आम जनता की सुरक्षा में चालकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने चालकों को तनाव, भय, क्रोध या अस्वस्थता की स्थिति में वाहन नहीं चलाने की सलाह दी। साथ ही पुलिस वाहनों की स्वच्छता, नियमित रखरखाव और तकनीकी स्थिति पर विशेष ध्यान देने को कहा।

पीडीएस चावल के अवैध परिवहन और हेराफेरी पर होगी सख्त कार्रवाई

पेद्दापल्ली, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। रामागुंडम पुलिस कमिश्नर अंबर किशोर झा ने पेद्दापल्ली जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के चावल के अवैध परिवहन, भंडारण और हेराफेरी पर प्रभावी रोक लगाने के लिए पुलिस एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के अधिकारियों को आपसी समन्वय से काम करने के निर्देश दिए। रामागुंडम पुलिस कमिश्नरेट कार्यालय में आयोजित समन्वय बैठक में सीपी ने पीडीएस चावल की अवैध तस्करी रोकने के लिए उठाए जाने वाले कदमों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा पात्र लाभार्थियों को जनकल्याण के उद्देश्य से उपलब्ध कराए जाने वाले पीडीएस चावल की अवैध खरीद-फरोख्त और हेराफेरी से जरूरतमंद लोगों को नुकसान पहुंचता है। उन्होंने अधिकारियों को अवैध रूप से पीडीएस चावल की खरीद, भंडारण, परिवहन एवं हेराफेरी में शामिल लोगों तथा उनके पीछे सक्रिय नेटवर्क पर विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए।

सुधाकर भोयर को भाजपा प्रकोष्ठ में जिम्मेदारी

किनवट, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। भाजपा ने सोमवार, 24 अगस्त को प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण के नेतृत्व में विभिन्न 37 प्रकोष्ठों में मंत्री, विधायक एवं पूर्व सांसदों को जिम्मेदारियां सौंपीं। इसी क्रम में किनवट के वरिष्ठ भाजपा नेता सुधाकर भोयर को ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज विकास महाराष्ट्र राज्य प्रकोष्ठ का दायित्व सौंपा गया। उन्हें नियुक्ति पत्र प्रदेश माध्यम प्रमुख गोविंद येतयेकर ने प्रदान किया। भोयर ने नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, राष्ट्रीय सरचिटणीस विनोद तावड़े एवं प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे आम लोगों के हित में प्रभावी कार्य करने के साथ पार्टी को मजबूत बनाने का प्रयास करेंगे। उनकी नियुक्ति पर समर्थकों एवं पार्टी कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

एसआईआर नोटिस मिलने वाले मतदाता तय समय पर दस्तावेज जमा करें

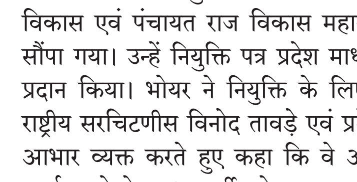

बांसवाड़ा, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। एसआईआर प्रक्रिया के तहत संबंधित मतदाताओं को नोटिस जारी किए जा रहे हैं। जिन मतदाताओं को एसआईआर नोटिस प्राप्त हुआ है, वे नोटिस में निर्धारित तारीख एवं समय पर आवश्यक जानकारी और दस्तावेज अनिवार्य रूप से जमा करें। निर्धारित समय पर आवश्यक जानकारी एवं दस्तावेज जमा नहीं करने पर संबंधित मतदाताओं के विवरण के सत्यापन में परेशानी आ सकती है। ऐसे में सभी संबंधित मतदाताओं से अपील की गई है कि वे इस प्रक्रिया को गंभीरता से लेते हुए अपने संबंधित बीएलओ या वार्ड अधिकारी से संपर्क करें।मतदाता निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार स्थानीय नगरपालिका कार्यालय में बनाए गए विशेष काउंटर पर आवश्यक जानकारी एवं दस्तावेज जमा कर सकते हैं। संबंधित अधिकारियों ने मतदाताओं से अपील की है कि वे निर्धारित समय का पूरा लाभ उठाते हुए समय पर दस्तावेज जमा करें और सत्यापन प्रक्रिया में सहयोग करें।

आज का राशिफल

मेष – चू,चे,चो,ला,लि,लू,ले,लो,अ

आज काफी सोच समझकर ही लोगों से बातचीत करनी चाहिए दिमाग को शान्त ही रखना पडेगा। आपके जीवनसाथी से तनाव कारण बन सकता हैं. आप-अपने परिचितों के साथ लेन-देन में सावधानी बरतें अन्यथा बाद में सम्बन्धों में गिरावट आ सकती है. किसी मित्र के सहयोग से आमदनी बढ सकती हैं धन की स्थिति में सुधार होगा. किसी अनुभवी की राय आपके लिए फायदेमंद रहेगी. स्वास्थ्य मे सुधार होगा ।

वृषभ – इ,उ,ए,ओ,वा,वि,वु,वे,वो

आज मन से दृढ होकर किसी भी काम को करेंगे वह अवश्य ही सफल होगा , परिणाम सार्थक और सकारात्मक होगा. जीवनसाथी के साथ थोड़ा समय बिताने, उसकी समस्याओं को ध्यान से सुनने और भावनाओं को बेहतर तरीके से समझने से संबंधों में मधुरता आएगी. आपके व्यक्तिगत जीवन में तनाव कम रहेगा , सामाजिक और राजनीति दोनो प्रकार का ही लाभ दिखेगा ।

मिथुन – क,कि,कृ,घ,ड़,छ,के,को,ह

आज आपने घर के बड़ें बुजुर्गों के साथ धार्मिक यात्रा करनी पडेगी । माता-पिता की बातो को अनदेखा न करें । किसी काम को शुरू करने से पहले माता-पिता का आर्शीवाद लें, आपको फायदा जरूर होगा. अचानक धन लाभ का योग बन रहा है. आज आपकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से होगी, जिसके साथ बात करके आपकी दिनभर की थकान दूर हो जायेगी. परिस्थितियां भी आपके अनुकूल रहेगी. आपको दूसरो की मदद करतें रहना चाहिए मित्रों को निराश नही करना चाहिए।

कर्क – ही,हु,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो

आज परिवार के सदस्यों से वाद विवाद हो सकता हैं जिससे मन दुखी होगा । पिछले कुछ समय से जिन गलतफहमियों की वजह से आपके रिश्ते ठीक नहीं चल रहे थे आज वह दूर हो सकते हैं. यात्रा कष्टदायी हो सकती है. अचानक सामने आने वाले कामों के लिए खुद को पहले से तैयार कर लें. जमीन संबंधी कोई लेन-देन कर रहे हैं, तो पहले अच्छे से उस जगह की जांच-पड़ताल कर लें. आज यात्रा कष्टदायक रहेगी जरूरी होतो गुड का सेवन करके यात्रा का आरंभ करें।

सिंह – म,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे

आज बुद्धि का जबर्दस्त परिचय आप समाज के सामने देंगे आप की प्रतिष्ठा बढेगी । प्रभावशाली वाणी होने के कारण लोगों से आप अपनी बात मनवा सकेंगे. इन कारणों से आप अपने व्यवसाय में अच्छा कर पाएंगे और प्रचुर लाभ कमा पाएंगे. यात्रा से भी लाभ मिलेगा. संतान या शिक्षा को लेकर यदि आप कोई प्रयास कर रहे थे, तो आपकी मेहनत का फल मिलने वाला है. परन्तु जीवनसाथी या मित्रों के साथ बिना वजह विवाद हो सकता है. स्वास्थ्य एकदम तंदुरुस्त रहेगा

कन्या – टो,प,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो

आज हनुमान मंदिर मे गाय के घी का दीपक प्रज्वलित करें कार्य सिद्ध होंगे आज आप खुद को फिट महसूस करेंगे.नजदीकी लोगों के साथ समय बिताने से आपको ख़ुशी मिलेगी.कार्यालय में किसी काम को लेकर आपकी तारीफ होगी, जिससे आपका मन खुश रहेगा. जो लोग सरकारी काम से जुड़े हैं, उनको कोई बढ़िया ऑडर मिल सकता है. घर में शुभ-प्रसंगों का आयोजन हो सकता है. जीवन में खुशियां बरकरार रहेगी. नंदी को गेहूँ का भूसा खिलाए।

तुला – र,री,रू,रे,रो,ता,ति,तू,ते

आज स्थान परिवर्तन का योग बनेगा आप स्थान परिवर्तन नही चाहते हैं तो नौ मंगलवार को हनुमानजी को सिन्दूर चढाए , घर मे सुख सुविधाओं की वृद्धि होगी परन्तु किसी बात को लेकर जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद होंगे. आत्मसम्मान मे कमी महसूस होगी . शाम को परिवार के साथ समय बितायेंगे. स्वास्थ्य संबंधी कोई परेशानी चल रही है तो आज उससे राहत मिलेगी. आज कोई नजदीकी या प्रिय व्यक्ति मानसिक शांति बनाए रखने में मददगार होगा. मन उदास है तो शिव मंत्र का स्मरण करें।

वृश्चिक – तो,न,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू

आज का समय सफलताओं वाला हैं परन्तु पारिवारिक मामलों से संबंधित झगड़ा हो सकता है. यदि आप उनसे दूर रहेंगे तो आप प्रसन्न रहेंगे. सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए समय प्रतिकूल है नई परियोजनाएं अमल में लाएंगी. व्यवसाय में उन लोगों को अपने उद्यमों में बढ़ावा मिलेगा और नई व्यापार केन्द्र स्थापित करेंगे.बहुत बेचैनी हो तो किसी धार्मिक ग्रन्थों का आश्रय करें अथवा अपने ईष्टदेव का स्मरण करें

धनु – ये,यो,भ,भी,भू,धा,फा,ढा,भे

आज नक्षत्र बल आप को पूरा सहयोग देगा अपना व्यापार बढ़ाने के लिये आपको नये अवसर मिलेंगे. रिश्तों में आपसी प्रेम बढेगा उधार दिया हुआ पैसा अचानक ही वापस मिल जायेगा. कोई रिश्तेदार आपके घर पर अचानक से आ सकते हैं. इससे घर का वातावरण कुछ बदल सकता है. बच्चे काफी खुश नजर आयेंगे. बिजनेस के क्षेत्र में बड़े-बड़े लोगों से मिलने में मदद मिलेगी, आपकी तरक्की सुनिश्चित है. प्रातः मंदिर के दर्शन करके दिन का शुभ आरंभ करना चाहिए रिश्ते मजबूत होंगे. शाम के वक्त परिवार के साथ डिनर का प्रोग्राम बनेगा।

मकर – भो,ज,जी,खि,खू,खे,खो,ग,गि

हनुमानजी को चमेली की पुष्प माला अर्पित करें जिससे पैसों का दबाव खत्म हो जाएगा. राहत मिल सकती है. पैसों के क्षेत्र में कुछ अच्छे मौके मिल सकते हैं. आज आप बड़ा फायदा दिलाने वाली डील कर सकते हैं. भूमि भवन आदि खरीदने के योग बन रहे हैं. आत्म-विश्वास बनाए रखें, आज आप किसी भी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति का सामना आसानी से कर पाएंगे. रात्रि मे गहरी निंद्रा के लिए हल्का सुपाच्य भोजन करना होगा।

कुम्भ – गु,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,द

आप के विरोधी आप पर पैनी नजर बनाए हुए हैं अतः कार्य आरंभ से पूर्व अन्तिम क्षणों मे अपनी कार्य शैली को तुरन्त ही बदल ले आप के विरोधी पस्त हो जांएगे । आज कुछ लोग बहुप्रतीक्षित सफलता प्राप्त करेंगे. आज आप वचनबद्धता से घिरे रह सकते हैं. किन्तु शुभ स्वास्थ्य हेतु तनाव मुक्त रहने की कोशिश करें. आपको परिवार और व्यापार में संतुलन बनाने की आवश्यकता पड़ सकती है. इसके साथ समाज ही आप को सामाजिक गतिविधियों मे सहयोगी बनना पडेगा

मीन – दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची

आज आप की पद प्रतिष्ठा में उन्नति हो सकती है. बिजनेस में अच्छी प्रगति के योग हैं. जीवनसाथी से भी मदद मिलती रहेगी. आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा. आपको अपने काम में सफलता जरूर मिलेगी. पैसों से जुड़े किसी मामले को सुलझाने के लिहाज से आज का दिन अच्छा है. आपकी कुछ नए-पुराने दोस्तों से भी मुलाकात हो सकती है. आज आप को काम से फुर्सत मिल जाए तो परिवार के साथ कहीं घूमने का प्लान भी बनना चाहिए

आज का पंचांग

दिनांक : 27 अगस्त 2026, बुधवार
विक्रम संवत : 2083
मास : श्रावण , शुक्ल पक्ष
तिथि : त्रयोदशी प्रातः 08:01 तक
नक्षत्र : श्रवण रात्रि 12:48 तक
योग : सौभाग्य प्रातः 07:59 तक
करण : तैतिल प्रातः 08:01 तक
चन्द्रराशि : मकर
सूर्योदय : 06:01 , सूर्यास्त 06:33 (हैदराबाद)
सूर्योदय : 06:08, सूर्यास्त 06:33 (बैंगलोर)
सूर्योदय : 06:00 , सूर्यास्त 06:27 (तिरुपति)
सूर्योदय : 05:53 ,सूर्यास्त 06:24 (विजयवाडा)

शुभ चौघड़िया
लाभ : 06:00 से 07:30
अमृत : 07:30 से 09:00
शुभ : 10:30 से 12:00
चल : 03:00 से 04:30
लाभ : 04:30 से 06:00
राहुकाल : दोपहर 12:00 से 01:30
दिशाशूल : उत्तर दिशा
उपाय : तिल्ली खाकर यात्रा का आरंभ करें
दिन विशेष : ऋग्वेदीय श्रावणी उपाकर्म

* पाण्डित्य विषय में सम्पर्क करें *

पं.चिदम्बर मिश्र (टिल्लू महाराज)
हमारे यहाँ पाण्डित्य पूर्ण यज्ञ अनुष्ठान, भागवत कथा एवं मूल पारायण, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश,शतचंडी, विवाह, कुंडली मिलान, नवग्रह शान्ति, ज्योतिष सम्बन्धी शंका समाधान किए जाते हैं
फक्कड़ का मन्दिर, रिकाबगंज, हैदराबाद, (तेलंगाना)
9246159232, 9866165126
chidamber011@gmail.com

अर्जुन को बचाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने सहे थे इस योद्धा के 12 तीर

महाभारत में वर्णित एक ऐसी ही कहानी है कर्ण और अर्जुन के युद्ध के समय की।

महाभारत युद्ध में कर्ण और अर्जुन आमने-सामने थे। युद्ध बहुत भयंकर होता जा रहा था। दोनों योद्धा एक-दूसरे पर शक्तियों का प्रयोग कर रहे थे। कर्ण ने अर्जुन को हराने के लिए सर्प बाण चलाने का निर्णय किया। इस बाण को कर्ण ने वर्षों से अर्जुन पर प्रहार के लिए रखा था। वास्तव में ये बाण पाताललोक में अश्वसेन नाम का नाग था, जो अर्जुन को अपना शत्रु मानता था। इसका कारण ये था कि खांडववन में अर्जुन ने उसकी माता का वध किया था। अश्वसेन तभी से अर्जुन को मारने के लिए मौके की तलाश में था।

कर्ण को सर्प बाण का प्रयोग करते देख अश्वसेन खुद बाण पर विराजित हो गया। कर्ण ने अर्जुन पर तीर से निशाना बनाया। अर्जुन बाण का रूप धारण किए नाग को पहचान नहीं पाए जबकि अर्जुन का रथ चला रहे भगवान कृष्ण ने अश्वसेन को तत्काल ही पहचान लिया। अर्जुन के प्राणों की रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अपने पैरों से रथ को दबा दिया। रथ के पहिए जमीन में धंस गए। घोडे बैठ गए और तीर अर्जुन के गले की बजाय उसके मस्तक पर जा लगा। इससे उसका मुकुट छिटककर धरती पर जा गिरा।

इस तरह श्रीकृष्ण ने अपने पार्थ अर्जुन को बचा लिया। अर्जुन और भगवान कृष्ण रथ के धंसे पहिए निकालने के लिए नीचे उतरे। तभी मौका देखकर कर्ण ने अर्जुन पर वार शुरू कर दिया और कृष्ण को 12 तीर मारे। पूरी सृष्टि के रचयिता भगवान श्रीकृष्ण ने उन बाणों के घाव को सह लिया। भगवान ने अर्जुन को अश्वसेन के बारे में बताया। अर्जुन ने छह तीरों से अश्वसेन के टुकड-टुकडे कर दिए और इस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं पीडा सहते हुए अपने परमप्रिय अर्जुन को बचा लिया।

महाभारत के युद्ध को इतिहास के सबसे भीषण रक्तपात वाले युद्धों में से एक माना जाता है। इस युद्ध से जुडी हुई कहानियां आज भी याद की जाती है। देखा जाए तो 18 दिनों तक चले इस युद्ध से हम आज भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। श्रीकृष्ण ने युद्ध के समय दुविधा में घिरे अर्जुन को गीता सार द्वारा जीवन की कई महत्वपूर्ण घटनाओं से लडने की शिक्षा दी थी।

धन की देवी लक्ष्मी की ये 5 बातें जानकर खुल जाएंगे किस्मत के दरवाजे

हिंदू धर्म में देवी लक्ष्मी का स्थान बहुत बड़ा है, हर घर में लक्ष्मी की पूजा की जाती है। कहा जाता है कि अगर लक्ष्मी आप पर मेहरबान रहे तो आपके घर में धन, सुख की वर्षा जरूर होगी। ऐसे में आज हम आपको बताएंगे देवी लक्ष्मी से जुडी ऐसी 5 रोचक बातें जो आपके भाग्य बदल सकती हैं।

1. देवी लक्ष्मी को पुराणों में भगवान विष्णु की पत्नी का दर्जा हासिल है। इन्हें धन की देवी के रुप में पूजा जाता है। इनका प्रतीक है अक्षय कलश जिसे देवी लक्ष्मी ने अपने हाथों में ले रखा है। यह कलश आप इनकी हर मूर्ति में देख सकते हैं। इसी कलश से वह धन की वर्षा करती हैं।

2. देवी लक्ष्मी को कमला नाम से भी जाना जाता है, ऐसा इसलिए क्योंकि वह कमल पर विराजमान रहती हैं। साथ ही इनके हाथों में कमल के फूल भी हैं। कमल पर यह इसलिए विराजमान रहती हैं क्योंकि इनका जन्म सागर में हुआ था ऐसी मान्यता है।

3. देवी लक्ष्मी की मूर्तियों में हाथी होते हैं। दरअसल यह गज लक्ष्मी का स्वरुप होता है। इस तस्वीर का मतलब है कि देवी जल और जीवन को दर्शा रही हैं। जल से इनका संबंध कृषि और जीवन से है, वहीं हाथी वर्षा का प्रतीक है।

4. अक्सर आपने सुना होगा लक्ष्मी के साथ ही अलक्ष्मी का भी वास होता है। देवी लक्ष्मी की बडी बहन अलक्ष्मी हमेशा देवी लक्ष्मी के साथ रहती हैं, इसलिए जहां भी केवल धन का वास होता है वहां सुख ज्यादा देर नहीं टिक पाती। ऐसे में हमें विष्णु की पूजा करनी चाहिए, उनके पूजन से अलक्ष्मी दूर होती है।

5 . दे वी लक्ष्मी क बारे में यह कहा जाता है कि उनका वाहन उल्लू है। लेकनि कम लोग जानते हैं कि देवी लक्ष्मी का वाहन हाथी भी है। हाथी को गणेश जी का भी स्वरूप माना जाता है जो शुभता को दर्शाता है यानी जहां शुभ कर्म होंगे वहां लाभ भी होगा और लक्ष्मी भी होगी।

कुंती के जन्म से जुडा है ये रहस्य, जिसने बदल दी महाभारत की कहानी

कुंती के यहां ऋषि दुर्वासा पधारे और कुंती ने उनकी खूब सेवा की। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर ऋषि दुर्वासा ने कुंती को आशीर्वाद दिया कि वो जिस भी देवता का ध्यान करके मंत्र का उच्चारण करेगी, उस देवता के समान ही उसे पुत्र की प्राप्ति होगी।

महाभारत में कई चरित्र ऐसे हैं जिन्हें हमेशा से सवालों के घेरे में रखा जाता है। पांडवों और सूर्यपुत्र कर्ण की मां के रूप में कुंती द्वारा लिए गए कई निर्णयों को गलत ठहराया जाता है। जैसे महारथी और दानशील कहलाए जाने वाले कर्ण को स्वीकार न करके नदी में बहा देने की घटना को आज भी अधिकतर लोग सही नहीं मानते।

जबकि एक गलतफ्हमी के कारण दंड के रूप में द्रौपदी का विवाह पांचों भाईयों से करवा देने के निर्णय को भी अधिकतर लोग, खासकर आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा आलोचना की जाती है, लेकिन इन सब बातों से ऊपर उठकर गहराई से सोचें तो महाभारत के अधिकतर पात्र स्वयं पूर्वजन्म या बचपन में कई भीषण समस्याओं से गुजर चुके थे, जिसके कारण उनका व्यक्तित्व और कर्म प्रभावित हुए। कुंती भी इस बात का अपवाद नहीं है।

क्या आप कुंती के जन्म से जुडे रहस्य के बारे में जानते हैं। वास्तव में आज भी कितने ही लोग कुंती का असली नाम नहीं जानते। इसका कारण ये भी है कि महाभारत पर बने टीवी सीरियल्स में कुंती के जन्म से जुडी हुई कहानी को विस्तार से नहीं दिखाया गया। चलिए, हम आपको बताते हैं राजकुमारी कुंती के जन्म से जुडे हुए रहस्य के बारे में।

पृथा था राजकुमारी कुंती का नाम

यदुवंश के प्रसिद्ध राजा शूरसेन श्रीकृष्ण के पितामह थे, जिनकी पृथा नामक एक पुत्री थी। शूरसेन के फुफेरे भाई कुंतीभोज की कोई सन्तान नहीं थी, इसलिए शूरसेन ने कुंतीभोज को वचन दिया कि उनकी पहली संतान को उन्हें गोद दे देंगे। फलस्वरूप पृथा शूरसेन की पहली पुत्री थी जिसे कुंतीभोज ने गोद लिया था। जिसके बाद पृथा का नाम कुंती पड गया। इस प्रकार कुंती को मिला मंत्र द्वारा संतान उत्पत्ति का वरदान।

एक बार कुंती के यहां ऋषि दुर्वासा पधारे और कुंती ने उनकी खूब सेवा की। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर ऋषि दुर्वासा ने कुंती को आशीर्वाद दिया कि वो जिस भी देवता का ध्यान करके मंत्र का उच्चारण करेगी, उस देवता के समान ही उसे पुत्र की प्राप्ति होगी।

इस तरह कुंती ने सबसे पहले सूर्यदेव की स्तुति की, जिससे उन्हें महारथी कर्ण संतान के रूप में प्राप्त हुए। इसके बाद पांडु से विवाह होने के लिए बाद उन्हें युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की प्राप्ति हुई।

ध्यान रखें सोमवार को बिल्बपत्र पेड से नहीं तोडना चाहिए

ध्यान रखें सोमवार को बिल्बपत्र पेड से नहीं तोडना चाहिए। इसके साथ ही चतुर्थी, अष्टमी, नवमीं, चतुर्दशी और अमावस्या को बिल्बपत्र तोडना शास्त्रों में निषेध माना गया है। श्रावण माह में शिवलिंग पर बिल्बपत्र अर्पित करने बहुत शुभ माना जाता है। ऐसा करने पर शिवभक्त की मनोकामना जरूर पूरी होती है। यदि बिल्बपत्र की जड का जल अपने सिर पर लगाएं तो इससे सारे तीर्थों के दर्शन का पुण्य लाभ मिलता है।

बिल्बपत्र को शिवलिंग पर अर्पित करने के कुछ नियम होते हैं। यदि आप इनका पालन करते हैं तभी यह शुभकारक है। ध्यान रखें सोमवार को बिल्बपत्र पेड से नहीं तोडना चाहिए। इसके साथ ही चतुर्थी, अष्टमी, नवमीं, चतुर्दशी और अमावस्या को बिल्बपत्र तोडना शास्त्रों में निषेध माना गया है। श्रावण सोमवार को गंध, फूल, धतूरे से जो बिल्ववृक्ष की जड की पूजा करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही श्रावण सोमवार के दिन यदि कोई कुंवारी कन्या व्रत रखें तो उसे उत्तम वर की प्राप्ति होती है।

स्त्रियों को खुश रखने के ये हैं अचूक उपाय

यदि घर की स्त्री प्रसन्न है तो जिंदगी भी सुख पूर्वक गुजरती है। मनु स्मृति में स्त्रियों को खुश रखने के लिए तीन अचूक उपाय बताए गए हैं। हालांकि आधुनिक समय में इनकी व्याख्या अलग हो सकती है।

मनु स्मृति के विचारों को हिंदू धर्म के आधार के तौर पर देखा जाता रहा है। इस पौराणिक ग्रंथ में कई रीति-रिवाज, संस्कारों के बारे में विस्तार से बताया गया है। स्त्रियों के बारे में भी इस ग्रंथ में बताया गया है, कि उन्हें कैसे प्रसन्न रखा जा सकता है। मनुस्मृति के अनुसार, जिस घर के पुरुष अपनी पत्नी, माता या बहन को अच्छे वस्त्र प्रदान करते हैं, उस घर पर भगवान हमेशा प्रसन्न रहते हैं। ऐसे घर में हमेशा सुख-शांति बनी रहती है और सभी कामों में सफलता मिलती है। जिस घर की महिलाएं खुश रहती हैं, वहां देवताओं का निवास माना जाता है। महिलाओं को आभूषण प्रिय होते हैं। हर मनुष्य को अपने घर की महिलाओं को गहने उपहार में देना चाहिए। जिस घर की महिलाएं अच्छे कपडे और गहनों से श्रृंगार करती है, वहां कभी दरिद्रता नहीं रहती। ऐसे घर में हमेशा खुशहाली और मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। पुराणों में महिलाओं का सम्मान करने की बात कही गई है। जिस घर में महिलाओं से बुरी तरह से बात की जाती है या उनका सम्मान नहीं किया जाता, ऐसे घर में भगवान भी नहीं रहते।

यहां भगवान से की गई प्रार्थना की स्वयं अनुभूति होती है

यहां दशहरे में लंकापति रावण को नहीं जलाया जाता है, क्योंकि रावण ने यहां भगवान शंकर की तपस्या की थी। यही नहीं आज तक जिस ने भी यहां रावण के पुतले को जलाने का प्रयास किया। उसे भारी हानि उठानी पडी।

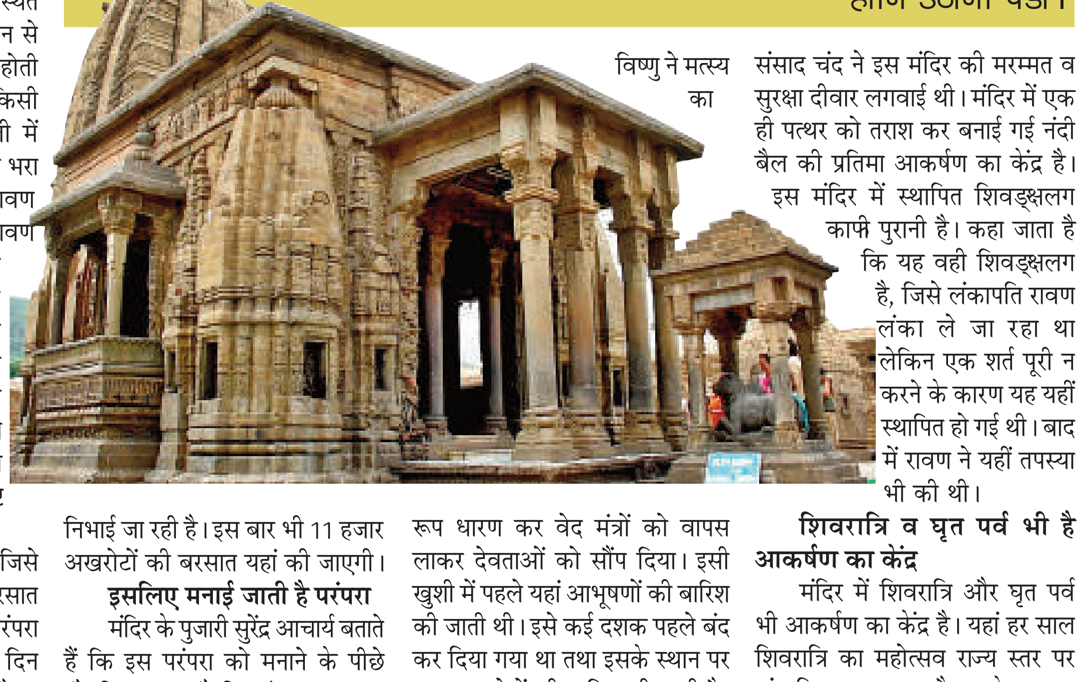

हिमाचल प्रदेश के चप्पे-चप्पे में आस्था की झलक मिलती है। यहां की संस्कृति, देवी-देवताओं पर गहरी आस्था के कारण ही इसे देवभूमि का नाम दिया गया है। देवभूमि के जिला कांगडा के बैजनाथ में ऐतिहासिक शिव मंदिर स्थित है। जहां शिव भगवान से सच्चे मन से की गई प्रार्थना की स्वयं अनुभूति होती है कि कहीं प्रार्थना की गई है और किसी ने उसे सुना है। शिखराकार शैली में निर्मित यह मंदिर कई रहस्यों से भी भरा हुआ है। यहां दशहरे में लंकापति रावण को नहीं जलाया जाता है, क्योंकि रावण ने यहां भगवान शंकर की तपस्या की थी। यही नहीं आज तक जिस ने भी यहां रावण के पुतले को जलाने का प्रयास किया। उसे भारी हानि उठानी पडी। इसी मंदिर के आसपास किसी सुनार को भी अपना व्यवसाय खोलने की इजाजत नहीं है। जो दुकान चलाता है, वह दुकान ही नष्ट हो जाती है।

मंदिर से जुडी एक परंपरा जिसे अखरोट मार यानी अखरोटो की बरसात भी कहते हैं, बेहद रोचक है। इस परंपरा को हर साल बैकुठ चौदस के दिन निभाया जाता है। इस बार बैंकुठ चौदस 24 नवंबर को है। इस परंपरा के तहत शाम ढलते ही बैजनाथ शिव मंदिर की छत से हजारों अखरोटों की बरसात की जाती है। इन अखरोटों को नीचे मंदिर परिसर में खडे लोग प्रसाद के रूप में एकत्रित करते हैं। यह परंपरा सदियों से निभाई जा रही है। इस बार भी 11 हजार अखरोटों की बरसात यहां की जाएगी।

इसलिए मनाई जाती है परंपरा

मंदिर के पुजारी सुरेंद्र आचार्य बताते हैं कि इस परंपरा को मनाने के पीछे पौराणिक कथा है कि शंकासुर नामक राक्षस ने देवताओं पर जीत हासिल की मगर देवताओं की शक्ति से पार न पा सका। जब उसे पता चला के देवता वेद मंत्रों के कारण उस पर भारी पड रहे हैं तब उसने वेद मंत्रों को छीनकर जल में प्रवाहित कर दिया। उसके बाद भगवान विष्णु ने मत्स्य का रूप धारण कर वेद मंत्रों को वापस लाकर देवताओं को सौंप दिया। इसी खुशी में पहले यहां आभूषणों की बारिश की जाती थी। इसे कई दशक पहले बंद कर दिया गया था तथा इसके स्थान पर अब अखरोटों की बारिश की जाती है।

नौवीं शताब्दी में निर्मित है मंदिर

पठानकोट-मंडी राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे में स्थित यह मंदिर नौवीं शताब्दी में निर्मित है। इसका निर्माण उस समय मयूक और अहूक नाम के दो भाइयों ने करवाया था। कांगडा के अंतिम राजा संसाद चंद ने इस मंदिर की मरम्मत व सुरक्षा दीवार लगवाई थी। मंदिर में एक ही पत्थर को तराश कर बनाई गई नंदी बैल की प्रतिमा आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर में स्थापित शिवङ्क्षलग काफी पुरानी है। कहा जाता है कि यह वही शिवङ्क्षलग है, जिसे लंकापति रावण लंका ले जा रहा था लेकिन एक शर्त पूरी न करने के कारण यह यहीं स्थापित हो गई थी। बाद में रावण ने यहीं तपस्या भी की थी।

शिवरात्रि व घृत पर्व भी है आकर्षण का केंद्र

मंदिर में शिवरात्रि और घृत पर्व भी आकर्षण का केंद्र है। यहां हर साल शिवरात्रि का महोत्सव राज्य स्तर पर पांच दिन मनाया जाता है। इसके अलावा मकर संक्रांति के दिन यहां घृत पर्व शुरू होता है। इसमें शिवङ्क्षलग के ऊपर सात दिन तक कई क्विंटल देशी घी को फिर से मक्खन का रूप देकर घृत चढाया जाता है। इसे बाद में लोग चर्म रोगों से मुकित के लिए लगाते है।

क्या कभी सोंचा है कि भगवान के सामने अगरबत्ती क्यूं जलाते हैं

अगरबत्ती के पूरे जलने पर वातावरण में अच्छी खुशबू फैलती है और राख पीछे छूट जाती है। यह एक हिन्दू प्रथा है जो इंसान के स्वभाव को दर्शाता है। यह इंसान को दूसरों के लिए कुर्बानी देना सिखाता है। यह अपनी आकांक्षा को छोडकर दूसरों की जिंदगी में उजाला करना सिखाता है। इसलिए हम धार्मिक समारोह में अगरबत्ती जलाते हैं।

क्या आपको पता है कि हम किसी धार्मिक समारोह में अगरबत्ती क्यों जलाते हैं। इसके एक से ज्यादा कारण हैं। यह एक हिन्दू प्रथा है जो सदियों से चली आ रही है। हर हिन्दू प्रथा के पीछे कुछ न कुछ ठोस कारण होते हैं। चलिए अगरबत्ती जलाने के पीछे क्या कारण है यह भी जानें।

आध्यात्मिक कारण: अगरबत्ती जलाने के पीछे आध्यात्मिक कारण है। ऐसा मानते हैं कि अगरबत्ती से जो धुंए के छल्ले निकलते हैं वह हमारी पूजा को सीधे भगवान के पास ले जाते हैं। यह आपके विचार को सुंदर और पवित्र रखते हैं।

अगरबत्ती का धुआं किस तरह ले सकता है आपकी जान

अगरबत्ती के पूरे जलने पर वातावरण में अच्छी खुशबू फैलती है और राख पीछे छूट जाती है। यह एक हिन्दू प्रथा है जो इंसान के स्वभाव को दर्शाता है। यह इंसान को दूसरों के लिए कुर्बानी देना सिखाता है। यह अपनी आकांक्षा को छोडकर दूसरों की जिंदगी में उजाला करना सिखाता है। इसलिए हम धार्मिक समारोह में अगरबत्ती जलाते हैं।

मनोवैज्ञानिक कारण:

अगरबत्ती को कई रोगोपचार में भी इस्तमाल करते हैं। जब आप अगरबत्ती जलाते हैं तो इसकी खुशबू से दिमाग पर हीलिंग और आरामदेह प्रभाव पडता है। आप मानसिक तौर पर रिलैक्स हो जाते हैं और जब आप किसी धार्मिक समारोह में बैठते हैं तो आप अपनी परेशानी को भूल जाते हैं।

भगवान की पूजा में आपका दिल और दिमाग लगता है। जब आप पूरे मन से पूजा करते हैं तो यह समाधि का काम करता है और इससे तनाव दूर होता है।

माहौल बनाता है:

हिन्दू प्रथा में जब आप अगरबत्ती जलाते हैं तो यह आपके आस पास की गन्दी बदबू को हटाता है। यह किसी धार्मिक समारोह के लिए सही माहौल बनाता है। अगरबत्ती के सुगंध मात्र से आप यह समझ सकते हैं कि कोई धार्मिक अनुष्ठान चल रहा है। इससे कीडे मकौडे भी दूर भागते हैं।

दूसरे कारण: अ
गरबत्ती सिर्फधार्मिक प्रथा का ही हिस्सा नहीं हैं, यह कई दशकों से चीन, इजिप्ट, तिब्बत की प्रथाओं में चला आ रहा है। वह इसका इस्तमाल धार्मिक समारोह में ही नहीं पर निजी चीज जैसे एरोमा थेरेपी में भी करते आ रहे हैं। इसलिए अगली बार जब आप अगरबत्ती जलाते हैं तो यह ध्यान रखिये कि यह आपको एक से अधिक रूप में फायदा पहुंचाता है।

जादू की झप्पी

आलिंगन सिर्फ अंतरंगता के लिए ही नहीं होता है, बल्कि इससे भी बहुत ज्यादा होता है। आलिंगन प्यार जताने का एक बेहतरीन तरीका तो है ही साथ ही इसके स्वास्थ्यगत फायदे भी हैं। इससे स्मरण शक्ति बढ़ती है और तनाव कम होता है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि जब आप किसी को गले लगाते हैं, तो इससे रक्त में एक हार्मोन ऑक्सीटोसिन का स्राव होता है। इससे उच्च रक्तचाप में कमी आती है, तनाव और बेचैनी कम होती है और इससे आपकी स्मरण शक्ति भी बेहतर होती है।

आलिंगन से एक व्यक्ति की आत्मिक ऊर्जा दूसरे के मन और चेतना में प्रवेश करने लगती है। ऐसा करने से परेशान व्यक्ति को राहत मिलती है। एक अध्ययन से पता चला है कि ब्रिटेनवासी प्रत्येक आलिंगन में नौ सेकेंड से अधिक का समय लगाते हैं और इस तरह हर महीने आलिंगन के लिए वे एक घंटा समय खर्च करते हैं।

सिर्फ यही नहीं, आलिंगन में इतना समय खर्च करने के बावजूद सर्वेक्षण में शामिल किए गए 41 प्रतिशत लोगों ने कहा कि हम आलिंगन में और भी समय खर्च करना चाहते हैं। सर्वेक्षण में पाया गया है कि 69 प्रतिशत ब्रिटिश अपने प्रेमी या प्रेमिका के साथ आलिंगन करना चाहते हैं, जबकि 14 प्रतिशत अपने करीबी मित्र के साथ और नौ प्रतिशत ही अपनी मां के साथ आलिंगन करना चाहते हैं।

वास्तव में आलिंगन प्यार जताने का सबसे बेहतरीन तरीका है। कोई कितना भी परेशान क्यों न हो किसी अपने के गले लगकर बहुत अच्छा महसूस करता है। क्योंकि आलिंगन से एक व्यक्ति की आत्मिक ऊर्जा दूसरे के मन और चेतना में प्रवेश करने लगती है। ऐसा करने से परेशान व्यक्ति को तो राहत मिलती ही है, साथ ही आलिंगन वाला स्वयं भी ऊर्जा से भर उठता है।

प्यार जताने का तरीका

आलिंगन प्यार जताने का सबसे बेहतरीन तरीका है। कोई कितना भी परेशान क्यों न हो किसी अपने के गले लगकर बहुत अच्छा महसूस करता हैं। क्योंकि आलिंगन से एक व्यक्ति की आत्मिक ऊर्जा दूसरे के मन और चेतना में प्रवेश करने लगती है। ऐसा करने से परेशान व्यक्ति को तो राहत मिलती ही है, साथ ही आलिंगन वाला स्वयं भी ऊर्जा से भर उठता है। एक ताजा अध्ययन के अनुसार, आलिंगन से स्वास्थ्य को भी फायदा होता है।

ब्लड प्रेशर पर कंट्रोल

वास्तव में आलिंगन स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है, और एक स्वस्थ जीवनशैली को बनाए रखने में भी मदद करता है। यह अवसाद का कम करता है और रक्त के दबाव को बनाए रखने में मदद करता है। रक्तचाप के स्थिर रहने से सिर दर्द और अन्य बीमारियों के होने की आशंका कम होती है।

सिर्फ अंतरंगता नहीं

आलिंगन सिर्फ अंतरंगता के लिए ही नहीं होता है, बल्कि इससे भी बहुत ज्यादा होता है। जो जोड़े एक-दूसरे को गले लगाते हैं उनका अन्य (जो एक दूसरे को गले नहीं लगाते) जोड़ों की तुलना में मजबूत सम्पर्क होता है। जब कोई अपने पार्टनर को गले लगाता है तो वह भी नहीं जानता कि वह बातचीत के कौन से स्तर पर होता है। यहां तक कि कई बार बिना बोले सिर्फ गले लगना ही रिश्ते में जादुई असर करता है।

सावधानी भी जरूरी

वियना विश्वविद्यालय के शोध के मुताबिक किसी को गले लगाते वक्त हालांकि सावधानी बरतनी चाहिए। आप उसी को गले लगाएं, जिसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं, वरना इसका उल्टा प्रभाव भी हो सकता है।

उल्लेखनीय है कि ऑक्सीटोसिन को माता-पिता, बच्चों और दम्पतियों के बीच आपसी प्यार बढ़ाने के लिए प्रमुख कारक माना जाता है। सक्रिय सम्बंध में रह रहे साथियों के बीच ऑक्सीटोसिन का स्तर अधिक पाया जाता है।

डिप्रेशन कम करता है

कई शोधों से भी यह बात साबित हो गई है कि किसी के साथ आलिंगन करने से अवसाद से लड़ने में मदद मिलती है। आलिंगन के दौरान रक्त से ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन का स्राव अवसाद से लड़ता है। अगर कोई अपने साथी की बाहों में सोता है तो न केवल उसको आरामदायक और शांतिपूर्ण नींद आती है बल्कि अगले दिन चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान लेकर जागता है।

एक-दूसरे को जानना जरूरी

न्यूरोफिजियोलॉजिस्ट्स के मुताबिक गले लगाने का फायदा हालांकि तभी मिलता है, जब गले लगने वाले दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को जानते हों और एक-दूसरे पर भरोसा करते हों। यदि गले लगने वाले व्यक्ति एक-दूसरे को नहीं जानते या दोनों में से एक गले नहीं लगना चाहे तो इसका कोई फायदा नहीं मिल पाता है। उल्टे इससे बेचैनी बढ़ जाती है। गले लगाना अच्छी बात है, लेकिन भले ही कोई भी कितना भी एक-दूसरे से गले लगे, वास्तविकता यह है कि महत्वपूर्ण चीज आपसी भरोसा है।

रूखापन खत्म होता है

महिलाओं में बच्चों को जन्म देते वक्त और स्तनपान कराते वक्त इस हार्मोन का स्राव होता है, जिससे माता और बच्चों के बीच लगाव बढ़ता है। शोधार्थियों के मुताबिक अपने प्रियजनों को गले लगाने वाले व्यक्ति के स्वभाव का रूखापन भी समाप्त होता है और उसमें समय के साथ मधुरता का विकास होता है।

किताबें पढ़ने वाले ज्यादा जीते हैं ...

कुछ लोग अधिक पढ़ने वाले लोगों का मजाक उड़ाते हैं और उन्हें किताबी कीड़ा तक कहते हैं। अब एक रिसर्च में पता चला है कि जो लोग किताबें अधिक पढ़ते हैं, वे दूसरों की तुलना में अधिक दिनों तक जीते हैं। यह रिसर्च अमेरिका के येल यूनिवर्सिटी में किया गया है। इस रिसर्च में 50 वर्ष से अधिक उम्र के 3635 लोगों को शामिल किया गया। इसमें भाग लेने वाले सभी लोगों को तीन ग्रुप में बांट दिया गया। पहले ग्रुप में किताब नहीं पढ़ने वाले लोगों को शामिल किया गया। दूसरे ग्रुप में साढ़े तीन घंटे तक किताब पढ़ने वाले लोगों को शामिल किया गया और तीसरे ग्रुप में साढ़े तीन घंटे से अधिक पढ़ने वाले लोगों को शामिल किया गया। रिसर्च में पाया गया कि अधिक पढ़ने वाले लोगों में अधिकतर लड़कियां, कॉलेज कर चुके लोग और अधिक आय वाले लोग थे। रिसर्च में देखा गया कि साढ़े तीन घंटे तक पढ़ने वाले लोगों में नहीं पढ़ने वाले लोगों की तुलना में 12 वर्ष के अंतराल में 17 प्रतिशत कम लोगों की मृत्यु हुई। जो लोग साढ़े तीन घंटे से अधिक पढ़ रहे थे, उनमें मृत्यु दर 27 प्रतिशत तक कम देखी गई। किताब पढ़नेवाले औसतन सभी लोग नहीं पढ़ने वालों की तुलना में दो साल अधिक जिए।

रुटीन बिगड़ा तो बिगड़ेंगे बच्चे...

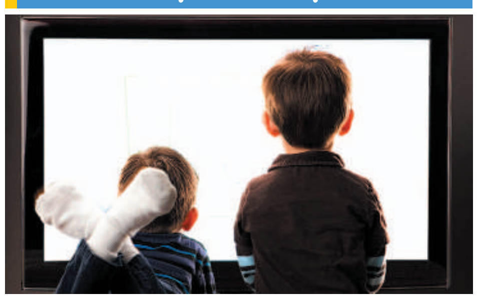

शादी-ब्याह तो कभी छुट्टियों का मौसम। कभी घर पर मेहमान आए, कभी खुद कहीं चले गए। इस आपाधापी में आपका रुटीन तो खराब होता ही है, बच्चों का रुटीन भी गड़बड़ा जाता है। उनका रुटीन वैसा नहीं रह पाता, जैसा सामान्य दिनों में होता है और यही बात खतरनाक है। बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ कहते हैं कि बच्चों के रुटीन को गड़बड़ाने नहीं देना चाहिए। इन विशेषज्ञों की राय है कि कुछ विशेष परिस्थितियों जैसे बीमारी, यात्रा आदि को छोड़कर बच्चों के रुटीन को बिगाड़े नहीं। रूटीन बदलने से बच्चे पढ़ाई से संबंधित कार्य को बोझ समझने लगते हैं। इसलिए माता-पिता को ध्यान देना चाहिए कि बच्चों के सुबह उठने के समय, नहाने, नाश्ता करने, खेलने, टीवी देखने और पढ़ने के समय में विशेष बदलाव नहीं करना चाहिए। हालांकि विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि ऐसे सख्त नियम भी न बना डालें कि बच्चों का बचपना ही खत्म हो जाए। कुछ दिन घूमने-फिरने गए हों तो उन्हें पूरी मस्ती करने देना चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि यह हो सकता है कि बच्चे कुछ कामों में लेट-लतीफी करें, लेकिन पूरी तरह रुटीन बदलने पर दिक्कतें हो सकती हैं।

इंडियन लाइसेंस से विदेशों में ड्राइविंग...

अगर आपके पास इंडियन लाइसेंस है और कार ड्राइविंग के शौकीन तो आपके लिए यह खुशखबरी है कि आप विदेशों की स्मूथ सड़कों पर भी ड्राइविंग का मजा ले सकते है। विदेशों में भी आप इंडियन लाइसेंस को साथ वहां के नियम और कानून का पालन करते हुए कार या फिर बाइक आदि ड्राइव कर सकते हैं। आइए जानते है उन देशों के बारे में जहां इंडियन लाइसेंस के साथ ड्राइविंग की जा सकती है।

न्यूजीलैंड

अगर अपकी उम्र 21 साल से ज्यादा है तो आप 1 साल तक न्यूजीलैंड में इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस के साथ कार ड्राइव कर सकते हैं। अगर आपका ड्राइविंग लाइसेंस इंग्लिश में नहीं है तो एंबेसी से न्यूजीलैंड ट्रांसपोर्ट एजेंसी से ट्रांसलेट कराना होता है।

ऑस्ट्रेलिया

आप न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्सलैंड, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया और ऑस्ट्रेलिया कैपिटल टेरिटरी में ही भारतीय वैलिड ड्राइविंग लाइसेंस से ड्राइव कर सकते हैं। लीगल ड्राइविंग लाइसेंस के साथ आप वही गाड़ी चला सकते हैं जिसकी इजाजत भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस में है। यहां इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस सिर्फ 3 महीने के तक ही चलेगा।

फ्रांस

फ्रांस में इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस को एंबेसी से फ्रेंच में ट्रांसलेट कराना भूलने पर मुसीबत खड़ी हो सकती है। फ्रांस में इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस 1 साल तक चलता है।

अमेरिका

अमेरिका में आप भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस से एक साल तक कार ड्राइव कर सकते हैं। इसके बाद आपको इंटरनेशनल ड्राइविंग परमिट बनवाना पड़ेगा।

साउथ अफ्रीका

साउथ अफ्रीका में कार ड्राइव करने के लिए ड्राइविंग लाइसेंस इंग्लिश में होना चाहिए और साथ ही इसमें आपकी फोटो और साइन होना सबसे जरूरी है।

नार्वे

अगर आपको नार्वे में ज्यादा समय के लिए रहना है तो आपको वहां का ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना पड़ेगा। यहां पर आप इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस के साथ 3 महीने तक ही कार ड्राइव कर सकते हैं।

स्विट्ज़रलैंड

कार ड्राइव करने के लिए इंडियन लाइसेंस स्विट्ज़रलैंड में सिर्फ 1 साल तक के लिए ही लीगल होता है।

इंग्लैंड

इंग्लैंड में आप इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस के साथ सिर्फ छोटी कार और बाइक ही अपने लाइसेंस से चला सकते हैं। यूके को कार ड्राइव के लिए बेस्ट डेस्टिनेशन माना जाता है।

जर्मनी

अगर आपके पास इंटरनेशनल ड्राइविंग लाइसेस नहीं है तो एंबेसी से इंडियन ड्राइविंग लाइसेंस को जर्मनी में ट्रांसलेट करवा सकते हैं और जर्मनी में 6 महीने तक कार ड्राइव कर सकते हैं।

शहरी बच्चे ज्यादा नेगेटिव!

इलाहाबाद में स्थित मनोविज्ञानशाला में हाल ही में एक सर्वे हुआ था। ग्रामीण व शहरी इलाकों में छात्र-छात्राओं के बीच कराए गए सर्वे में यह बात सामने आई है कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शहरी बच्चे अपने माता-पिता की उदासीनता के शिकार हो रहे हैं। शोध में यह भी पता चला है कि ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहर के बच्चों पर पारिवारिक उदासीनता का ज्यादा नकारात्मक असर पड़ रहा है। 2015-16 शैक्षिक सत्र में कुल 500 छात्र व 258 छात्राओं पर सर्वे किया गया। ये सभी बच्चे 10वीं के विद्यार्थी हैं। जब लड़के व लड़कियों पर अलग-अलग अध्ययन किया गया तो पता चला कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन पर इस उदासीनता का अधिक प्रतिकूल प्रभाव है। सर्वे के बाद अभिभावकों के लिए तीन प्रमुख सुझाव दिए गए हैं। अभिभावकों को सलाह दी गई है कि दूसरे बच्चों से तुलना की बजाय अपने बच्चे की उपलब्धि एवं अच्छे प्रयासों की सराहना करें। बच्चों पर विश्वास करने की आदत विकसित करें और उन्हें घरेलू कार्य का दायित्व सौंपें जिससे वे शैक्षिक व घरेलू कार्यों में सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो सकें। मन की एकाग्रता व स्थिरता को बढ़ाने के लिए रोज लगभग 20 मिनट योगाभ्यास करने की सलाह दी गई है।

विदेश से कितना सोना ला सकते हैं आप?

सोना यानी कि गोल्ड से भारतीयों को कितना लगाव है यह बात किसी से छिपी नहीं है। भारतीयों के गोल्ड प्रेम से दुनिया वाकिफ है। देश में लोग सोने के आभूषण पहनने के अलावा चढ़ावे में भी चढ़ा देते हैं, दान कर देते हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीयों में भी सोने को लेकर गहरा लगाव है इसलिए जब भी वह वापस देश लौटते हैं तो सोना साथ में खरीदकर जरूर लाते हैं। कई बार देखा गया है कि लोगों को सोने के साथ एयरपोर्ट पर रोक लिया जाता है। एयरपोर्ट अथॉरिटि को इस बात का शक रहता है कि मिडिल ईस्ट से लोग सोने की तस्करी करते हैं इसलिए लोगों को एयरपोर्ट पर रोक लिया जाता है। इस डर से लोग बाहर से सोना खरीद कर नहीं लाते हैं लेकिन हम आपको बताएंगे कि आप विदेश से कितना ड्यूटी फ्री सोना खरीद कर ला सकते हैं।

ड्यूटी फ्री सोने की सीमा

ड्यूटी फ्री सोना लाने के लिए आपको कुछ जरूरी बातों की जानकारी होनी चाहिए। अगर आप एक वर्ष से अधिक विदेश में रह चुके हैं तो आप 50 हजार रुपए तक का सोना भारत में ड्यूटी फ्री लेकर आ सकते हैं। वहीं महिलाओं के लिए यह छूट एक लाख रुपए तक है। महिलाएं एक लाख रुपए तक की कीमत का सोना ड्यूटी फ्री लेकर भारत आ सकती हैं।

सिक्के और बिस्किट

अब आपके मन में सवाल उठ रहा होगा कि अगर ऐसा है तो क्या विदेश से सोने के सिक्के या फिर सोने के बिस्किट ड्यूटी फ्री शर्तों के अंतर्गत लेकर आ सकते हैं ? इसका जवाब है नहीं। क्योंकि ड्यूटी फ्री की शर्तें सिर्फ सोने के आभूषणों पर लागू हैं और उनकी भी सीमा है ऐसे में आपको सोने के सिक्कों और बिस्किट्स पर ड्यूटी देना पड़ेगा।

कितना है ड्यूटी शुल्क

एक सवाल आपके मन में उठ रहा होगा कि, अगर सोना निर्धारित कीमत से अधिक है तो कितनी ड्यूटी चुकानी होगी? तो इसका जवाब है कि आपके पास ड्यूटी फ्री सोने से जितना अधिक सोना है उसका 10.3 प्रतिशत आपको चुकाना होगा। इस मामले में भी आपको नियम और शर्तें जान लेनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति एक किलो से अधिक सोना नहीं ला सकता।

रसीद साथ रखिए

आप यदि विदेश से सोने के आभूषण या फिर सिक्के खरीदकर ला रहे हैं तो आपको उसकी रसीद साथ रखनी चाहिए। यह कस्टम्स में पूछ-ताछ के दौरान आपकी मदद करेगी साथ ही आपके पास खरीदारी और सोने की सही कीमत का एक प्रमाण भी रहेगा। इस तरह की रसीद आपको आगे आने वाली परेशानियों से बचाएगी।

यह अफवाह है

आम तौर पर लोगों में ये भ्रांतियां होती है कि विदेश से यदि सोने के आभूषण खरीद कर ला रहे हैं तो उन्हें पहन कर आना चाहिए क्योंकि पहने हुए आभूषणों पर किसी तरह की ड्यूटी नहीं देनी पड़ती है लेकिन ये सच नहीं है। यहां भी वही नियम और शर्तें लागू रहती हैं।

जाते वक्त भी दें ब्योरा

आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विदेश जाने से पहले आपको अपने गहनों के संबंध में कस्टम को जानकारी दे देनी चाहिए। चाहे आपने छोटी सी अंगूठी ही क्यों ना पहनी हो, विदेश जाने से पहले आपको एयरपोर्ट पर ये सुनिश्चित करना होगा कि यह आभूषण आपका है और आप इसे देश से ही पहन कर जा रहे हैं। इससे आप वापसी के दौरान होने वाली परेशानी से बच सकते हैं।

भारत में भी खरा सोना

अब दौर पहले के जैसा नहीं रहा। पहले देश में ये धारणा थी कि यहां मिलने वाला सोना उतना खरा नहीं जितना विदेशी सोना होता है। लेकिन सरकार के नियम अब कड़ाई से लागू किए जा रहे हैं जिससे बाजार में सिर्फ हॉलमार्क के ही सोने के आभूषण बिक रहे हैं। इसलिए अब इस बात से चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है कि देश में मिलने वाला सोना खरा है या नहीं।

खबरें जो सोच बदल दे
शुभ लाभ

संपादकीय

मंदिर पर्यटन की प्राथमिकताएं

पिछले तीन साल में हिमाचल के प्रमुख 36 मंदिरों ने 419.88 करोड़ बटोर कर यह साबित कर दिया कि तीर्थाटन से हिमाचल बहुत कुछ कर सकता है। बेशक प्रतिवर्ष 150 करोड़ की मंदिर कमाई को हम अच्छी योजनाओं-परियोजनाओं से बढ़ा सकते हैं, यदि धार्मिक पर्यटन को विस्तृत भूमिका में देखा जाए। एक अनुमान के अनुसार हिमाचल में यात्रा की 80 फीसदी वजह केवल तीर्थाटन है, लेकिन हमारा टूरिस्ट मैप इसकी गवाही नहीं देता। इसके लिए अहम है मंदिर व्यवस्था में सुधार तथा प्रशासनिक व वित्तीय ढांचे में सुधार। समस्त मंदिरों का रखरखाव, उनका योजना व बजट आकार तथा कॉडर की समानता या एक रूपता नहीं होगी, तो आय-व्यय के बीच केवल स्वार्थ सिद्धियां ही होंगी। आवश्यक यह है कि एक केंद्रीय ट्रस्ट तथा मंदिर व्यवस्था के लिए मंदिर प्रबंधन एवं विकास प्राधिकरण बने। उदाहरण के लिए तीन साल की मंदिर कमाई अगर 419.88 करोड़ है तो इसी के अनुरूप खर्च का हिसाब एकीकृत नहीं है। अधिकतर मंदिर ट्रस्ट आय-व्यय का सबसे बड़ा भाग या तो अनावश्यक प्रशासनिक खर्चों, कर्मचारी तनख्वाहों या अनुत्पादक खर्चों में होता है। कई तरह के शैक्षणिक संस्थान मंदिर ट्रस्ट चला रहे हैं, तो यह सही नहीं है। मंदिर की आय का एक हिस्सा मंदिर के विस्तार या आय बढ़ाने के लिए होना चाहिए। अगर मंदिर प्राधिकरण के तहत मंदिरों की आय-व्यय का सांचा तय हो तो न केवल पारदर्शिता आएगी, बल्कि योजनाओं-परियोजनाओं का उद्देश्य पर्यटन के साथ जुड़ जाएगा। इतना ही नहीं मंदिर आय को बढ़ाने के लिए कुछ साझे उद्योग शुरू किए जा सकते हैं। मसलन अगर दियोटसिद्ध के रोट व ज्वालामुखी के पेड़ों को तमाम मंदिरों के प्रसाद से जोड़ा जाए या धूप व गिफ्ट आइटमों का उत्पादन भी तय हो तो मंदिरों की सामूहिक आय बढ़ेगी। मंदिरों की आय से कोंकण रेलवे की तर्ज पर चिंतपूर्णी, दियोटसिद्ध, कांगड़ा, चामुंडा व अन्य मंदिर परिसर जुड़ सकते हैं। इतना ही नहीं भाषा-संस्कृति विभाग अगर मंदिर परिसरों को कला केंद्रों के रूप में विकसित करे, तो सैकड़ों कलाकारों को आजीविका के साधन उपलब्ध होंगे। हर मंदिर में आधुनिक सभागार के अलावा आर्ट म्यूजियम तथा ट्रेड सेंटर विकसित किए जा सकते हैं। मंदिर परिसर को धार्मिक नगर विकास की योजना से जोडक़र शहरी आर्थिकी विकसित की जा सकती है। मसलन बड़े मंदिरों के आठ-दस किलोमीटर क्षेत्र की धार्मिक शहर विकास योजना पर काम करना होगा, ताकि इन क्षेत्रों को मंदिर आय से जोडक़र नई आर्थिकी विकसित की जा सके। मंदिरों की क्षमता का विस्तार अगर विविध संभावनाओं के अनुरूप करें, तो हिमाचल पांच हजार करोड़ की आर्थिकी विकसित कर सकता है। मंदिरों के साथ अलग-अलग टूरिस्ट सर्किट तथा उत्सव व सांस्कृतिक समागमों का एक वार्षिक कैलेंडर जोडऩा होगा। इतना ही नहीं मंदिर पर्यटन के प्रारूप में धरोहर पर्यटन को भी जोड़ा जा सकता है। मंदिरों में श्रद्धालुओं के कई वर्ग आ रहे हैं अतः दर्शन व्यवस्था के अलावा आकर्षण बढ़ाने के लिए सीमांत क्षेत्रों के पर्यटन को अहमियत देनी होगी। उदाहरण के लिए पांवटा साहिब व ऊना में सिख पर्यटन की अहमियत बढ़ाने के लिए संगठित प्रयास करने होंगे। वाराणसी पहुंचे हिमाचल के मुख्यमंत्री ने फेडरेशन ऑफ होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन को अपने टूअर पैकेज में हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों को जोडऩे का आग्रह किया है। वाराणसी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन का एक उत्तम उदाहरण है जहां साधारण से हाई एंड टूरिस्ट सुविधाओं के खाके पूर्ण हैं। अगर हमें वाराणसी की तरह प्रयास करने हैं, तो प्रमुख मंदिरों के प्रबंधन, विकास, अधोसंरचना और सुविधाओं में निखार लाना होगा। विडंबना यह है कि कुछ वर्ष पूर्व ज्वालामुखी में म्यूजिकल फाउंटेन स्थापित हुआ, लेकिन यह आज तक चला ही नहीं।

प्रतिवर्ष 150 करोड़ की मंदिर कमाई को हम अच्छी योजनाओं-परियोजनाओं से बढ़ा सकते हैं, यदि धार्मिक पर्यटन को विस्तृत भूमिका में देखा जाए। एक अनुमान के अनुसार हिमाचल में यात्रा की 80 फीसदी वजह केवल तीर्थाटन है, लेकिन हमारा टूरिस्ट मैप इसकी गवाही नहीं देता। इसके लिए अहम है मंदिर व्यवस्था में सुधार तथा प्रशासनिक व वित्तीय ढांचे में सुधार। समस्त मंदिरों का रखरखाव, उनका योजना व बजट आकार तथा कॉडर की समानता या एक रूपता नहीं होगी, तो आय-व्यय के बीच केवल स्वार्थ सिद्धियां ही होंगी। आवश्यक यह है कि एक केंद्रीय ट्रस्ट तथा मंदिर व्यवस्था के लिए मंदिर प्रबंधन एवं विकास प्राधिकरण बने। उदाहरण के लिए तीन साल की मंदिर कमाई अगर 419 .88 करोड़ है तो इसी के अनुरूप खर्च का हिसाब एकीकृत नहीं है। अधिकतर मंदिर ट्रस्ट आय-व्यय का सबसे बड़ा भाग या तो अनावश्यक प्रशासनिक खर्चों, कर्मचारी तनख्वाहों या अनुत्पादक खर्चों में होता है। कई तरह के शैक्षणिक संस्थान मंदिर ट्रस्ट चला रहे हैं, तो यह सही नहीं है। मंदिर की आय का एक हिस्सा मंदिर के विस्तार या आय बढ़ाने के लिए होना चाहिए। अगर मंदिर प्राधिकरण के तहत मंदिरों की आय-व्यय का सांचा तय हो तो न केवल पारदर्शिता आएगी, बल्कि योजनाओं-परियोजनाओं का उद्देश्य पर्यटन के साथ जुड़ जाएगा। इतना ही नहीं मंदिर आय को बढ़ाने के लिए कुछ साझे उद्योग शुरू किए जा सकते हैं। मसलन अगर दियोटसिद्ध के रोट व ज्वालामुखी के पेड़ों को तमाम मंदिरों के प्रसाद से जोड़ा जाए या धूप व गिफ्ट आइटमों का उत्पादन भी तय हो तो मंदिरों की सामूहिक आय बढ़ेगी। मंदिरों की आय से कोंकण रेलवे की तर्ज पर चिंतपूर्णी, दियोटसिद्ध, कांगड़ा, चामुंडा व अन्य मंदिर परिसर जुड़ सकते हैं।

कुछ अलग

मनुष्य का आविष्कार

प्रकृति जीव उत्पन्न करती है, सृष्टि का संचार करती है, परन्तु मनुष्य पहले स्वयं को, फिर संसार को सुधारने निकल पड़ता है।' दुनिया में पहली दरार अपना स्थान बना चुकी थी। कॉकरोचों ने उसके भीतर अपना छोटा-सा गणराज्य बसाना आरंभ कर दिया था। पृथ्वी पर एक अद्भुत शांति थी। नदियां बिना किसी परियोजना-रिपोर्ट के सरल भाव से बह रही थीं। पर्वत बिना उद्घाटन-समारोह के सिर उठाए खड़े थे। जंगलों को यह चिंता नहीं थी कि उनका सकल घरेलू उत्पाद कितना है। बादलों ने अभी तक मौसम विभाग की स्थापना नहीं की थी। सूरज प्रतिदिन बिना किसी प्रेस विज्ञप्ति के उगता था। चंद्रमा हर रोज़ बिना किसी सांस्कृतिक समारोह के घटता-बढ़ता रहता था। जीवन इतना स्वाभाविक था कि किसी जीव को यह सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी कि वह जीवित है। सभी जीव सहज भाव से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक शिक्षक कार्यरत है और इन स्कूलों में करीब 33.77 लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं

विकसित भारत की राह में जर्जर शिक्षा व्यवस्था सबसे बड़ा सवाल

आज वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। एक शिक्षक, टूटती दीवारें और घटते सरकारी स्कूल-क्या शिक्षा के बिना 2047 का सपना पूरा होगा? दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में देश की प्रगति, डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष उपलब्धियां, आधारभूत ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से गौरव का विषय हैं। लेकिन इसी चमकदार तस्वीर के पीछे यदि हम सरकारी स्कूलों की ओर देखें तो एक दूसरा भारत दिखाई देता है-ऐसा भारत जहां हजारों बच्चे आज भी पर्याप्त शिक्षकों, सुरक्षित भवन, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सवाल यह है कि जिस शिक्षा-व्यवस्था पर विकसित भारत की नींव रखी जानी है, उसकी बुनियाद ही कमजोर होगी तो 2047 का भारत कितना मजबूत होगा? सरकारी आंकड़े इस चिंता को और गंभीर बनाते हैं। यूडीआईएसई प्लस 2024-25 के अनुसार देश में 1,04,125 स्कूल ऐसे हैं जहां केवल एक शिक्षक कार्यरत है और इन स्कूलों में करीब 33.77 लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। यानी एक शिक्षक को कई कक्षाओं, अनेक विषयों और प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बीच बच्चों की शिक्षा संभालनी पड़ रही है। यह केवल संख्या नहीं, बल्कि उन लाखों बच्चों के भविष्य की कहानी है, जिनके लिए सरकारी स्कूल शिक्षा का सबसे सुलभ और कई बार एकमात्र माध्यम हैं। विडंबना यह है कि उसी देश में हम विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल संस्थानों और अत्याधुनिक शिक्षण परिसरों की चर्चा करते हैं, लेकिन गांव के उस बच्चे की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते जो टूटी छत के नीचे बैठकर भविष्य के सपने देख रहा है। कहीं शिक्षक एक है और कक्षाएं पांच। कहीं विद्यालय भवन जर्जर है, कहीं पानी नहीं, कहीं शौचालय नहीं, कहीं बिजली और पंखे नहीं। हाल के महीनों में उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में विद्यार्थियों को अधिक शिक्षक, बेहतर भोजन, पेयजल, पंखे और बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर सड़कों पर उतरना पड़ा। फतेहपुर में तो लगभग एक हजार विद्यार्थियों ने जर्जर कक्षाओं, रिसती छतों और सुरक्षित पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए प्रदर्शन किया।

एक शिक्षक, टूटती दीवारें और घटते सरकारी स्कूल-क्या शिक्षा के बिना 2047 का सपना पूरा होगा? दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में देश की प्रगति, डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष उपलब्धियां, आधारभूत ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से गौरव का विषय हैं। लेकिन इसी चमकदार तस्वीर के पीछे यदि हम सरकारी स्कूलों की ओर देखें तो एक दूसरा भारत दिखाई देता है-ऐसा भारत जहां हजारों बच्चे आज भी पर्याप्त शिक्षकों, सुरक्षित भवन, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सवाल यह है कि जिस शिक्षा-व्यवस्था पर विकसित भारत की नींव रखी जानी है, उसकी बुनियाद ही कमजोर होगी तो 2047 का भारत कितना मजबूत होगा? सरकारी आंकड़े इस चिंता को और गंभीर बनाते हैं

यह स्थिति केवल किसी एक राज्य अथवा किसी एक सरकार की विफलता नहीं है। यह वर्षों से चली आ रही उस प्रशासनिक सोच का परिणाम है जिसमें शिक्षा को प्राथमिकता तो भाषणों में दी गई, लेकिन उसकी गुणवत्ता और जवाबदेही को शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में स्थान नहीं मिला। शिक्षा विभागों में अधिकारियों और कर्मचारियों की बड़ी व्यवस्था है, बजट है, योजनाएं हैं, समितियां हैं, निरीक्षण तंत्र है-फिर भी एक शिक्षक वाले एक लाख से अधिक स्कूल कैसे बने रहे? यह सवाल केवल सरकार से नहीं, पूरे प्रशासनिक तंत्र से पूछा जाना चाहिए। निश्चित रूप से तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक भी नहीं है। यूडीआईएसई प्लस के अनुसार 2024-25 में देश में कुल 14.71 लाख स्कूल, करीब 24.69 करोड़ विद्यार्थी और एक करोड़ से अधिक शिक्षक हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या 10.13 लाख है, जबकि निजी मान्यता प्राप्त स्कूल करीब 3.40 लाख हैं। सरकार के आंकड़े यह भी बताते हैं कि एकल-शिक्षक स्कूलों की संख्या 2023-24 के 1,10,971 से घटकर 2024-25 में 1,04,125 हुई है और कंप्यूटर सुविधा वाले स्कूलों का अनुपात 57.2 प्रतिशत से बढ़कर 64.7 प्रतिशत हुआ है। इन सुधारों को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन इन्हें अंतिम उपलब्धि मान लेना आत्मसंतोष होगा। क्योंकि शिक्षा की असली कसौटी भवन, कंप्यूटर या आंकड़े नहीं, बच्चे की सीखने की क्षमता और उसके भविष्य का निर्माण है। नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट एक और महत्वपूर्ण तस्वीर सामने रखती है। 2014-15 में देश में 11.07 लाख सरकारी स्कूल थे, जो 2024-25 में घटकर 10.13 लाख रह गए। इसके विपरीत निजी मान्यता प्राप्त स्कूलों की संख्या 2.88 लाख से बढ़कर 3.39 लाख हो गई। यह परिवर्तन केवल स्कूलों की संख्या का उतार-चढ़ाव नहीं है, यह अभिभावकों की बदलती पसंद और सरकारी शिक्षा में घटते विश्वास का संकेत भी है। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि जब सरकार के पास भवन है, जमीन है, प्रशिक्षित शिक्षक हैं, वेतन देने की क्षमता है और विशाल प्रशासनिक तंत्र है, तब सरकारी स्कूल निजी स्कूलों से पीछे क्यों हैं? निजी स्कूलों की आलोचना करना आसान है, लेकिन यह भी देखना होगा कि अभिभावक अपनी सीमित आय में फीस देकर भी निजी स्कूल क्यों चुन रहे हैं। इसका उत्तर सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता, अनुशासन, नियमितता, अंग्रेजी एवं तकनीकी शिक्षा, अभिभावक संवाद और सीखने के वातावरण में छिपा है। एसीईआर के आंकड़े भी इस अंतर को रेखांकित करते हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 2024 में कक्षा 3 के बच्चों में कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ पाने वालों का अनुपात सरकारी स्कूलों में 23.4 प्रतिशत था, जबकि निजी स्कूलों में 35.5 प्रतिशत। कक्षा 5 में भी सरकारी स्कूलों का आंकड़ा 44.8 प्रतिशत और निजी स्कूलों का 59.3 प्रतिशत रहा। यानी समस्या केवल स्कूल भवन की नहीं, सीखने के परिणामों की भी है।

इसी के समानांतर उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तस्वीर भी चिंता पैदा करती है। पेपर लीक, परीक्षा में अनियमितता, भर्ती में देरी और युवाओं के आंदोलनों की खबरें लगातार सामने आती रही हैं। 2026 में परीक्षा संबंधी विवादों ने विद्यार्थियों और अभ्यर्थियों में असंतोष को व्यापक बनाया। इसका अर्थ यह है कि समस्या शिक्षा-व्यवस्था के निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक फैली हुई है। प्राथमिक स्कूल में कमजोर नींव, माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता का संकट और उच्च शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता का सवाल-इन सबको अलग-अलग देखकर समाधान नहीं निकलेगा। सरकारी स्कूल वास्तव में भारत की सामाजिक समानता का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इन स्कूलों में ग्रामीण परिवारों, श्रमिकों, गरीबों, वंचित वर्गों और निम्न आय वाले परिवारों के बच्चे बड़ी संख्या में पढ़ते हैं। यदि इन विद्यालयों की गुणवत्ता गिरती है तो सबसे अधिक नुकसान उसी वर्ग को होता है जिसके पास महंगे निजी स्कूलों का विकल्प नहीं है। इसलिए सरकारी स्कूलों की बदहाली केवल शिक्षा का संकट नहीं, सामाजिक न्याय का संकट भी है। यहां एक कठोर लेकिन सार्थक सुझाव पर विचार होना चाहिए-क्या जनप्रतिनिधियों और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के बच्चों के लिए कुछ निश्चित परिस्थितियों में सरकारी स्कूलों में शिक्षा को प्रोत्साहित अथवा अनिवार्य करने जैसी व्यवस्था बनाई जा सकती है? जब नीति बनाने वाले परिवार स्वयं उसी व्यवस्था का अनुभव करेंगे, तब शायद स्कूल की टूटी खिड़की, बंद शौचालय, शिक्षक की कमी और खराब मिड-डे-मील केवल फाइल की टिप्पणी नहीं रहेंगे, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव बन जाएंगे। शिक्षा को केवल मध्याह्न भोजन, छात्रवृत्ति, यूनिफॉर्म या मुफ्त पुस्तकों की योजनाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता। ये आवश्यक हैं, लेकिन शिक्षा का उद्देश्य केवल बच्चे को स्कूल तक पहुंचाना नहीं, उसे ज्ञान, विवेक, कौशल, संस्कार और आत्मविश्वास से संपन्न नागरिक बनाना है। जिस बच्चे को आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलेगी, उससे कल विकसित भारत के निर्माण में प्रभावी योगदान की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।

देश दुनिया से

सही नहीं है यूपीआई पर कोई भी शुल्क

लोकसभा में 6 अगस्त 2026 को पेमेंट एंड सेटलमेंट सिस्टम एक्ट 2007 में संशोधन बिल पारित किया है, जिसके अनुसार अब यूपीआई एवं अन्य अधिसूचित इलैक्ट्रानिक भुगतानों पर बैंकों और अन्य पेमेंट प्रदात्ताओं पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) लगाए जाने पर वैधानिक रोक समाप्त हो जाएगी। हालांकि सरकार ने यह कहा है कि उपभोक्ताओं पर इसका असर नहीं होगा और यूपीआई भुगतान देना और प्राप्त करना दोनों ही निशुल्क रहेंगे। जैसा कि बताया जा रहा है कि यूपीआई के माध्यम से 2000 रुपए तक के भुगतान तो निःशुल्क रहेंगे ही, लेकिन 2000 रुपए से ऊपर के भुगतानों पर बैंकों और अन्य भुगतान प्रदात्ताओं पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट लगाया जा सकेगा, जो भुगतान प्राप्तकर्ता, यानी विक्रेता से वसूला जाएगा। हालांकि कितना शुल्क लगाया जाएगा, यह निश्चित नहीं है, लेकिन जिस प्रकार के प्रस्तावों पर चर्चा हो रही है, उनके अनुसार ऊंचे मूल्य के लेन-देन पर एमडीआर 0.25 से 0.5 प्रतिशत के बीच हो सकता है। हालांकि सरकार ने यह कहा है कि छोटे विक्रेताओं और उपभोक्ताओं के लिए यूपीआई की सुविधा निशुल्क रहेगी।

क्या है सरकार का तर्क : सरकार द्वारा यूपीआई भुगतान के नियमों में इस बदलाव का जो कारण बताया जा रहा है, वो यह है कि अभी तक यूपीआई निशुल्क है, लेकिन इसकी लागत को किसी न किसी को तो वहन करना पड़ेगा। यूपीआई पर फीस लगाने के समर्थकों का कहना है कि बैंक और नेशनल पेमेंट कॉरपोरेशन आफ इंडिया (एनपीसीआई) और पेमेंट कंपनियां सर्वरों पर ही नहीं, साइबर सुरक्षा और विस्तार पर भी खर्च करती हैं, जिसे किसी को तो वहन करना ही पड़ेगा। रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा कहते हैं कि यूपीआई को सुरक्षित एवं भरोसेमंद बनाए रखने के लिए किसी को तो भुगतान करना ही पड़ेगा।

पब्लिक गुड है यूपीआई : अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार कुछ ऐसी सेवाएं होती हैं जिनका इस्तेमाल गैर प्रतिद्वंद्वी यानी 'नॉन-राइवल' होता है, यानी किसी एक के इस्तेमाल से दूसरों के इस्तेमाल पर कोई बाधा नहीं आती, और ये बिना किसी रोक-टोक के सभी के लिए उपलब्ध होती हैं, और किसी को इसके इस्तेमाल से रोका नहीं जा सकता। ऐसी सेवा को 'प्योर पब्लिक गुड' यानी विशुद्ध सार्वजनिक वस्तु कहा जाता है। कभी-कभी, कुछ सेवाएं गैर प्रतिद्वंद्वी तो होती हैं, लेकिन उनमें लोगों को बाहर रखना मुमकिन होता है। ऐसी चीजों को पब्लिक गुड तो कहा जा सकता है, लेकिन ये 'प्योर पब्लिक गुड' नहीं होतीं। प्योर पब्लिक गुड के उदाहरण हैं-कानून-व्यवस्था, सुरक्षा, पार्क, स्ट्रीटलाइट और सडक़ें। यूपीआई पब्लिक गुड की दूसरी श्रेणी में आता है, जो प्रकृति से गैर प्रतिद्वंद्वी तो है, लेकिन कीमत वसूलने पर इससे अन्यों को वंचित किया जा सकता है (यानी कुछ लोगों को इससे बाहर रखा जा सकता है)। आम तौर पर, सार्वजनिक सेवाएं ऐसी होती हैं जो समाज के लिए फायदेमंद तो होती हैं, लेकिन उनमें निजी क्षेत्र का निवेश नहीं आता, भले ही सैद्धांतिक रूप से उन तक पहुंच को सीमित किया जा सकता हो। अगर सरकार ने यूपीआई को बनाया न किया होता, तो कोई भी निजी क्षेत्र की कंपनी इतना शानदार प्रोडक्ट नहीं बना पाती। सरकार पब्लिक गुड में इन्वेस्टमेंट करती है क्योंकि वे लोगों के लिए फायदेमंद होते हैं। यूपीआई भी ऐसा ही एक पब्लिक गुड है, जो प्रकृति में तो गैर प्रतिद्वंद्वी है, लेकिन हां, इसमें वंचन मुमकिन है। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि हमें इसके लिए फीस लेना शुरू कर देना चाहिए? ऐसे पब्लिक गुड पर फीस लेने का फैसला 'हानि-लाभ विश्लेषण' के आधार पर किया जाना चाहिए। आम तौर पर, हमें यह समझना चाहिए कि अगर लागत की तुलना में फायदे बहुत ज्यादा हैं और लागत बहुत ज्यादा नहीं है, तो इसे मुफ्त रखना ही सबसे अच्छा है। लंबे समय से भारत में लॉजिस्टिक लागत बहुत ऊंची रहती रही है, जिसके कारण हमारे उत्पाद दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते थे। लेकिन पिछले एक दशक से ज्यादा समय में लॉजिस्टिक लागत में कम से कम एक प्रतिशत की महत्वपूर्ण कमी दर्ज की गई है। एनसीएएआर और डीपीआईआईटी के आंकड़ों के अनुसार यह लॉजिस्टिक लागत 2014 में जीडीपी का लगभग 9 प्रतिशत होती थी, जो अब घटकर 8 प्रतिशत तक पहुंच गई है। लॉजिस्टिक लागत के घटने में यूपीआई का निशुल्क होना एक बड़ा कारण है। समझना होगा कि आज भारत में दुनिया के 49 प्रतिशत ऑनलाइन लेन-देन होते हैं, और जो निशुल्क हैं। यदि यूपीआई इंफ्रास्ट्रक्चर की बात करें तो यह भी पब्लिक गुड की श्रेणी में आता है। जिस प्रकार से सडक़ें, पार्क, स्ट्रीट लाइट, कानून व्यवस्था आदि जीवन को सुगम बनाती है, तो यूपीआई व्यवसाय को सुगम बनाती है। सरकार का दायित्व है कि व्यवसाय की सुगमता (ईज ऑफ डूईंग बिजनेस) सुनिश्चित करे। इसके लिए सरकार विभिन्न प्रकार के प्रयास भी कर रही है। यूपीआई इसमें काफी मदद कर रहा है। देश में सडक़ों के जाल, रेल सुविधा में बेहतरी और सरकार की नई योजनाएं, जैसे कॉरिडोर इत्यादि ने न केवल व्यवसाय को सुगम किया है, बल्कि उससे लॉजिस्टिक लागत में भी भारी कमी आ रही है।

कहीं सरकार अमरीका के दबाव में तो यह नहीं कर रही? : गौरतलब है कि हाल ही में संयुक्त राज्य अमरीका व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में भारत में यूपीआई लेन-देन के निःशुल्क होने पर आपत्ति दर्ज की गई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि शून्य एमडीआर नीति, रूपे कार्ड का प्रमोशन, रूपे क्रेडिट कार्ड को यूपीआई के साथ लिंक करने, डाटा स्थानीयकरण नियम और एनपीसीआई द्वारा यूपीआई एप्लिकेशन कंपनियों पर 30 प्रतिशत बाजार भागीदारी की शर्त आदि अमरीकी कंपनियों के व्यवसाय के लिए बाधाएं डाल रहे हैं।

आप का नज़रिया

बीमार हैं स्कूल

देश के सरकारी स्कूलों की बदहाली किसी से छिपी नहीं है। जिस देश में एक लाख स्कूल एक ही शिक्षक के भरोसे चल रहे हों, मूलभूत शैक्षिक सुविधाओं का अभाव हो, वहां पढ़ाई का स्तर क्या होगा, अंदाज लगाना कठिन नहीं है। कुछ स्कूल जर्जर इमारतों में चल रहे हैं, कुछ पेड़ तले व बरामदों में- तो सवाल स्वाभाविक है कि सुधार क्यों नहीं होता? आखिर इन स्कूलों का सुधार हमारे नीति-नियंताओं की प्राथमिकताओं में क्यों नहीं होता? जिस शिक्षा विभाग में अधिकारियों व कर्मचारियों की पूरी फौज तैनात है, उसकी जवाबदेही तय क्यों नहीं होती? अब भले ही सरकारी स्कूलों को सीजेपी ने अपना मुद्दा बना लिया हो, लेकिन इससे पहले ही देश के कई भागों में छात्र स्कूलों में सुधार की मांग को लेकर सड़कों पर उतरे हैं। विडंबना यह है कि इन स्कूलों पर ग्रामीण, समाज के वंचित वर्गों, श्रमिकों व गरीब बच्चों की निर्भरता अधिक होती है, फलतः उनकी आवाज भी अनसुनी कर दी जाती है। यदि नेताओं और अधिकारियों के बच्चों के लिये सरकारी स्कूलों में भर्ती अनिवार्य कर दी जाती तो शायद इन स्कूलों के दिन फिर जाते। सरकारी स्कूलों का सच किसी से छिपा नहीं है। नीति आयोग के हालिया आंकड़े इस सच को अनावृत करते हैं। आयोग के आंकड़ों के मुताबिक पिछले एक दशक में पूरे देश में 94 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए हैं। साथ ही इसी अवधि में सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूल भी 83 हजार से घटकर 79 हजार रह गये हैं। स्कूलों में छात्रों के दाखिले में कमी का सिलसिला भी बदस्तूर जारी है। लेकिन वहीं दूसरी ओर मुनाफा कमा रहे निजी स्कूलों का कुनबा लगातार बढ़ ही रहा है। उनकी संख्या अब 2.9 लाख से बढ़कर 3.4 लाख के करीब हो गई है। यह एक हकीकत है कि सरकारी स्कूलों की स्थिति को लेकर राजनीतिक दलों की जो फिक्र सामने आ रही है, उसके निहितार्थ समझना कठिन नहीं है। इन दलों की सरकारों के दौरान भी इन स्कूलों की दिशा-दशा में कोई बड़ा बदलाव नजर नहीं आया। चिंता इस बात को लेकर है कि इस मुद्दे पर जो राजनीति हो रही है, कहीं उसके चलते सुधार के विमर्श पर आंच न आए। सही मायने में सरकारी स्कूलों का कायाकल्प होना चाहिए। इसमें शासन, प्रशासन, पक्ष-विपक्ष और नागरिकों की भी अहम भूमिका होनी चाहिए। नीति-नियंताओं को सोचना चाहिए कि अभिभावकों से मोटी फीस लेने वाले निजी स्कूल क्यों फल-फूल रहे हैं? सरकारी स्कूलों के पास भवन हैं, पर्याप्त जगह है, सम्मानजनक पगार वाले शिक्षक हैं और सरकारी तंत्र का समर्थन है, तो ये स्कूल पनप क्यों नहीं रहे हैं? क्यों सरकारी स्कूलों में पानी, बिजली, बेंच, टेबल व शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जा रही हैं? बल्कि सुधारों के बजाय शिक्षकों की नियुक्ति में राजनेताओं की धांधली की खबरें अकसर मीडिया में तैरती रहती हैं। विडंबना देखिये कि पढ़ाई-लिखाई के लिये अनुकूल वातावरण की मांग को लेकर राजस्थान व उत्तर प्रदेश के कई शहरों में विद्यार्थी सड़कों पर उतरे हैं। इन बच्चों को अपने भविष्य की फिक्र थी और ये स्कूलों में गुणवत्ता का शैक्षिक वातावरण मांग रहे थे। निश्चित रूप से हमारे नीति-नियंताओं ने सरकारी स्कूलों का उद्धार करने के लिये कभी कोई बड़ा अभियान नहीं चलाया। अब जब मुद्दा तूल पकड़ रहा है तो तमाम घोषणाएं की जा रही हैं। सही मायने में प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के भविष्य की बुनियाद होती है। जब इन स्कूलों में बीमार भविष्य वाले नागरिक तैयार करेंगे तो देश का भला कैसे होगा? दरअसल, सरकारी स्कूल हमारे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का पर्याय हैं। जो लोग अपने बच्चों को महंगे सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ा सकते हैं, वे ही अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने के लिये मजबूर हैं।

देश में एक लाख स्कूल एक ही शिक्षक के भरोसे चल रहे हों, मूलभूत शैक्षिक सुविधाओं का अभाव हो, वहां पढ़ाई का स्तर क्या होगा, अंदाज लगाना कठिन नहीं है। कुछ स्कूल जर्जर इमारतों में चल रहे हैं, कुछ पेड़ तले व बरामदों में- तो सवाल स्वाभाविक है कि सुधार क्यों नहीं होता? आखिर इन स्कूलों का सुधार हमारे नीति-नियंताओं की प्राथमिकताओं में क्यों नहीं होता? जिस शिक्षा विभाग में अधिकारियों व कर्मचारियों की पूरी फौज तैनात है, उसकी जवाबदेही तय क्यों नहीं होती? अब भले ही सरकारी स्कूलों को सीजेपी ने अपना मुद्दा बना लिया हो, लेकिन इससे पहले ही देश के कई भागों में छात्र स्कूलों में सुधार की मांग को लेकर सड़कों पर उतरे हैं। विडंबना यह है कि इन स्कूलों पर ग्रामीण, समाज के वंचित वर्गों, श्रमिकों व गरीब बच्चों की निर्भरता अधिक होती है, फलतः उनकी आवाज भी अनसुनी कर दी जाती है। यदि नेताओं और अधिकारियों के बच्चों के लिये सरकारी स्कूलों में भर्ती अनिवार्य कर दी जाती तो शायद इन स्कूलों के दिन फिर जाते। सरकारी स्कूलों का सच किसी से छिपा नहीं है। नीति आयोग के हालिया आंकड़े इस सच को अनावृत करते हैं। आयोग के आंकड़ों के मुताबिक पिछले एक दशक में पूरे देश में 94 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए हैं। साथ ही इसी अवधि में सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूल भी 83 हजार से घटकर 79 हजार रह गये हैं। स्कूलों में छात्रों के दाखिले में कमी का सिलसिला भी बदस्तूर जारी है। लेकिन वहीं दूसरी ओर मुनाफा कमा रहे निजी स्कूलों का कुनबा लगातार बढ़ ही रहा है। उनकी संख्या अब 2 .9 लाख से बढ़कर 3 .4 लाख के करीब हो गई है।

दृष्टि कोण

लापरवाही और भ्रष्टाचार पर अंकुश जरूरी

आज सबसे बड़ा सवाल है कि जलभराव के बाद राहत क्यों, संकट आने से पहले तैयारी क्यों नहीं? अधिकांश शहरी जलभराव अचानक पैदा होने वाली समस्या नहीं है। जिन स्थानों पर हर वर्ष पानी भरता है, उनकी पहचान प्रशासन और नगर निकायों को पहले से होती है। यह भी पता होता है कि किस सड़क पर पानी जमा होता है, किस नाले की क्षमता कम है और कहां प्राकृतिक जल निकासी बाधित है। फिर भी हमारा जोर अक्सर पानी भरने के बाद राहत देने पर रहता है, पानी भरने से पहले समस्या रोकने पर नहीं। इस वर्ष असम में बाढ़ से सैकड़ों लोगों की मौत हुई। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि सैकड़ों परिवारों का दुख है। असम में ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के कारण हर वर्ष बाढ़ का खतरा रहता है। केवल भारी बारिश को जिम्मेदार बताकर हम अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। बाढ़ क्षेत्र पर बढ़ता दबाव, प्राकृतिक जल क्षेत्रों का नुकसान, अनियोजित निर्माण और कमजोर पूर्व चेतावनी व्यवस्था आपदा को अधिक विनाशकारी बना सकती है। हरियाणा की आर्थिक शक्ति गुरुग्राम और देश के प्रमुख कारोबारी केंद्रों में शामिल इस शहर में लाखों लोग काम करते हैं। लेकिन मानसून आते ही कई बार इसकी तस्वीर बदल जाती है। भारी बारिश के बाद सड़कें पानी में डूबती हैं, वाहन घंटों फंसते हैं, सार्वजनिक परिवहन प्रभावित होता है और लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी रुक जाती है। हर वर्ष नालों की सफाई, पंपों की व्यवस्था और जल निकासी के इंतजाम किए जाते हैं। फिर अगले मानसून में वही स्थान दोबारा पानी में दिखाई देते हैं। पानी भरने के बाद पंप लगाना जरूरी है, लेकिन पंप स्थायी समाधान नहीं है। जलभराव के बाद यातायात नियंत्रित करना जरूरी है, लेकिन उससे बेहतर है कि यातायात प्रभावित ही न हो। पानी निकालना जरूरी है, लेकिन उससे अधिक जरूरी है कि पानी जमा ही न हो। गुरुग्राम की समस्या को केवल अत्यधिक बारिश कहकर समझना अधूरा होगा। तेजी से बढ़ते निर्माण ने जमीन की पानी सोखने की क्षमता कम कर दी है। जहां कभी खाली जमीन, तालाब, हरित क्षेत्र और प्राकृतिक जल मार्ग थे, वहां सड़कें और इमारतें खड़ी हो गई हैं। बारिश का पानी जमीन में जाने के बजाय तेजी से बहता है और पर्याप्त निकासी न मिलने पर सड़कें जलाशय बन जाती हैं। इस समस्या से दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद, जयपुर और देश के अनेक शहर हर वर्ष सामना करते हैं। हमने शहरों का विस्तार तो कर दिया, लेकिन पानी के लिए जगह नहीं छोड़ी। तालाब, झील और प्राकृतिक जल क्षेत्र खाली जमीन नहीं, बल्कि शहरों की प्राकृतिक बाढ़ नियंत्रण व्यवस्था हैं। सवाल है कि क्या हर बार की बाढ़ व जलभराव समस्या हमारी व्यवस्था की लापरवाही या भ्रष्टाचार है? जहां हर वर्ष नालों की सफाई के नाम पर पैसा खर्च होता है, लेकिन अगली बारिश में वही नाले फिर जाम मिलते हैं। जल निकासी की परियोजनाएं बार-बार बनती हैं, लेकिन जलभराव खत्म नहीं होता, वहां काम की गुणवत्ता और खर्च की निष्पक्ष जांच क्यों नहीं होनी चाहिए? अगर किसी अधिकारी, ठेकेदार या एजेंसी की लापरवाही से सार्वजनिक धन खर्च होने के बावजूद समस्या बनी रहती है, तो जवाबदेही किसकी होगी? भ्रष्टाचार और लापरवाही पर सख्त कार्रवाई जरूरी है। निर्माण कार्यों में पारदर्शिता, स्वतंत्र गुणवत्ता जांच और प्राकृतिक जल मार्गों पर अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। प्रत्येक बड़े शहर का वैज्ञानिक बाढ़ जोखिम मानचित्र तैयार होना चाहिए, ताकि यह स्पष्ट रहे कि अत्यधिक बारिश में पानी किस दिशा में जाएगा। मानसून से पहले नालों की सफाई भी औपचारिकता नहीं होनी चाहिए।

एशियाई खेलों में अपने पदकों का सूखा दूर करने उतरेगी मीराबाई चानू

नई दिल्ली

भारत की अनुभवी भारोत्तोलक मीराबाई चानू का लक्ष्य जापान के आइची-नागोया, जापान में होने वाले आगामी एशियाई खेलों में पदक जीतना है। एशियाई खेल 19 सितंबर से 4 अक्टूबर तक खेले जाएंगे और चानू को इसमें पांच सदस्यीय भारतीय भारोत्तोलन टीम में उन्हें शामिल किया गया है और वह इन खेलों मे पदक की प्रबल दावेदार के तौर पर उतरेंगी।

चानू अब तक एक भी बार एशियाई खेलों में पदक नहीं जीत पायी हैं हालांकि उनक पास ओलंपिक पदक है। गौरतलब है कि महिलाओं के 49 किलोग्राम वर्ग में प्रतिस्पर्धा करने वाली चानू ने अपने करियर में ओलंपिक से लेकर राष्ट्रमंडल खेलों में कई स्वर्ण पदक जीते हैं पर हैरानी की बात है कि वह एशियाई खेलों में एक भी पदक नहीं जीत पायी हैं।

साल 2023 हांगझोऊ एशियाई खेलों में पदक के बेहद करीब थीं पर उन्हें अंत में चौथे स्थान से संतोष करना पड़ा था। मीराबाई ने इस लक्ष्य के महत्व पर जोर देते हुए कहा है, एशियाई खेलों का पदक मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा।

मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगी क्योंकि मुझे वहां जीतना है जहां मैंने पहले कभी पदक नहीं जीता है। इसलिए, एशियाई खेल मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। आइची-नागोया में पदक जीतने से मीराबाई चानू का तीन बड़े खेल आयोजनों ओलंपिक, एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल में पदकों का संग्रह पूरा हो जाएगा, जो उन्हें इस खेल के दिग्गजों के क्लब में पहुंचा देगा।

वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता 22 से 28 सितंबर तक टोकाई सिटिजन्स जिम्नेजियम में होगी, भारतीय टीम में चार महिलाएं और एक पुरुष भरोत्तोलक शामिल हैं। इस टीम की खासियत यह है कि पांच में से चार सदस्यों ने हाल ही में ग्लासगो में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीते थे, जो उनकी वर्तमान फार्म और क्षमता को दर्शाता है।

मीराबाई के अलावा, टीम में महिलाओं के 53 किलोग्राम वर्ग में ज्ञानेश्वरी यादव और 69 किलोग्राम वर्ग में हरजिंदर कौर शामिल हैं, दोनों ने पिछले महीने राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता था। सेराम निरुपमा देवी 61 किलोग्राम कैटेगरी में महिला टीम को पूरा करती हैं।

वहीं पुरुषों में, ऋषिकांत सिंह चनमबम एशियाई खेलों में भारत के एकमात्र प्रतिनिधि होंगे। उन्होंने पिछले महीने राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता था और वे 60 किलोग्राम वर्ग में हिस्सा लेंगे। इन सभी खिलाड़ियों का लक्ष्य अपनी उत्कृष्ट प्रदर्शन से देश के लिए गौरव अर्जित करना होगा।

न्यूज ब्रीफ

डीपीएलः साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज ने नई दिल्ली टाइगर्स को पांच विकेट से हराया

नई दिल्ली। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज ने दिल्ली प्रीमियर लीग 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए सोमवार रात नई दिल्ली टाइगर्स को पांच विकेट से हरा दिया। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज ने 169 रन के लक्ष्य को 18वें ओवर में ही हासिल कर लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए नई दिल्ली टाइगर्स ने 20 ओवर में नौ विकेट पर 168 रन बनाए। लक्ष्य थरेजा ने 47 गेंदों पर 62 रन की शानदार पारी खेलकर टीम की पारी को संभाला। आखिरी ओवरों में नमन तिवारी ने दो गेंदों पर 10 रन और रेवान रक्यान ने छह गेंदों पर 17 रन बनाकर टीम को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज की ओर से अंकित डबास ने चार ओवर में 16 रन देकर दो विकेट लिए। वहीं दिवांश रावत ने दो ओवर में 25 रन खर्च करने के बावजूद चार विकेट झटककर प्रभावी प्रदर्शन किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज ने अच्छी शुरुआत की। अनमोल शर्मा ने शानदार फार्म जारी रखते हुए एक और अर्धशतक लगाया और टीम को मजबूत आधार दिया। वह 16वें ओवर में आउट हुए, लेकिन दूसरे छोर पर एकांश डोबाल ने पारी को संभाले रखा। इसके बाद अंकित ने 18वें ओवर में पार्थ की गेंदों पर लगातार तीन छक्के लगाकर मुकाबले का रुख पूरी तरह साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज के पक्ष में कर दिया। वह पांच गेंदों पर 18 रन बनाकर आउट हुए। एकांश 18 गेंदों पर 38 रन बनाकर नाबाद रहे। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्ज ने 18वें ओवर में लक्ष्य हासिल कर पांच विकेट से शानदार जीत दर्ज की।

जोआओ फोंसेका पेट की चोट के कारण अमेरिकी ओपन से बाहर

न्यूयार्क। ब्राजील के युवा टेनिस खिलाड़ी जोआओ फोंसेका पेट की चोट के कारण अमेरिकी ओपन 2026 से बाहर हो गए हैं। दुनिया के 26वें नंबर के खिलाड़ी ने सोमवार को सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इसकी जानकारी दी। 20 वर्षीय फोंसेका इस साल शानदार प्रदर्शन के बाद अमेरिकी ओपन में खिताब के दावेदारों में शामिल थे। उन्होंने फ्रेंच ओपन में शानदार प्रदर्शन करते हुए क्वार्टर फाइनल तक का सफर तय किया था, जहां उन्होंने दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच को भी हराया था। फोंसेका ने कहा कि पेट की चोट को लेकर जांच और उपचार शुरू होने के बाद उन्हें और उनकी टीम को लगा कि पूरी तरह फिट होने के लिए उन्हें अभी और समय की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी ओपन उनके लिए बेहद खास टूर्नामेंट है और इससे हटने का फैसला आसान नहीं था। फोंसेका ने कहा कि वह जल्द से जल्द वापसी करने के लिए कड़ी मेहनत जारी रखेंगे। फोंसेका अमेरिकी ओपन से हटने वाले प्रमुख पुरुष खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए हैं। इससे पहले जैनिक सिनर, होल्गर रूने और जैक ड्रेपर भी चोटों के कारण टूर्नामेंट से अपना नाम वापस ले चुके हैं।

भुवनेश्वर ने यूपीटी20 लीग में सबसे अधिक डाट बाल्स खेलने का रिकार्ड बनाया

लखनऊ। पिछले काफी समय से भारतीय टीम से बाहर चल रहे तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार आजकल यूपीटी20 लीग में खेल रहे हैं। इसी दौरान भुवनेश्वर ने 400 डाट बाल्स फेंकने का एक नया विश्व रिकार्ड बनाया है। अपनी स्विंग गेंदबाजी के कारण चर्चाओं में रहे भुवनेश्वर ने यूपीटी20 लीग में साबित किया है कि अब भी उनकी गेंदबाजी की धार कायम है। डाट बाल्स उन गेंदों को कहा जाता है जिनपर कोई रन नहीं बनता। लखनऊ फाल्कन्स की कप्तानी करते हुए भुवनेश्वर ने इस टूर्नामेंट के इतिहास में 400 डाट बाल्स की थीं। उन्होंने यह उपलब्धि सत्र के अपने पांचवें मैच में हासिल की। यूपीटी20 लीग के चार सत्र में अब तक 35 मैचों में 124 ओवर गेंदबाजी करते हुए उनके नाम कुल 408 डाट बाल्स हैं। वहीं आंकड़ों पर ध्यान दें तो भुवनेश्वर ने इस टूर्नामेंट में हर ओवर में 3 से अधिक डाट गेंदें फेंकी हैं। भुवनेश्वर इस प्रकार इस सत्र में छाये हुए हैं। उन्होंने 9 मैचों में 118 डाट गेंदें फेंकीं हैं जबकि दूसरे सत्र के 11 मैचों में 120 डाट गेंदें फेंकी। तीसरे सत्र में भी उनकी कफी गेंदों पर रन नहीं बने। उन्होंने 10 मैचों में 117 डाट बाल्स दर्ज कीं। इस चौथे सत्र में भी, उन्होंनरे पांच मैचों में ही अब तक 53 डाट गेंदें फेंकी हैं। गौरतलब है कि टी20 क्रिकेट में डाट बाल्स से विरोधी बल्लेबाजी पर दबाव पड़ता है अेर वह बड़े शाट लगाने के जरुरत से ज्यादा जोखिम भी लेने लगता है।

8 विकेट गिरे, फॉलोऑन का खतरा मंडराया; बारिश ने श्रीलंका को बचाया, भारत की पकड़ मजबूत

कोलंबो। भारत और श्रीलंका के बीच खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक श्रीलंकाई टीम ने अपनी पहली पारी में 83.4 ओवर में 8 विकेट खोकर 265 रन बना लिए हैं। भारतीय टीम द्वारा बनाए गए 503 रन के विशाल स्कोर के जवाब में मेजबान टीम अभी भी 238 रन पीछे है और उस पर फॉलोऑन का खतरा मंडरा रहा है। हालांकि, दिन के अंत में बारिश के कारण खेल रुकने से श्रीलंकाई टीम को राहत मिली। भारत ने मैच पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली है।

श्रीलंका को लगातार लगे झटके

दिन की शुरुआत श्रीलंका के लिए काफी खराब रही। 8 रन पर 2 विकेट से आगे खेलने उतरी मेजबान टीम को शुरुआती सत्र में लगातार झटके लगे। कामिल मिशारा 19 रन बनाकर प्रसिद्ध कृष्णा का शिकार बने, जबकि कप्तान धनंजय डी सिल्वा भी महज 8 रन बनाकर सस्ते में पवेलियन लौट गए। कामिंडु मेंडिस ने 32 रन का योगदान दिया, लेकिन वे भी अपनी पारी को बड़े स्कोर में तब्दील नहीं कर सके। निरोशन डिकवेला बिना खाता खोले आउट हो गए।

पासिंदु ने खेली 80 रन की जुझारू पारी

शुरुआती झटकों के बाद पासिंदु सूरियाबंदरा और कामिंडु मेंडिस ने श्रीलंकाई पारी को संभालने की जिम्मेदारी उठाई। सूरियाबंदरा ने 133 गेंदों में 9 चौकों की मदद से 80 रन की बेहद जुझारू पारी खेली। उनकी पारी का अंत रविंद्र जडेजा ने बोल्ड करके किया।

दूसरे छोर पर सोनाल दिनुषा ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 137 गेंदों में 6 चौकों और 2 छक्कों की मदद से 85 रन बना लिए हैं और दिन का खेल खत्म होने तक क्रीज पर डटे हुए हैं।

भारतीय गेंदबाजों का कमाल

भारतीय गेंदबाजों ने पूरे दिन अनुशासित गेंदबाजी का प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका पर लगातार दबाव बनाए रखा। तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा ने 14 ओवर में 47 रन देकर 3 अहम विकेट हासिल किए। स्पिनर मानव सुथार ने भी 21 ओवर में 83 रन खर्च करके 3 विकेट चटकाए।

इसके अलावा मोहम्मद सिराज और रविंद्र जडेजा को 1-1 सफलता मिली। सरांश जैन किफायती गेंदबाजी करने के बावजूद विकेट हासिल नहीं कर सके।

दिनुषा शतक के करीब

तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक सोनाल दिनुषा 85 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं और उनके साथ लाहिरु कुमारा 8 रन बनाकर खेल रहे हैं। भारतीय टीम चौथे दिन सुबह श्रीलंका के बाकी बचे दो विकेट जल्दी निकालकर बड़ी बढ़त हासिल करने और मैच पर पूरी तरह शिकंजा कसने के इरादे से मैदान पर उतरेगी।

रविंद्र जडेजा ने चकनाचूर किया सूरियाबंदरा का शतक का सपना

दिन के खेल के दौरान श्रीलंका के युवा बल्लेबाज पासिंदु सूरियाबंदरा अपने पदार्पण मैच की ही दूसरी पारी में यादगार शतक बनाने की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन रविंद्र जडेजा ने अपनी जादुई फिरकी से उन्हें आउट कर उनके सपने को चकनाचूर कर दिया। पासिंदु 80 रन बनाकर बोल्ड हो गए।

जडेजा की फिरकी के जाल में ऐसे फंसे सूरियाबंदरा

गॉल टेस्ट में दिनेश चांदीमल के कनकशन विकल्प के रूप में अपना टेस्ट पदार्पण करने वाले और अपनी पहली पारी में बिना खाता खोले आउट होने वाले पासिंदु सूरियाबंदरा ने कोलंबो में जबरदस्त वापसी की। एक तरफ जहां श्रीलंकाई शीर्ष क्रम लड़खड़ा गया था, वहीं पासिंदु ने 80 रन की बेहद जुझारू और आक्रामक पारी खेली।

हालांकि, जब वे शतक के करीब पहुंच रहे थे, तभी रविंद्र जडेजा की एक बेहतरीन स्पिन गेंद उनके बल्ले का अंदरूनी किनारा लेकर जांघ के पैड से टकराई और सीधे स्टंप्स में जा घुसी। इस तरह 80 रन के निजी स्कोर पर उनका यादगार शतक बनाने का सपना टूट गया।

प्रसिद्ध कृष्णा की घातक गेंदबाजी और पासिंदु-कामिंडु की साझेदारी

तीसरे दिन की शुरुआत में तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा ने भारत को शुरुआती सफलता दिलाई। उन्होंने कामिल मिशारा को ध्रुव जुरेल के हाथों कैच आउट कराकर श्रीलंका का तीसरा विकेट 35 रन पर गिरा दिया।

इसके बाद पासिंदु सूरियाबंदरा और कामिंडु मेंडिस ने भारतीय गेंदबाजों के खिलाफ डटकर आक्रामक रुख अपनाया और चौथे विकेट के लिए 87 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की। हालांकि, भोजनावकाश से ठीक पहले प्रसिद्ध कृष्णा ने कामिंडु को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ दिया।

श्रीलंका पर मंडराया फॉलोऑन का भारी खतरा

भोजनावकाश के बाद भारतीय गेंदबाजों, विशेष रूप से रविंद्र जडेजा और प्रसिद्ध कृष्णा ने लगातार दबाव बनाए रखा। पासिंदु के 80 रन पर आउट होने के साथ ही श्रीलंकाई मध्यक्रम ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगा।

भारत के पहली पारी के 503 रन के विशाल स्कोर के जवाब में श्रीलंकाई टीम 200 रन के आंकड़े तक पहुंचने से पहले ही अपने 7 विकेट गंवाकर बेहद खराब स्थिति में पहुंच चुकी थी। इसके बाद आठवां विकेट भी गिर गया और श्रीलंका की मुश्किलें और बढ़ गईं।अब मेजबान टीम पर फॉलोऑन का भारी खतरा मंडरा रहा है। हालांकि, बारिश के कारण खेल रुकने से श्रीलंकाई टीम को कुछ राहत जरूर मिली। भारतीय टीम चौथे दिन शेष दो विकेट जल्दी निकालकर श्रीलंका को बड़ी बढ़त लेने से रोकने और मैच पर अपनी पकड़ और मजबूत करने के इरादे से मैदान पर उतरेगी।

भारत के सामने बड़ी बढ़त का मौका

तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक श्रीलंका 265 रन पर 8 विकेट गंवा चुका है और भारत से 238 रन पीछे है। सोनाल दिनुषा 85 रन पर नाबाद हैं और श्रीलंका की आखिरी उम्मीद बने हुए हैं। यदि भारतीय गेंदबाज चौथे दिन शुरुआती दौर में दोनों विकेट निकाल लेते हैं तो भारत को पहली पारी में बड़ी बढ़त मिल सकती है और मैच का रुख पूरी तरह उसके पक्ष में जा सकता है।

भारतीय पुरुष हाकी टीम विश्वकप से बाहर हुई

एम्सटलवीन। भारतीय पुरुष हाकी टीम अर्जेंटीना के हाथों दूसरे चरण के मुकबले में 3-5 से मिली हार के साथ ही एफआईएच हाकी विश्वकप से बाहर हो गयी है। भारतीय टीम को सेमीफाइनल में जगह बनाने इस मुकाबले में जीत की जरुरत थी पर वह असफल रही। इससे पहले भारतीय महिला टीम भी विश्वकप से बाहर हो गयी थी। के बाद भारतीय पुरुष हाकी टीम का भी वर्ल्ड कप 2026 में सफर खत्म हो गया. अर्जेंटीना ने वागेनर स्टेडियम में खेले गए पूल-ई के इस मुकाबले में शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाते हुए पहले ही क्वार्टर में दो गोल दाग कर मुकाबले में अच्छी खासी बढ़त हासि कर ली थी। इससे भारतीय टीम दबाव में आ गयी। भारतीय टीम ने हालांकि शुरुआती झटकों से उबरकर वापसी के प्रयास किये पर वह सफल नहीं हो पायी। अर्जेंटीना की रक्षापंक्ति को भेदना उसके लिए परेशानी का कारण बना रहा। वहीं इसी समय उसे विरोधी टीम के आक्रमण का भी सामना करना पड़ा। इस हार के साथ ही भारतीय टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदें भी समापत हो गईं।

दक्षिण अफ्रीकी टीम को झटका, आलराउंडर जेसन स्मिथ त्रिकोणीय सीरीज में नहीं खेलेंगे

जोहांसबर्ग

दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट टीम को इसी माह 28 अगस्त से नामीबिया और जिम्बाब्वे के खिलाफ शुरु होने जा रही त्रिकोणीय सीरीज में आलराउंडर जेसन स्मिथ के बिना ही उतरना होगा। स्मिथ चोटिल होने के कारण इस सीरीज से बाहर हैं। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) के अनुसार स्मिथ के जांघ की मांसपेशियों में खिंचाव आया है। सीएसए ने माना है कि इस आलराउंडर का नहीं खेलना टीम के लिए बड़ा झटका है। टीम प्रबंधन ने अभी तक स्मिथ के विकल्प की घोषणा नहीं की है। इससे साफ है कि उससे मौजूदा दल पर ही भरोसा जताया है।

सीएसए ने कहा, आलराउंडर जेसन स्मिथ दाहिनी जांघ की मांसपेशी खिंचाव के कारण विंडहोक में नामीबिया और जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाली ट्राई-सीरीज से बाहर हो गए हैं। स्मिथ की चोट की गंभीरता का आकलन करने के लिए उनकी और जांच की जाएगी, विशेष रूप से नामीबिया के खिलाफ 09 सितंबर से शुरू होने वाली एकदिवसीय सीरीज में उनकी उपलब्धता सुनिश्चित किये जाने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं।

यह ट्राई-सीरीज 28 अगस्त से 6 सितंबर तक विंडहोक में खेली जाएगी, जिसमें बाएं हाथ के स्पिनर ब्योर्न फोर्टुइन अफ्रीकी टीम की कप्तानी करेंगे। इस ट्राई-सीरीज के बाद, दक्षिण अफ्रीका 9 से 13 सितंबर तक नामीबिया के खिलाफ एकदिवीसीय मैच खेलेगा। यह प्रतियोगिता दक्षिण अफ्रीका के लिए इस साल की शुरुआत में हुए पुरुष टी20 विश्व कप के बाद पहली टी20 सीरीज होगी।

टीम में कई प्रमुख नियमित खिलाड़ियों को आराम दिया गया है, जिससे टीम युवा खिलाड़ियों से भरी है। इस बार ईथन बाश, डुआन जानसेन जैसे उभरते हुए खिलाड़ियों को पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने का अवसर मिलेगा। इनके अलावा, डेवाल्ड ब्रेविस, टोनी डी जोरजी और क्वेना मफाका जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी, जो पहले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल चुके हैं या अपनी घरेलू लीगों में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं, टीम के साथ नामीबिया का दौरा करेंगे। यह सीरीज इन खिलाड़ियों के लिए भी अपनी जगह पक्की करने और अनुभव हासिल करने का सुनहरा मौका है।

टीम इस प्रकार है :

ब्योर्न फोर्टुइन, ईथन बाश, डेवाल्ड ब्रेविस, टोनी डी ज़ोरज़ी, कानर एस्टरहुइज़ेन, जार्डन हरमन, रुबिन हरमन, डुआन जानसेन, क्वेना मफाका, मोकोएना, न्काबा पीटर, लुआन-ड्रे प्रेटोरियस, लुथो सिपाम्ला और प्रेनेलन सुब्रायेन।

सूर्यकुमार ने अब भी नहीं छोड़ी टीम इंडिया में वापसी की उम्मीदें, नेट्स में जमकर अभ्यास कर रहे

मुम्बई

टी20 विश्वकप में भारतीय क्रिकेट टीम को जीत दिलाने वाले सूर्यकुमार यादव आजकल टीम से बाहर चल रहे हैं। सूर्यकुमार को विश्वकप के बाद कप्तानी हीं नहीं टीम से भी बाहर कर दिया गया था। इसका कारण उनका खराब फार्म और बढ़ती उम्र को बताया गया था सूर्या ने हालांकि अपनी वापसी की उम्मीदें अब भी नहीं छोड़ी हैं। सूर्या जानते हैं कि जिस प्रकार से टीम में लगातार नई प्रतिभाएं आ रही हैं उसमें उनकी वापसी आसान नहीं रहेगी।

ऐसे में उनके पास कड़े अभ्यास और अपने को साबित करने के अलावा कोई और चारा नहीं है। इसी कारण वह आजकल नेट्स में जमकर अभ्यास कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया हैंडल पर एक वीडियो भी साझा किया है। इसमें वह कड़ा अभ्यास करते दिख रहे हैं। इस वीडियो के साथ उन्होंने लिखा था अभ्यास को मैच से भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण बनाओ। जब आप

नेट्स में खुद पर अधिक दबाव डालोगे, तो खेल के दौरान शांत रहना आपकी आदत बन जाएगी। मुश्किलों का सामना करो!

सूर्यकुमार के इस अभ्यास सत्र से यह साफ है कि उन्होंने टीम में वापसी के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी है। वहीं भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) साल 2026 के टी-20 विश्व कप को देखते हुए युवा प्रतिभाओं पर ही ध्यान दे रहा है। उसका प्रयास टीम को मजबूत बनाना है। इसको देखते हुए वह एक बार फिर सूर्यकुमार को अवसर देगा, ऐसे संभावनाएं नहीं हैं।

अब देखना यह होगा कि सूर्यकुमार का कठिन अभ्यास सफल होता है या नहीं। भारतीय टीम में वापसी का उनका सफर निश्चित रूप से आसान नहीं होगा, लेकिन क्रिकेट के मैदान पर अपनी अनूठी पहचान बनाने वाले इस खिलाड़ी ने हमेशा ही चुनौतियों का पूरे साहस से सामना किया है।

यूपी टी20 लीग : रिंकू और स्वास्तिक की आक्रामक पारी से मेरठ मेवरिक्स जीती

नई दिल्ली। मेरठ मेवरिक्स के कप्तान रिंकू सिंह और स्वास्तिक चिकारा की आक्रामक बल्लेबाजी से यूपी टी20 लीग 2026 के 16वें मुकाबले में गोरखपुर लायंस की टीम को करारी हार का सामना करना पड़ा है। रिंकू ने वर्षा बाधित इस मुकाबले में 7 गेंदों पर 414.29 के स्ट्राइक रेट से 29 रनों की आक्रामक पारी खेलकर अपनी टीम को 6.4 ओवर में ही जीत दिला दी। बारिश की बाधा के कारण इस मैच को घटाकर 8-8 ओवर का किया गया था। इसमें आर्यन जुयाल की कप्तानी वाली गोरखपुर लायंस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 8 ओवरों में 91 रन बनाए थे। इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए मेरठ मेवरिक्स ने रिंकू और स्वास्तिक चिकारा की आक्रामक बल्लेबाजी से जीत दर्ज की। मेरठ को अंतिम तीन ओवरों में 36 रनों की आवश्यकता थी, तब अक्षय दुबे के रिटायर्ड हर्ट होकर मैदान से बाहर जाने के बाद कप्तान रिंकू ने कमान संभाली। उन्होंने आते ही तीन छक्के व दो चौके लगाकरकुल 28 रन बनाये। इस प्रकार उन्होंने केवल 7 गेंदों का सामना करते हुए 29 रन बनाए, जिसमें 2 चौके और 3 इ छक्के शामिल थे। वहीं दूसरे छोर पर चिकारा ने 24 गेंदों में नाबाद 44 रनों की अहम पारी खेली और रिंकू के साथ मिलकर टीम को बिना कोई विकेट खोये जीत दिला दी। वहीं इससे पहले, गोरखपुर लायंस ने बल्लेबाजी करते हुए 8 ओवर में 91 रन बनाए। एक समय ऐसा लग रहा था कि गोरखपुर की टीम 100 रनों का आंकड़ा पार कर सकती है पर मेरठ के गेंदबाज जीशान अंसारी ने गोरखपुर की लय को तोड़ दिया। छठे ओवर में उन्होंने आर्यन जुयाल और हरदीप सिंह को आउट कर दोहरा झटका दिया।

पितृपक्ष के अवसर पर श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 1 अक्टूबर से

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। राजस्थानी जागृति समिति, हैदराबाद के तत्वावधान में पितृपक्ष माह के अवसर पर सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक किया जाएगा। कथा का आयोजन प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक साई बाबा मंदिर प्रांगण, एन.एम. गुड़ा चौराहा, अतापुर, हैदराबाद में होगा।

समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमानी एवं कोषाध्यक्ष संजय राठी की ओर से जारी संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई।

समिति के कोषाध्यक्ष संजय राठी ने बताया कि वृंदावन धाम की 13 वर्षीय बाल विदुषी सुश्री प्रिया किशोरी अपनी अमृतमयी वाणी से श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत कथा का रसपान कराएंगी।

उन्होंने समाज के धार्मिक आस्था रखने वाले बंधुओं से आग्रह किया कि पितृपक्ष के पावन अवसर पर अपने पितरों की स्मृति एवं निमित्त आयोजित इस कथा में मुख्य यजमान, सह-मुख्य यजमान अथवा दैनिक यजमान के रूप में अपना नाम समिति अध्यक्ष के पास लिखवाकर पुण्य के सहभागी बनें। समिति की ओर से समाज के श्रद्धालुओं

से अपील की गई है कि वे पितृपक्ष के अवसर पर अपने पितरों के निमित्त आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में तन, मन और धन से सहयोग करें।

कथा में सम्मिलित होने वाले श्रद्धालु अपने पितरों की फोटो भी ला सकेंगे। मूल पाठ एवं संबंधित धार्मिक विधियों के लिए पंडित की व्यवस्था समिति की ओर से की जाएगी।

समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमानी ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा को भव्य एवं सफल बनाने के लिए समाज के सभी वर्गों का सहयोग आवश्यक है। उन्होंने धार्मिक आस्था रखने वाले बंधुओं से कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया।

उन्होंने बताया कि प्रतिदिन कथा श्रवण करने आने वाले श्रद्धालुओं के लिए संध्या आरती के पश्चात भोजन प्रसादी की व्यवस्था भी की जाएगी।

राजस्थानी जागृति समिति ने सभी सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों, संस्थाओं, महिला संगठनों, महिला संस्थाओं तथा समाज के विभिन्न घटकों से इस आयोजन में शामिल होकर सहयोग करने का आह्वान किया है।

समिति ने कहा कि सभी के सामूहिक सहयोग एवं सहभागिता से पितृपक्ष माह के अवसर पर आयोजित श्रीमद्भागवत कथा का कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न होगा।

समिति ने समाज के सभी धार्मिक आस्था रखने वाले बंधुओं से अपने परिवार, रिश्तेदारों एवं मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में कथा स्थल पर पहुंचकर श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करने और पुण्य के सहभागी बनने का आग्रह किया है।

आयोजन से संबंधित अन्य जानकारी के लिए समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमानी से संपर्क किया जा सकता है।

मंचेरियाल कांग्रेस में राजनीतिक खींचतान फिर उजागर

मंचेरियाल, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। मंचेरियाल जिले में कांग्रेस के भीतर राजनीतिक गुटबाजी और वर्चस्व की खींचतान एक बार फिर चर्चा का विषय बन गई है। राज्य मंत्री विवेक वेंकटस्वामी और विधायक प्रेमसागर राव (पीएसआर) के गुटों के बीच लंबे समय से जारी राजनीतिक मतभेद अब धीरे-धीरे खुलकर सामने आते दिखाई दे रहे हैं।

विधानसभा चुनाव के बाद दोनों नेताओं के मंत्री पद की दौड़ में होने की चर्चा थी। अंतिम समय में विवेक वेंकटस्वामी को मंत्री पद मिलने के बाद दोनों गुटों के बीच राजनीतिक दूरी बढ़ने की बात सामने आती रही है। प्रेमसागर राव की ओर से कई मौकों पर असंतोष सार्वजनिक रूप से व्यक्त किए जाने की चर्चा है, जबकि विवेक वेंकटस्वामी ने इस मुद्दे पर खुलकर प्रतिक्रिया नहीं दी है।

लोकसभा चुनाव के दौरान विवेक वेंकटस्वामी द्वारा अपने पुत्र वंशिकृष्णा को टिकट दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की चर्चा रही। सांसद बनने के बाद वंशिकृष्णा द्वारा मंचेरियाल विधानसभा क्षेत्र में सक्रियता बढ़ाए जाने से प्रेमसागर राव गुट में नाराजगी की चर्चा है। वहीं, विधायक के समर्थक रहे कुछ नेताओं के मंत्री गुट के करीब आने से दोनों पक्षों के बीच राजनीतिक खींचतान और बढ़ने की बात कही जा रही है।हाल में राज्य मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर प्रेमसागर राव के मंत्री बनने की चर्चाओं के बीच उनके पुराने मामलों को लेकर राजनीतिक बयानबाजी तेज होने की भी चर्चा है।

इससे जिले की कांग्रेस राजनीति में गुटीय समीकरणों को लेकर अटकलें बढ़ गई हैं।इसी बीच मंचेरियाल रेलवे स्टेशन के सामने पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय काका वेंकटस्वामी की प्रतिमा का अनावरण जगनमोहन राव, मंचेरियाल नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन आर. उपलैया, पूर्व पार्षद राजाजी सहित अन्य नेताओं ने किया। प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम को लेकर भी कांग्रेस के भीतर राजनीतिक चर्चा तेज हो गई।

भावसार विजन इंडिया हैदराबाद द्वारा पांच भव्य कार्यक्रम आयोजित

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। भावसार विजन इंडिया, हैदराबाद एरिया 104 की ओर से हिमायतनगर स्थित एस.एम.ई. ग्रैंड होटल में पांच शानदार कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्पीकर मीटिंग, कवि सम्मेलन, रक्षाबंधन एवं मित्रता दिवस समारोह, श्रावण मास शिव स्तुति पुस्तकों का वितरण तथा भावसार समाज के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाज भूषण श्री किशन राव गडाले का 75वां जन्मदिन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वेंकटा निवासजी ने 'समकालीन हिंदू संस्कृति के मुद्दे' विषय पर अपने विचार रखते हुए उपस्थित विजनरी सदस्यों को समसामयिक विषयों की जानकारी दी। उनका वक्तव्य ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं विचारोत्तेजक रहा।

श्री सीताराम मानेजी द्वारा प्रस्तुत कवि सम्मेलन ने कार्यक्रम में विशेष सांस्कृतिक रंग भर दिया। उपस्थित सदस्यों ने कविताओं का भरपूर आनंद लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री गोपाल बल्दवाजी की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

विशिष्ट अतिथियों में भावसार विजन इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनीष सुत्रावे, अखिल भारतीय भावसार क्षत्रिय महासभा के महासचिव एवं समाज भूषण श्री किशन राव गडाले, तेलंगाना भावसार क्षत्रिय रंगरेज समाज के अध्यक्ष श्री उमेश जैतने तथा एरिया 104 के गवर्नर श्री बाबूराव गडाले उपस्थित रहे। विशेष अतिथि श्रीमती ललिता गिते भी मौजूद रहीं। सभी अतिथियों ने अपने प्रेरणादायक संबोधनों से उपस्थित विजनरी सदस्यों का उत्साहवर्धन किया।

भारतीय मराठा महासंघ की अध्यक्ष एवं अहिल्या महिला कल्याण संस्था की संस्थापक डॉ. पूनम नोमुलवार को भावसार विजन इंडिया हैदराबाद की बैठक में उपस्थित होने पर सम्मानित किया गया।

भावसार विजन इंडिया हैदराबाद की अध्यक्षा श्रीमती अश्विनी प्रवीण पतंगे को उनके उत्कृष्ट नेतृत्व एवं प्रयासों के लिए विशिष्ट अतिथियों द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया तथा उनके कार्यों की सराहना की गई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में डिप्टी गवर्नर श्री प्रवीण पतंगे, श्री घनश्याम पतंगे एवं श्री श्रीधर गडाले का विशेष योगदान रहा। उन्होंने स्पीकर मीटिंग की व्यवस्थाओं को सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम की सफलता में श्री घनश्याम पतंगे, श्री जवाहर भरड़े, श्री दयानंद पतंगे, श्री राकेश घनाते, श्रीमती हेमारानी परंकर, श्रीमती तुलसी बगाड़े, श्रीमती ललिता सुत्रावे एवं श्रीमती अनिता पारेकर सहित सभी परामर्शदाताओं एवं सदस्यों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संचालन वर्षिनी बगाड़े एवं अश्विनी पतंगे ने किया।

श्रीमती ललिता मनीष सुत्रावे, निदेशक, महिला कल्याण ने भावसार विजन इंडिया हैदराबाद के सभी सदस्यों के लिए जन्मदिन उपहार प्रायोजित किए। वहीं श्री दयानंद पतंगे एवं श्री घनश्याम पतंगे ने सदस्यों के लिए विवाह वर्षगांठ के उपहार प्रायोजित किए।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों, सदस्यों, स्वयंसेवकों एवं विजनरी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। सभी के सहयोग से आयोजित यह संपूर्ण संध्या ज्ञान, संस्कृति, सम्मान, सेवा एवं आपसी सौहार्द से परिपूर्ण रही।

आयोजकों ने संकल्प व्यक्त किया कि भावसार विजन इंडिया, हैदराबाद निरंतर प्रगति, प्रेरणा, सेवा और सामाजिक एकता के साथ आगे बढ़ता रहे। इसी संकल्प के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

राम ते...

ऐसे में चार करोड़ रुपये के इस चेक की वास्तविक स्थिति और भुगतान तभी स्पष्ट होगा, जब बैंक की क्लियरिंग प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।

फिलहाल बैंक सूत्रों से सामने आए इस दावे की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। इसलिए यह स्पष्ट होना बाकी है कि चेक वास्तव में क्लियर होता है या नहीं और चार करोड़ रुपये की राशि का भुगतान मंदिर कर्मचारियों के लिए हो पाता है या नहीं।महिला श्रद्धालु द्वारा दिए गए संदेश में कर्मचारियों के वेतन और सुविधाओं को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया है। उनका कहना है कि मंदिर की सेवा में लगे कर्मचारियों की सुविधाओं और पारिश्रमिक में सुधार होना चाहिए।राम मंदिर में चार करोड़ रुपये के चेक के रूप में सामने आया यह दान फिलहाल चर्चा का विषय बना हुआ है। अब सबकी नजर चेक की बैंक क्लियरिंग और चार करोड़ रुपये की वास्तविक भुगतान स्थिति पर है। भुगतान की स्थिति स्पष्ट होने के बाद ही यह तय हो सकेगा कि यह राशि वास्तव में मंदिर कर्मचारियों के हित में पहुंची या नहीं।इस पूरे मामले में सबसे खास बात यह है कि श्रद्धालु ने रामलला के लिए 10 हजार रुपये की राशि समर्पित करने के साथ-साथ मंदिर की सेवा में लगे कर्मचारियों के लिए चार करोड़ रुपये की राशि देने की पहल की। इससे यह मामला केवल दान तक सीमित न रहकर मंदिर कर्मचारियों के कल्याण से भी जुड़ गया है।चार करोड़ रुपये के चेक को लेकर सामने आए दावे के बाद अब बैंक की प्रक्रिया महत्वपूर्ण हो गई है। यदि चेक क्लियर होता है तो कर्मचारियों के वेतन और सुविधाओं में सुधार के लिए इस राशि के इस्तेमाल की दिशा में आगे की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। वहीं, यदि चेक का भुगतान नहीं होता है तो पूरे मामले की वास्तविक स्थिति अलग होगी।फिलहाल चार करोड़ रुपये के चेक की बैंकिंग स्थिति स्पष्ट होने का इंतजार है। श्रद्धालु की ओर से दी गई रसीद और कर्मचारियों के हित में राशि इस्तेमाल करने की इच्छा ने इस मामले को खासा चर्चित बना दिया है।

अयोध्या में ...

बैठक प्रकाशानंद गिरि उर्फ कंप्यूटर बाबा ने बुलाई थी। इसमें जानकीघाट बड़ा स्थान के महंत जन्मेजय शरण, महामंडलेश्वर परमानंद गिरि, महंत दिलीप दास समेत करीब आठ से दस संत पहुंचे थे।

संतों का कहना है कि जब उन्होंने पुलिस से बैठक रोकने का कारण पूछा तो पुलिस की ओर से कोई स्पष्ट वजह नहीं बताई गई। उनका यह भी आरोप है कि कुछ संतों को बैठक में आने की अनुमति नहीं दी गई और उन्हें नजरबंद कर दिया गया।बैठक रोकने की घटना के बाद संतों में नाराजगी देखी गई। उन्होंने चढ़ावा चोरी के मामले की निष्पक्ष जांच और सभी जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग दोहराई।

कंप्यूटर बाबा ने कहा कि संत समाज चढ़ावा चोरी की निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर बड़ा आंदोलन करेगा। उन्होंने कहा कि जरूरत पड़ी तो एक लाख संतों के साथ अयोध्या पहुंचकर आंदोलन किया जाएगा।उन्होंने कहा कि संत रामलला के दर्शन करेंगे और भगवान श्रीराम से क्षमा मांगेंगे।

महामंडलेश्वर परमानंद गिरि ने कहा कि संत चढ़ावे की चोरी को रोक नहीं पाए, इसके लिए वे रामलला से हाथ जोड़कर माफी मांगते हैं। उन्होंने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए कहा कि दोषियों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लगाया जाना चाहिए।

विशेष जांच दल की अंतिम रिपोर्ट में चंपत राय का नाम नहीं

वहीं, राम मंदिर में चढ़ावा चोरी की जांच के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से गठित विशेष जांच दल ने अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंप दी है। सूत्रों के मुताबिक, रिपोर्ट में ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय और सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा का नाम नहीं है। मामले में नामजद अन्य आठ आरोपी पहले ही जेल में हैं।

उत्तर प्रदेश के गृह विभाग ने रिपोर्ट राम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास को सौंप दी है। इस रिपोर्ट को राम मंदिर ट्रस्ट की 2 सितंबर को होने वाली बैठक में रखा जाएगा। ट्रस्ट ने ही उत्तर प्रदेश सरकार से चढ़ावा चोरी की विशेष जांच दल से जांच कराने का अनुरोध किया था।

उत्तर प्रदेश सरकार ने 13 जून को लखनऊ के मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में तीन सदस्यों का विशेष जांच दल गठित किया था। पुलिस महानिरीक्षक रेंज किरण एस. और वित्त विभाग के विशेष सचिव नील रतन कुमार इसके सदस्य थे। विशेष जांच दल ने 23 जून को प्रारंभिक रिपोर्ट सौंपी थी।

पाई-पाई भगवान...

उन्होंने मामले से जुड़ी तस्वीरें भी प्रस्तुत कीं और कहा कि स्थिति गंभीर है तथा तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने मंदिर की प्रबंधन समिति को दान की पूरी व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अदालत ने समिति से कहा कि मंदिर में आने वाले दान की राशि का पूरा हिसाब रखा जाए और ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या हेराफेरी की गुंजाइश न रहे।

सुप्रीम कोर्ट ने सेवायतों और अन्य संबंधित लोगों को कड़ी चेतावनी भी दी। अदालत ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति दान को मंदिर के खजाने तक पहुंचने से रोकने या इस व्यवस्था में किसी प्रकार की रुकावट डालने का प्रयास करता है, तो इसे गंभीरता से लिया जाएगा।

अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि यदि मंदिर के कोष से कोई संपत्ति खरीदने का प्रस्ताव आता है तो उसकी पूरी जानकारी सुप्रीम कोर्ट को दी जाए। अदालत की अनुमति के बाद ही इस तरह का कोई लेन-देन किया जाए।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद समिति के अध्यक्ष और उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश अशोक कुमार ने कहा कि मंदिर में बेहतर और पारदर्शी व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन कुछ लोग इसमें बाधा डाल रहे हैं। उन्होंने बताया कि कुछ लोग गोलकों के सामने खड़े होकर श्रद्धालुओं से चढ़ावा लेने का प्रयास करते हैं। इतना ही नहीं, मंदिर परिसर में लगाए गए क्यूआर कोड भी खुरच दिए गए हैं।

फरवरी से अप्रैल तक 4.90 करोड़ रुपये का दान

शहीद लक्ष्मण सिंह स्मारक भवन में तीन महीने पहले उच्चस्तरीय समिति की बैठक हुई थी। इसमें मंदिर की आय, सुरक्षा और व्यवस्था सहित 29 बिंदुओं पर चर्चा की गई थी। बैठक की अध्यक्षता उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश और समिति के अध्यक्ष अशोक कुमार ने की थी।समिति की ओर से बताया गया था कि फरवरी से अप्रैल तक तीन महीने की अवधि में मंदिर की 18 गोलकों में श्रद्धालुओं ने कुल 4.90 करोड़ रुपये का दान दिया था। इसमें इंग्लैंड के 10 डॉलर, अमेरिका के 333 डॉलर, कनाडा की 115 मुद्रा, संयुक्त अरब अमीरात की 600 से अधिक मुद्रा और नेपाली मुद्रा भी शामिल थी। समिति के अनुसार सभी विदेशी मुद्राएं बैंक में जमा करा दी गई थीं।

हिजाब....

सभी तथ्यों और पूर्व न्यायिक फैसलों को ध्यान में रखते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट ने छात्रा की याचिका खारिज कर दी। इसके साथ ही स्कूल प्रबंधन को अपना निर्धारित यूनिफॉर्म कोड लागू करने की अनुमति दी गई। फैसले में अदालत ने धार्मिक स्वतंत्रता और शैक्षणिक संस्थानों के अनुशासन के बीच संतुलन पर जोर देते हुए कहा कि समान रूप से लागू होने वाली संस्थागत ड्रेस नीति में व्यक्तिगत पसंद के आधार पर बदलाव की मांग को केवल धार्मिक आस्था के दावे के आधार पर स्वीकार नहीं किया जा सकता।इलाहाबाद हाईकोर्ट का यह फैसला स्कूलों में ड्रेस कोड, धार्मिक प्रथाओं और विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अधिकारों से जुड़े मुद्दे पर महत्वपूर्ण माना जा रहा है। मामले में अदालत ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि किसी धार्मिक प्रथा को अनिवार्य साबित करने के लिए पर्याप्त धार्मिक और कानूनी आधार होना आवश्यक है।अब इस फैसले के बाद शैक्षणिक संस्थानों में यूनिफॉर्म और धार्मिक प्रतीकों के इस्तेमाल को लेकर कानूनी बहस आगे भी जारी रहने की संभावना है।

शायद ड्रोन...

ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान की ओर से तनाव बढ़ाने की कोशिश की गई। इसके जवाब में भारत ने पाकिस्तान के कई सैन्य ठिकानों और एयरबेस को निशाना बनाया। सैन्य दबाव बढ़ने के बाद पाकिस्तान ने युद्धविराम की मांग की थी।

चीनी उपग्रह तस्वीरों का भी हुआ जिक्र

जनरल अनिल चौहान ने इसी कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े एक अन्य पहलू पर भी बात की। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने भारतीय हमलों से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए चीनी उपग्रह तस्वीरों की मदद लेने की कोशिश की थी। हालांकि, उनके मुताबिक पाकिस्तान को अपने हमलों के प्रभाव का स्पष्ट प्रमाण हासिल करने में अपेक्षित सफलता नहीं मिली।ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सैन्य कार्रवाई से जुड़े कई पहलुओं पर समय-समय पर अलग-अलग दावे और स्पष्टीकरण सामने आते रहे हैं। किराना हिल्स को लेकर जनरल चौहान की ताजा टिप्पणी भी इसी क्रम में महत्वपूर्ण मानी जा रही है। फिलहाल उनके बयान से इतना स्पष्ट है कि उन्होंने किराना हिल्स को भारत की ओर से जानबूझकर निशाना बनाए जाने की पुष्टि नहीं की है, बल्कि एक संभावित दुर्घटनात्मक घटना की बात कही है।

बिकिनी...

कृति ने कहा था कि त्योहारों की असली खूबसूरती कपड़ों में नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी भावनाओं और परंपराओं में होती है। उन्होंने बताया कि रक्षा बंधन उनके और उनकी बहन के लिए एक-दूसरे की रक्षा करने और हर परिस्थिति में साथ निभाने का रिश्ता है।उन्होंने यह भी कहा कि उनका प्यार और प्रार्थना उनके पालतू कुत्तों के लिए भी है, क्योंकि वे उनके परिवार का हिस्सा हैं।इसके बाद कृति ने महिलाओं के कपड़ों को लेकर समाज की सोच पर सवाल उठाया। उन्होंने पूछा कि आखिर महिलाओं को यह बताना कब बंद किया जाएगा कि उन्हें क्या पहनना चाहिए। कृति ने अपने पोस्ट में जोर देकर कहा कि किसी महिला के सम्मान और अपनी संस्कृति के प्रति उसके लगाव को केवल उसके कपड़ों से नहीं मापा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संस्कृति और परंपराएं दिल में होती हैं, नेकलाइन में नहीं।

राहुल के समर्थन के बाद सोशल मीडिया पर बहस तेज

कृति सेनन के पोस्ट और राहुल गांधी के समर्थन के बाद सोशल मीडिया पर महिलाओं के पहनावे, व्यक्तिगत आजादी और संस्कृति को लेकर बहस एक बार फिर तेज हो गई है। कुछ लोग कृति की बात से सहमत नजर आ रहे हैं, जबकि कुछ उपयोगकर्ताओं ने इस मुद्दे पर अलग राय भी व्यक्त की है।

कंगना ने कहा था कि आज महिलाओं के पास पहनावे के अनेक विकल्प मौजूद हैं। उन्होंने कॉकटेल ड्रेस, लहंगा-चोली, जींस, साड़ी, बिकिनी और सलवार-कमीज जैसे अलग-अलग परिधानों का उल्लेख करते हुए सवाल उठाया था कि भाई की कलाई पर राखी बांधने के लिए इतने विकल्पों के बीच बिकिनी या अंतर्वस्त्र जैसा पहनावा क्यों चुना जाए।कंगना ने अपनी टिप्पणी में यह भी कहा था कि विज्ञापन जानबूझकर अजीब और असहज करने वाला प्रतीत होता है।

तिरंगा...

यूनिवर्स इंडिया प्रतियोगिता की जज बनीं। इस बार निर्णायक मंडल में उनके साथ भारत की पहली मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन भी मौजूद थीं।

जब उर्वशी से उनके खास लुक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, मैं भारत हूं। आज मैं सच में खुद को भारत जैसा महसूस कर रही हूं।

हालांकि, उनके इसी परिधान ने तिरंगे के रंगों और राष्ट्रीय प्रतीकों के फैशन में इस्तेमाल को लेकर होने वाली पुरानी बहस को एक बार फिर चर्चा में ला दिया है।

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि उर्वशी का गाउन राष्ट्रीय ध्वज की हूबहू प्रतिकृति नहीं था, बल्कि तिरंगे से प्रेरित डिजाइन पर आधारित था। इसमें केसरिया, सफेद और हरे रंगों का इस्तेमाल किया गया था तथा अशोक चक्र से प्रेरित डिजाइन भी नजर आया।

यही वह बारीक अंतर है जिसके दायरे में भारतीय फैशन डिजाइनर अक्सर तिरंगे के रंगों का इस्तेमाल करते हैं। केवल केसरिया, सफेद और हरे रंगों का इस्तेमाल अपने आप में राष्ट्रीय ध्वज का इस्तेमाल नहीं माना जाता। नियम राष्ट्रीय ध्वज के वास्तविक स्वरूप, उसके सम्मान और उसके अनुचित इस्तेमाल को लेकर निर्धारित हैं।

राष्ट्रीय ध्वज को कपड़े के रूप में इस्तेमाल करने पर नियम

भारत की ध्वज संहिता के अनुसार राष्ट्रीय ध्वज का इस्तेमाल कपड़े, वर्दी या किसी पोशाक के रूप में नहीं किया जा सकता। कपड़ों या पोशाक सामग्री पर राष्ट्रीय ध्वज की छपाई या कढ़ाई को लेकर भी नियम निर्धारित हैं। राष्ट्रीय ध्वज को जमीन को छूने से भी बचाया जाना चाहिए।

इसके अलावा राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 राष्ट्रीय ध्वज के अपमान को दंडनीय बनाता है। कानून के तहत सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने पर कारावास, जुर्माना या दोनों का प्रावधान है।

2005 के संशोधन के बाद राष्ट्रीय ध्वज को कमर के नीचे पहनने अथवा पोशाक सामग्री के रूप में इस्तेमाल करने से जुड़े प्रावधानों को भी स्पष्ट किया गया। हालांकि, छोटे और सम्मानजनक लैपल पिन के इस्तेमाल की अनुमति है।

इस तरह तिरंगे के रंगों से प्रेरित फैशन और वास्तविक राष्ट्रीय ध्वज को पोशाक के रूप में इस्तेमाल करने के बीच कानूनी अंतर मौजूद है।

उर्वशी रौतेला का गाउन इसी अंतर के बीच खड़ा नजर आता है। एक ओर यह तिरंगे के रंगों से प्रेरित फैशन डिजाइन है, जिसे अभिनेत्री ने देश के प्रति अपनी भावना से जोड़ा। दूसरी ओर राष्ट्रीय ध्वज से जुड़े सम्मान और नियमों को लेकर संवेदनशीलता का सवाल भी उठता है।

भारतीय फैशन जगत में तिरंगे के रंगों के इस्तेमाल को लेकर इस तरह की बहस नई नहीं है। इससे पहले भी कई चर्चित हस्तियां और डिजाइनर इस तरह के विवादों का सामना कर चुके हैं।

2007 में क्रिकेट विश्व कप के फाइनल की मेजबानी कर रहीं मंदिरा बेदी भी ऐसी ही बहस के केंद्र में आ गई थीं। श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए फाइनल के दौरान उन्होंने डिजाइनर पुनीत नंदा की तैयार की हुई ऐसी साड़ी पहनी थी, जिस पर प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले सभी देशों के झंडे छपे हुए थे। इनमें भारत का तिरंगा भी शामिल था।

टेलीविजन कैमरों में तिरंगा उनकी साड़ी के उस हिस्से पर दिखाई दिया, जो उनके पैरों के पास था। इसके बाद विवाद बढ़ गया। बारिश के कारण मैच रुकने के बाद जब बेदी दोबारा स्क्रीन पर आईं तो उन्होंने दूसरी साड़ी पहन रखी थी।

रिपोर्टों के मुताबिक, डिजाइनर पुनीत नंदा ने बाद में माफी मांगते हुए कहा था कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि भारतीय झंडा बेदी के पैर के इतने करीब दिखाई देगा। मंदिरा बेदी ने भी सफाई दी थी कि उन्होंने फाइनल के लिए खास तौर पर वही साड़ी चुनी थी, क्योंकि उसमें प्रतियोगिता में शामिल सभी 16 देशों के झंडे थे।

मालिनी रमानी का मामला भी रहा चर्चित

इससे भी पुराना और चर्चित मामला फैशन डिजाइनर मालिनी रमानी का है। उर्वशी के गाउन को लेकर शुरू हुई बहस के दौरान यह मामला भी एक बार फिर चर्चा में आया। भारत के पहले फैशन वीक के उद्घाटन समारोह की पार्टी में रमानी ने एक ऐसा तिरंगा-प्रेरित परिधान पहना था, जिसमें नारंगी रंग का टॉप, बीच में चक्र जैसा डिजाइन और हरे रंग की स्कर्ट थी। रिपोर्टों और फैशन अभिलेखों के मुताबिक, इस परिधान को लेकर इतना विवाद हुआ कि फैशन वीक को बंद करने की मांग तक उठने लगी थी। रमानी को प्रमुख समाचार पत्रों में सार्वजनिक माफी भी प्रकाशित करनी पड़ी थी। यहां तक दावा किया गया कि विवादित पोशाक को पुलिस ने जब्त कर लिया था और उसे कथित तौर पर सलाखों के पीछे रखे पुतले पर प्रदर्शित किया गया था। इस मामले को पूरी तरह समाप्त होने और रमानी का नाम विवाद से साफ होने में करीब 18 साल लग गए।

टीएमसी बागियों...

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने इस मांग को स्वीकार नहीं किया।

अदालत ने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता अदालत में पेश हुए हैं। ऐसे में लोकसभा अध्यक्ष के कार्यालय और महासचिव को अलग से नोटिस जारी करने की जरूरत नहीं है।

अभिषेक बनर्जी ने अपनी याचिका में बागी सांसदों के खिलाफ शुरू की गई अयोग्यता की कार्रवाई पर फैसला लेने में कथित देरी को चुनौती दी है। उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष को संविधान के दलबदल विरोधी प्रावधानों के तहत अयोग्यता संबंधी याचिकाओं पर फैसला लेने का निर्देश देने की मांग की है।

तृणमूल नेता ने इससे पहले 20 सांसदों के खिलाफ अलग-अलग याचिकाएं दाखिल की थीं। बाद में उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष से इन याचिकाओं का जल्द निपटारा करने का अनुरोध किया था।

रिपोर्टों के मुताबिक, अभिषेक बनर्जी ने इस मामले में 27 जुलाई को लिखित रूप से याद दिलाया था। इसके बाद 12 अगस्त को उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से मुलाकात भी की थी।

बनर्जी का कहना है कि सांसदों के खिलाफ अयोग्यता संबंधी याचिकाओं पर संविधान और दलबदल विरोधी प्रावधानों के तहत समयबद्ध तरीके से फैसला किया जाना चाहिए।

तृणमूल संसदीय दल में बगावत के बाद शुरू हुआ विवाद

यह पूरा विवाद तृणमूल कांग्रेस के संसदीय दल में हुई बगावत के बाद सामने आया। तृणमूल कांग्रेस के 20 लोकसभा सांसदों ने घोषणा की थी कि वे त्रिपुरा स्थित राजनीतिक संगठन नेशनलिस्ट सिटिजंस पार्टी ऑफ इंडिया यानी एनसीपीआई में शामिल हो गए हैं या उसके साथ विलय कर लिया है।

इन सांसदों ने लोकसभा में अलग दल के रूप में मान्यता देने का भी आग्रह किया था। इसके बाद तृणमूल कांग्रेस की ओर से उनके खिलाफ दलबदल विरोधी कानून के तहत कार्रवाई की मांग की गई।

BOOK YOUR DISPLAY CLASSIFIED ADVERTISEMENTS AT
Timings : 9 am to 7 pm
Head office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar, Hyderabad - 500 037
City office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar,
Hyderabad - 500 037
8688868345

शुभ लाभ
आपकी सेवा में
शुभ लाभ से जुड़ी किसी भी समस्या या सुझाव के लिए मो. 86888 68345 पर संपर्क करें ।

गुजराती समाज के साथ डोंगरेजी महाराज गौशाला समिति की बैठक संपन्न

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। इंजापुर स्थित पूज्य श्री रामचंद्र डोंगरेजी महाराज गौशाला को सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से गौशाला समिति एवं श्री गुजराती प्रगति समाज, हैदराबाद के पदाधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक रविवार, 23 अगस्त 2026 को काचीगुड़ा स्थित पटेल घनश्याम भवन में दोपहर 2 बजे आयोजित की गई।

बैठक में श्री गुजराती प्रगति समाज, हैदराबाद के अध्यक्ष गोविंदभाई शाह, उपाध्यक्ष महेशभाई पटेल, ट्रस्ट चेयरमैन नीतिनभाई शाह, मानद मंत्री राहुल छेड़ा, कोषाध्यक्ष अंबालाल पटेल, गोपाल पटेल, दिनेश गोसर, राजेश शाह, हरिलाल पटेल, अरविंद पटेल, रमेश साकला, भारतीबेन पटेल, चेतना पटेल, समाजसेवी गोपाल भंडारी सहित विशेष रूप से 'लव फॉर काऊ फाउंडेशन' के ट्रस्टी रीश जागीरदार तथा गौशाला के वसंत पटेल, घनश्याम पटेल, अशोक पटेल, प्रभु पटेल सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

14 वर्ष पूर्व 11 गायों से हुई थी गौशाला की शुरुआत

बैठक में गौशाला की ओर से अशोक पटेल ने उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत करते हुए गौशाला की गतिविधियों और कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पूज्य श्री रामचंद्र डोंगरेजी महाराज गौशाला की स्थापना वर्ष 2012 में रामनवमी के दिन मात्र 11 गायों के साथ की गई थी। वर्तमान में गौशाला में लगभग 1,050 गोमाता हैं।

उन्होंने बताया कि पशुप्रेमियों और गौरक्षकों के सहयोग से बूचड़खानों में जाने वाली गायों को बचाकर गौशाला में संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि डोंगरेजी महाराज गौशाला संभवतः ऐसी गौशालाओं में से एक है, जहां संस्था के पदाधिकारी स्वयं गौसेवा के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

डोंगरेजी महाराज के सपने को साकार करने का प्रयास

संयोजक अशोक पटेल ने बताया कि गत फरवरी माह में संत शिरोमणि पूज्य रामचंद्र डोंगरेजी महाराज की 100वीं जन्मशताब्दी के अवसर पर एक विशाल डायरों कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। गौभक्ति, सेवा और समर्पण की भावना से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य अधिक से अधिक दान राशि एकत्रित करना था। इस राशि का उपयोग डोंगरेजी महाराज गौशाला के लिए भूमि खरीदने में किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि गौशाला में बूचड़खानों से बचाई गई गायों को आश्रय दिया जाता है। गौशाला एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ न्यास है, जो पूर्ण रूप से गौसेवा के लिए समर्पित है।

अशोक पटेल ने कहा कि संत शिरोमणि श्री रामचंद्रजी डोंगरे महाराज का सपना था कि भाग्यनगर के समीप किसी ग्राम में शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में गौविकास हो, जहां शहरी प्रदूषण से दूर गौवंश को शुद्ध वायु और शुद्ध पानी उपलब्ध हो तथा आने वाले गौभक्तों को भी प्राकृतिक वातावरण का लाभ मिल सके। उन्होंने सभी पदाधिकारियों एवं समाजबंधुओं से छुट्टी के दिनों तथा रविवार को अधिक से अधिक संख्या में गौशाला पहुंचने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि सभी की उपस्थिति और सहभागिता गौशाला के संकल्प को और मजबूती प्रदान करेगी।

1,000 से अधिक गोवंश लिए गए दत्तक

वसंत पटेल ने बताया कि गौशाला को आर्थिक रूप से मजबूत करने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में नए सदस्यों को जोड़ा गया है। सदस्यों को गौ दत्तक योजना के माध्यम से गौसेवा से जोड़ा जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत अब तक 1,000 से अधिक गोवंश को दत्तक लिया जा चुका है।

उन्होंने सभी समाजबंधुओं एवं गौप्रेमियों से अधिक से अधिक संख्या में इस योजना से जुड़ने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि एक गोवंश को दत्तक लेने के लिए मात्र 1,000 रुपये प्रतिमाह की राशि निर्धारित की गई है, ताकि अधिक से अधिक लोग इस योजना से जुड़ सकें और गौशाला को भी नियमित आर्थिक सहयोग प्राप्त हो।

'गोमाता की सेवा और सुरक्षा हमारा धर्म'

महेश पटेल ने अवसर पर कहा कि गोमाता संपूर्ण जगत की माता हैं। गोमाता की सेवा और सुरक्षा करना हमारा धर्म है। सनातन धर्म को मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति की यह अभिलाषा होती है कि वह अपने मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए गौसेवा को समझे और इससे जुड़े।

उन्होंने कहा कि मृत्यु से पूर्व अपने हाथों से गोदान अवश्य करना चाहिए तथा गोवंश को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में भारत में गोवंश की हो रही उपेक्षा और गोहत्या को रोकना आवश्यक है। गौवंश को बूचड़खानों में जाने से रोकने के लिए समाज को आगे आना होगा। उन्होंने गौशाला के लिए हरसंभव सहयोग देने का विश्वास दिलाया।

गौशाला के लिए सहयोग राशि देने की घोषणाएं

इस अवसर पर श्री गुजराती प्रगति समाज के अध्यक्ष गोविंदभाई शाह, ट्रस्ट चेयरमैन नीतिनभाई शाह, मंत्री राहुल छेड़ा, अरविंद एम. पटेल, दिनेश गोसर एवं राजेश शाह ने अपनी ओर से गौशाला के लिए भूमि खरीदने हेतु बड़ी राशि देने की घोषणा की।

इसके साथ ही धीरेन्द्र राणा एवं गोपाल भंडारी ने जमीन खरीदने के लिए 5 गज भूमि के मूल्य के बराबर सहयोग राशि देने की घोषणा की। उपस्थित सभी सदस्यों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इन घोषणाओं का स्वागत किया।

अग्रवाल हाई स्कूल हिंदी माध्यम का पदवी अलंकरण समारोह आयोजित

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। अग्रवाल शिक्षा समिति द्वारा संचालित अग्रवाल हाई स्कूल हिंदी माध्यम का पदवी अलंकरण समारोह समिति के सभा गृह सेड़मल हाल में आयोजित किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ परंपरागत रूप से राष्ट्र वंदना, सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद अतिथियों के सम्मान में स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती के. प्रमिला ने स्वागत भाषण देते हुए सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं कार्यकुशलता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समारोह में हेड बॉय कुमार अखिल यादव ने समिति के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार केडिया का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। सभा को संबोधित करते हुए समिति के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार केडिया ने कहा कि अग्रवाल हाई स्कूल में पहली से दसवीं कक्षा तक विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने अलंकृत किए गए विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि जो विद्यार्थी किसी पद के लिए निर्वाचित नहीं हुए हैं, उनकी क्षमताओं और प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए, ताकि वे जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें।समिति के मानद मंत्री सी.ए. नवीन कुमार अग्रवाल ने कहा कि अग्रवाल हाई स्कूल का अपना ऐतिहासिक महत्व और विशिष्ट अस्तित्व है। इस विद्यालय ने अपनी स्थापना से अब तक 101 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा पूरी की है। विद्यालय से विद्यार्थियों की अनेक पीढ़ियों ने शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं।उन्होंने विद्यार्थियों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें जीवन में कुछ ऐसा अच्छा करके दिखाना चाहिए, जिससे विद्यालय समिति और उनका स्वयं का नाम गौरवान्वित हो।विद्यालय के कॉरस्पॉन्डेंट श्री संजय संधि ने अलंकृत विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें अपने पद की गरिमा बनाए रखते हुए विद्यालय की उन्नति एवं प्रगति में योगदान देना चाहिए। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य एवं सफलता की कामना की।

इसके बाद मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों ने चयनित विद्यार्थियों को विभिन्न पदों का अलंकरण प्रदान किया। अलंकरण समारोह के पश्चात श्री संजय सगी ने सभी विद्यार्थियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

राधे-राधे ग्रुप की सेवा का कोई तोड़ नहीं : दिनेश कनोडिया

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में नामपल्ली स्थित पब्लिक गार्डन, पिलर नंबर 1265 ए के पास मंगलवार को स्वर्गीय श्रीमती रमादेवी की पुण्य स्मृति में भावपूर्ण अन्नदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जरूरतमंदों को भोजन वितरित कर स्वर्गीय रमादेवी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अपनी पत्नी की पुण्य स्मृति में आयोजित इस सेवा कार्यक्रम के दौरान दिनेश कनोडिया भावुक हो उठे। उन्होंने कहा कि राधे-राधे ग्रुप ने हमें सेवा का जो अवसर दिया, उसके लिए हमारा परिवार सदैव आभारी रहेगा। उन्होंने कहा कि अपनों की स्मृति को यदि सेवा और अन्नदान से जोड़ा जाए तो उससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है।

दिनेश कनोडिया ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप जिस निस्वार्थ भावना और निरंतरता के साथ मानव सेवा में जुटा हुआ है, उसका कोई तोड़ नहीं है। यहां सेवा केवल भोजन बांटने तक सीमित नहीं है, बल्कि जरूरतमंदों के प्रति अपनापन, संवेदना और मानवता का भाव दिखाई देता है। उन्होंने समाज के लोगों से आह्वान किया कि वे भी अपने परिवार के जन्मदिन, पुण्यतिथि, वर्षगांठ और अन्य विशेष अवसरों को राधे-राधे ग्रुप की सेवा से जोड़ें, ताकि खुशियां और पुण्य दोनों समाज के साथ साझा किए जा सकें।

उन्होंने कहा कि जब समाज का हर सक्षम व्यक्ति सेवा के इस अभियान से जुड़ेगा, तभी मानवता की यह श्रृंखला और मजबूत होगी। राधे-राधे ग्रुप की सेवाओं से जुड़ना केवल किसी कार्यक्रम में भाग लेना नहीं, बल्कि जरूरतमंदों के जीवन में संवेदना और सहयोग का एक छोटा-सा दीप जलाना है।

इस अवसर पर महेन्द्र मोहनका, दिनेश कानोडिया, ललित कानोडिया, पवन कानोडिया, राम प्रकाश अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, सुशील गुप्ता, शीतल गुप्ता, जगन गुप्ता, कैलाश केडिया, निर्मला केडिया, संजय गोयल, नंद गोपाल, दत्ता हुलसुर, जय प्रकाश सारड़ा, नंद किशोर अग्रवाल, सुरेश सिंघल एवं सोहनलाल दायमा सहित राधे-राधे ग्रुप के सदस्य उपस्थित रहे।

राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद का नियमित अन्नदान अभियान समाज को यही संदेश दे रहा है कि अपने विशेष अवसरों को सेवा से जोड़िए और अपनी खुशियों को जरूरतमंदों तक पहुंचाइए।

यही सेवा किसी व्यक्ति की स्मृति को समाज के लिए प्रेरणा में बदल देती है।

पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह-2026 में गाजर घास के दुष्प्रभावों और नियंत्रण पर जोर

एनआईपीएचएम में सप्ताहभर चले जागरूकता एवं उन्मूलन अभियान; 241 अधिकारियों, प्रशिक्षुओं, विद्यार्थियों और श्रमिकों ने हिस्सा लिया

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। पार्थेनियम विश्वभर में एक अत्यंत हानिकारक खरपतवार के रूप में जाना जाता है, जो कृषि उत्पादकता के साथ-साथ मानव एवं पशु स्वास्थ्य तथा जैव विविधता को गंभीर नुकसान पहुंचाता है। भारत में यह विदेशी खरपतवार 1950 के दशक के मध्य में मेक्सिको और अमेरिका से आया था। शुरुआत में पार्थेनियम केवल बंजर एवं खाली भूमि तक सीमित था, लेकिन धीरे-धीरे इसका प्रसार कृषि क्षेत्रों सहित शहरी एवं सार्वजनिक स्थलों तक हो गया है।

पार्थेनियम को आमतौर पर गाजर घास के नाम से भी जाना जाता है। इसके संपर्क में आने से मनुष्यों में त्वचा संबंधी एलर्जी, त्वचा शोथ, हे फीवर तथा अस्थमा जैसी स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यह पशुधन के लिए भी विषैला माना जाता है। इसके अतिरिक्त, यह देशी जैव विविधता के लिए खतरा पैदा करता है, फसलों की उत्पादकता को प्रभावित करता है तथा घासभूमियों और चरागाहों में देशी वनस्पतियों को दबाकर चारे की उपलब्धता कम करता है।

पार्थेनियम अब पार्कों, आवासीय कॉलोनियों, बाग-बगीचों तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों में भी गंभीर समस्या बन चुका है। शहरी क्षेत्रों में इसकी झाड़ियां मच्छरों, तिलचट्टों और कृंतकों जैसे कीटों के लिए आश्रय स्थल भी बन सकती हैं।

इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान द्वारा 16 से 22 अगस्त 2026 तक 'पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह' मनाया गया।

'पार्थेनियम खरपतवार एवं उसका प्रबंधन' विषयक पोस्टर का विमोचन करते हुए संस्थान की महानिदेशक डॉ. सी. तारा सत्यवती ने अधिकारियों, कर्मचारियों, प्रशिक्षुओं एवं विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने इस हानिकारक खरपतवार के दुष्प्रभावों तथा इसके प्रभावी नियंत्रण के उपायों को लेकर व्यापक जन-जागरूकता फैलाने का आह्वान किया।

डॉ. सत्यवती ने कहा कि पार्थेनियम केवल कृषि भूमि की उत्पादकता को प्रभावित करने वाली समस्या नहीं है, बल्कि यह जैव विविधता, पर्यावरण तथा मानव एवं पशु स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर चुनौती बन चुका है। इसलिए इसके नियंत्रण के लिए सामूहिक और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान परिसर तथा संस्थान के कृषि फार्म क्षेत्र में पार्थेनियम उन्मूलन और जन-जागरूकता संबंधी विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं।संस्थान के कर्मचारियों, आउटसोर्सिंग कर्मियों, हाउसकीपिंग कर्मचारियों तथा प्रशिक्षुओं ने सक्रिय भागीदारी करते हुए चिन्हित क्षेत्रों से पार्थेनियम पौधों का सामूहिक रूप से उन्मूलन किया।

इस दौरान प्रतिभागियों को खरपतवार की पहचान, उसके सुरक्षित निष्कासन और उचित निपटान की विधियों का प्रदर्शन भी किया गया। साथ ही पार्थेनियम के बीज बनने से पहले उसे हटाने और इसके आगे प्रसार को रोकने के महत्व पर विशेष जोर दिया गया।

जागरूकता सप्ताह के तहत संस्थान के अधिकारियों एवं प्रशिक्षुओं की एक टीम ने मामिडिपल्ली गांव का दौरा कर किसानों के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें 43 किसानों एवं प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों को पार्थेनियम के मानव स्वास्थ्य, कृषि, पशुधन एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी गई। किसानों को इस खरपतवार की समय पर पहचान, उन्मूलन और उचित प्रबंधन के महत्व के बारे में भी विस्तार से बताया गया।

अभियान के अंतर्गत संस्थान के अधिकारियों की एक टीम ने डॉ. ओ.पी. शर्मा, निदेशक (पीएचएम), डॉ. जेसु राजन, वैज्ञानिक अधिकारी, डॉ. दामोदरचारी तथा श्री राजेश कुमार, कनिष्ठ अभियंता के नेतृत्व में ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम, किस्मतपुर, हैदराबाद के कर्मचारियों के साथ संयुक्त रूप से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

श्री सिखवाल ब्राह्मण समाज ने श्रावण महोत्सव में कराया भव्य रुद्राभिषेक एवं छप्पन भोग

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)।

श्री सिखवाल ब्राह्मण समाज भाग्यनगर की ओर से श्रावण महोत्सव के अंतर्गत श्रावण मास के चौथे सोमवार, 24 अगस्त को श्री राम दरबार पंचायती बाड़ा स्थित श्री विजय शंकर महाराज जी के शिवालय में भव्य धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर वेदाचार्य श्री वासुदेवजी तिवारी के सहयोग से वेद मंत्रोच्चार के बीच विधिवत रुद्राभिषेक कराया गया।

रुद्राभिषेक में समाज के श्रद्धालुओं ने बारी-बारी से भगवान शिव का अभिषेक कर पूजा-अर्चना की। इस दौरान पूरा परिसर भगवान शिव के जयकारों और वैदिक मंत्रोच्चार से भक्तिमय हो उठा। कार्यक्रम के दौरान

प्रमुख भजन गायकों ने अपनी मधुर वाणी में भगवान शिव की आराधना करते हुए मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी। शिव अर्चना एवं शिव लहरी के भजनों पर श्रद्धालु भावविभोर हो गए और पूरे वातावरण में भक्ति की लहर छा गई।

इसके पश्चात भगवान श्री विजय शंकरजी महाराज का श्रीनाथजी स्वरूप में आकर्षक श्रृंगार किया गया। भगवान को छप्पन भोग एवं छत्तीसों प्रकार के व्यंजनों का भोग अर्पित किया गया।

रात्रि 11 बजे भगवान की महाआरती संपन्न हुई। इसके बाद सभी धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने फराली प्रसाद ग्रहण किया। तत्पश्चात छप्पन भोग एवं छत्तीसों व्यंजनों का प्रसाद समाज के स्वजातीय बंधुओं तथा धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं में वितरित किया गया।

संस्था की ओर से बताया गया कि श्रावण महोत्सव का समापन कार्यक्रम आगामी 30 अगस्त, रविवार को आयोजित किया जाएगा। समापन अवसर पर रुद्राभिषेक, हवन, संगीतमय सुंदरकांड पाठ, महाआरती एवं प्रसादी का आयोजन होगा। इस अवसर पर विशेष रूप से वनविहार का आलोकित श्रृंगार किया जाएगा।समाज ने सभी स्वजातीय बंधुओं, धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं एवं आमजन से समापन कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धार्मिक आयोजन का लाभ उठाने का आग्रह किया है।कार्यक्रम को सफल बनाने में श्यामसुंदर उपाध्याय, रामदेव नागला, मुरलीधर तिवारी, रामनिवास ओझा, लक्ष्मीनारायण व्यास, दामोदर तिवारी, जगदीशप्रसाद कोलरिया, जुगल किशोर उपाध्याय, दीपक उपाध्याय, धीरज उपाध्याय, कमल पांड्या, नीरज उपाध्याय, बांके बिहारी ओझा, नारायण वैष्णव, सतवीर उपाध्याय, दिनेश पांडिया, अज्जू वैष्णव, मधुसूदन उपाध्याय, लखन उपाध्याय, अनिल जायलवाल, रामनिवास पाराशर, विष्णु उपाध्याय, गिरिराज कारीगर, आदर्श जायलवाल, विजय व्यास, काका, श्रीराम व्यास (अमलदार), सुरेश उपाध्याय (पापा भाई, पांच मंजिल), पुरुषोत्तम उपाध्याय, सुरेंद्र तिवारी (पापा), अमरचंद जायलवाल, गोवर्धन राठी, सुरेश गांधी, गोपाल शर्मा, लक्ष्मीनिवास खटोड़ (लड्डू भाई), लड्डू व्यास (ठाकुर), हंसराज तिवारी, निरंजन तिवारी, घनश्याम, महेश सहित समाज के गणमान्य बंधुओं एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने सक्रिय सहभागिता निभाई।

समाज के पदाधिकारियों ने सभी सहयोगकर्ताओं एवं श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त करते हुए आगामी समापन समारोह में भी अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता की अपील की।

टी एस रेड्डी को मास्टर ऑफ फोटोजर्नलिज्म अवॉर्ड

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल ने विश्व फोटोग्राफी दिवस की पूर्व संध्या पर अंतरराष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा की। विजयवाड़ा के फोटोजर्नलिस्ट टी एस रेड्डी को मास्टर ऑफ फोटोजर्नलिज्म अवॉर्ड के लिए चुना गया है।

उन्हें टी. नारायण (हिंदुस्तान टाइम्स) और संजय कुमार (संगीत नाटक अकादमी) के साथ यह सम्मान मिलेगा। प्रसिद्ध फोटोग्राफर रघु राय को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड (मरणोपरांत) के लिए नामांकित किया गया है। पुरस्कार 24 दिसंबर को नई दिल्ली में प्रदान किए जाएंगे।

शुभ लाभ DAILY खबरें जो सोच बदल दे हिंदी दैनिक समाचार पत्र

रेवंत रेड्डी ने एफटीएल और बफर लैंड्स के लिए नीति बनाने का निर्देश दिया

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने प्रतिष्ठित मूसी ri-juvenation परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण में तेजी लाने का आदेश अधिकारियों को दिया। मुख्यमंत्री ने आज एमसीआरएचआरडी बोधि पवेलियन में मूसी परियोजना की समीक्षा की।

भूमि अधिग्रहण की स्थिति पर समीक्षा

बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से मूसी परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण की स्थिति के बारे में पूछताछ की। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने जोर दिया कि भूमि पूलिंग के लिए एक नीति तैयार की जानी चाहिए। इस नीति में एफटीएल (फुल टैंक लेवल), बफर जोन और असाइन की गई भूमि श्रेणियों के अंतर्गत आने वाली भूमि अधिग्रहण पर भी ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

कानूनी जटिलताओं से बचने और फेज-2 के टेंडर पर जोर

मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी कि भूमि अधिग्रहण के दौरान कानूनी जटिलताओं से बचा जाना चाहिए। अधिकारियों को मूसी परियोजना के फेज-2 के लिए जल्द से जल्द टेंडर आमंत्रित करने का भी निर्देश दिया गया। मुख्यमंत्री ने नगर आयुक्तों को सुझाव दिया कि वे परियोजनाओं के लिए कम ब्याज वाले ऋण प्राप्त करने पर अधिक ध्यान दें और टीडीआर (ट्रांसफरेबल डेवलपमेंट राइट्स) की हर सप्ताह समीक्षा करें। बैठक में मंचिरेवुला ओंकारेश्वर स्वामी मंदिर के लिए टेंडर और कोथवालगुडा बर्ड पार्क के प्रचार पर भी चर्चा हुई।

वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति

मुख्यमंत्री सचिव मानिक राज, एचएमडीए आयुक्त सरफराज अहमद, जीएचएमसी आयुक्त आर.वी. कर्नन, मल्काजगिरी नगर आयुक्त विनय कृष्ण रेड्डी, साइबराबाद आयुक्त सृजना, रंगारेड्डी जिला कलेक्टर नारायण रेड्डी, मेडचल कलेक्टर मनु चौधरी, एमआरडीसीएल एमडी ई.वी. नरसिंह रेड्डी, एमआरडीसीएल जेएमडी गौतमी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

टीपीसीसी अनुशासन पैनल ने मंत्री कोंडा सुरेखा को कैबिनेट से हटाने की सिफारिश की

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)।

तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस अनुशासन समिति ने तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस समिति अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ को कोंडा सुरेखा और जी चिन्ना रेड्डी के खिलाफ कार्रवाई करने की सिफारिश की है। कांग्रेस पार्टी के सूत्रों के अनुसार, समिति ने कोंडा सुरेखा को तेलंगाना सरकार के कैबिनेट मंत्रालय से हटाने और चिन्ना रेड्डी को प्लानिंग बोर्ड के उपाध्यक्ष पद से हटाने को कहा है।

यह रिपोर्ट महेश कुमार गौड़ द्वारा तेलंगाना कांग्रेस प्रभारी मीनाक्षी नटराजन को अग्रेषित की जाएगी। कार्रवाई पर अंतिम निर्णय मीनाक्षी नटराजन द्वारा कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, के सी वेणुगोपाल और विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ दिल्ली में परामर्श करके लिया जाएगा।

बेटी के बयान और मंत्री के जवाब पर विचार

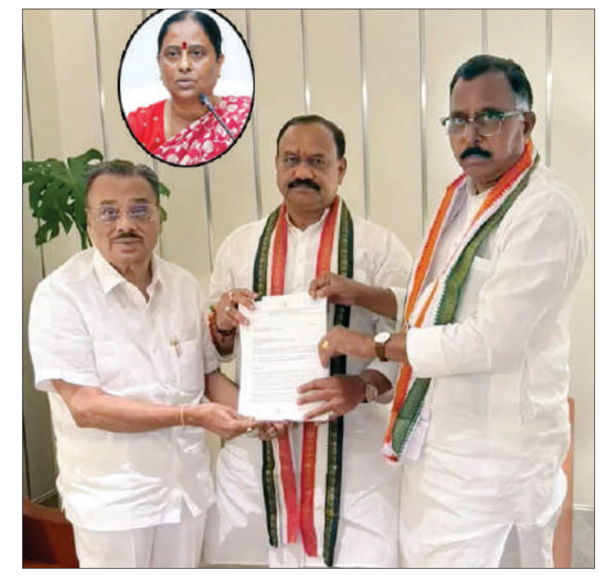

अनुशासन समिति ने उनकी बेटी कोंडा सुष्मिता के बयान और कोंडा सुरेखा द्वारा दिए गए जवाब को ध्यान में रखा है। अनुशासन समिति ने नोट किया कि मंत्री ने अपनी बेटी की टिप्पणियों से खुद को दूर करने की कोशिश की। लेकिन यह स्वीकार्य नहीं था, सूत्रों ने समझाया। समिति ने यह भी नोट किया कि यह पिछले एक साल में दूसरी घटना थी। इन बयानों के कारण पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचा है। समिति ने उनके खिलाफ उचित कार्रवाई करने को कहा है।

खड़गे से मुलाकात और कोई राहत क्यों नहीं

कोंडा सुरेखा और उनके पति कोंडा मुरली की कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे से मुलाकात ने भी वरिष्ठ नेता से तीखी फटकार लगाई, जो बहुत नाराज थे। पार्टी सूत्रों के अनुसार, अनुशासन समिति को कोंडा सुरेखा का जवाब निर्णायक बिंदु था। अपनी बेटी के बयानों से खुद को दूर करना सही बात नहीं है।

यह दूसरी बार है जब बेटी ने सार्वजनिक चर्चा में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के बारे में बुरा बोला है। पार्टी ने सबसे निचले से लेकर सर्वोच्च रैंक तक एक और सभी को स्पष्ट रूप से चेतावनी दी है कि पार्टी के मामलों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा न करें। उचित निवारण प्रणाली होने के बावजूद सार्वजनिक मंचों का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो पार्टी के लिए अच्छा नहीं है। एक और सभी को संदेश देने के लिए कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने पिछले एक सप्ताह में विभिन्न बैठकों और पार्टी को सौंपे गए पत्रों के माध्यम से गौड़ और नटराजन से कार्रवाई करने का आग्रह किया है।

जन्मदिन पर सेवा से अभिभूत हुईं नीलम विजयवर्गीय

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में बेगम बाजार स्थित भू देवी माता मंदिर के सामने गौशाला पर नियमित अन्नदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नीलम विजयवर्गीय के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित इस सेवा कार्यक्रम ने जन्मदिन को सामाजिक सरोकार और मानव सेवा से जोड़ते हुए एक प्रेरणादायक संदेश दिया।

जन्मदिन के विशेष अवसर पर अन्नदान सेवा में सहभागिता कर नीलम विजयवर्गीय ने सेवा के इस भाव को लेकर अपनी प्रसन्नता और भावनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा कि जन्मदिन पर सेवा कार्य से जुड़ना और जरूरतमंदों के बीच अन्नदान करना उनके लिए बेहद भावुक और यादगार अनुभव है। राधे-राधे ग्रुप जिस निरंतरता और समर्पण के साथ सेवा कार्य कर रहा है, वह समाज के लिए प्रेरणा का विषय है।

इस अवसर पर जगत नारायण अग्रवाल, अनिल धरशुवाले अग्रवाल, राजेश सर योगा, शर्मिला अग्रवाल, नीलम विजयवर्गीय, अरुण विजयवर्गीय, महेश गोयल, लता गोयल एवं रेणु शर्मा सहित अन्य सदस्यों ने सेवा कार्य में सहभागिता की।

राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद का प्रयास है कि जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ और अन्य शुभ अवसरों को केवल व्यक्तिगत उत्सव तक सीमित न रखते हुए उन्हें मानव सेवा से जोड़ा जाए। नीलम विजयवर्गीय के जन्मदिन पर आयोजित यह अन्नदान कार्यक्रम इसी सेवा संस्कार का सुंदर उदाहरण बना।

अहिंसा रत्न जसराज श्रीश्रीमाल का अभिनंदन

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)।

प्राणीमित्र रमेश जागीरदार मेमोरियल फाउंडेशन की ओर से जीवदया प्रेमी एवं अहिंसा रत्न जसराज श्रीश्रीमाल का अभिनंदन किया गया। हाल ही में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेलंगाना सरकार की ओर से पिछले तीन दशकों से अधिक समय से जीवदया एवं पशु संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित किए जाने पर विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं ने उनका सम्मान किया।

प्राणीमित्र रमेश जागीरदार मेमोरियल फाउंडेशन, लव फॉर काऊ फाउंडेशन, शासन दीप, भारतीय प्राणी मित्र संघ तथा श्री जैन सेवा संघ सहित विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने जसराज श्रीश्रीमाल का शॉल एवं माला पहनाकर अभिनंदन किया।

इस अवसर पर शासन दीप संस्था के अध्यक्ष सी.ए. निर्मल सिंघवी, श्री जैन सेवा संघ के महामंत्री विमल मुथा, लव फॉर काऊ फाउंडेशन एवं प्राणीमित्र रमेश जागीरदार मेमोरियल फाउंडेशन के रीश रमेश जागीरदार, श्री अजीत पार्श्व युवा संगठन के अध्यक्ष डॉ. घीसुलाल जैन, भारतीय जैन संघटना के महावीर मुणोत तथा स्वरूप पारेख उपस्थित रहे।

रिद्धिश जागीरदार ने जसराज श्रीश्रीमाल का परिचय देते हुए कहा कि वे जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता हैं और जीवदया के क्षेत्र में लंबे समय से अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। वे अलकबीर आंदोलन को बंद कराने के लिए भी लगातार प्रयासरत रहे हैं। वे भारतीय प्राणी मित्र संघ के अध्यक्ष, श्री जैन सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष तथा यांत्रिक कत्लखाना विरोध समिति के संयोजक रह चुके हैं और विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।उन्होंने बताया कि जसराज श्रीश्रीमाल विभिन्न संगोष्ठियों एवं रैलियों के माध्यम से युवाओं को जीवदया और पशु संरक्षण के प्रति जागरूक करते रहे हैं। जीवदया के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें वेणु मेनन लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया जाना भी उनके लिए गौरव की बात है। रिद्धिश जागीरदार ने कहा कि गुजरात में पूर्ण गौहत्या बंदी कानून को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वैध ठहराए जाने के मामले में अधिवक्ता के रूप में जसराज श्रीश्रीमाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रशांत नगर से मच्छलेश्वर मंदिर तक निकली कांवड़ यात्रा

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)।

हिन्दू सेवा समाज के तत्वावधान मेंलंगरहाउस स्थित प्रशांत नगर से मच्छलेश्वर मंदिर तक भव्य कांवड़ यात्रा निकाली गई। यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हर-हर महादेव और भोलेनाथ के जयघोष से पूरा मार्ग भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालु कांवड़ लेकर भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए मच्छलेश्वर मंदिर पहुंचे।

अवसर पर श्रीरामचंद्र मठ के महंत राहुल दास महाराज ने कहा कि कांवड़ यात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति, आस्था और सामाजिक एकता का प्रतीक है। भगवान शिव की भक्ति में निकाली जाने वाली यह यात्रा श्रद्धालुओं को सेवा, संयम, त्याग और सद्भाव का संदेश देती है। उन्होंने कहा कि भगवान शिव सभी के आराध्य हैं और उनकी भक्ति समाज में आपसी प्रेम तथा भाईचारे की भावना को मजबूत करती है।

राहुल दास महाराज ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ना समय की आवश्यकता है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से युवाओं और बच्चों को सनातन संस्कृति की महान परंपराओं के बारे में जानकारी मिलती है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से भगवान शिव के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने और समाज में शांति, सद्भाव तथा सेवा की भावना को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि भगवान शिव हमें विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने और दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। कांवड़ यात्रा के माध्यम से श्रद्धालु अपनी आस्था व्यक्त करने के साथ ही समाज में सकारात्मक संदेश भी पहुंचाते हैं।

धर्म और समाजसेवा को बढ़ावा देना उद्देश्य – शोभा पांडे

हिन्दू सेवा समाज की अध्यक्ष शोभा पांडे ने कहा कि समाज की ओर से धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ सामाजिक सेवा के कार्यों को भी निरंतर आगे बढ़ाया जा रहा है। कांवड़ यात्रा का उद्देश्य लोगों को भगवान शिव की भक्ति से जोड़ने के साथ ही समाज में एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि यात्रा में महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों ने उत्साह के साथ भाग लेकर यह साबित किया कि सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों की आस्था आज भी मजबूत है। उन्होंने यात्रा में सहयोग करने वाले सभी श्रद्धालुओं और समाज के सदस्यों का आभार जताया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही।

यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान शिव के जयकारे लगाए और भक्ति गीतों के साथ कांवड़ लेकर मच्छलेश्वर मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना की।

इस दौरान पूरे मार्ग में भक्तिमय वातावरण बना रहा।कांवड़ यात्रा में बाला प्रसाद तिवारी, जयशंकर तिवारी, विश्वजीत, राजू उस्ताद, मधु अवस्थी, विजय अवस्थी, नागेश्वर राव सहित समाज के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

सीआईएसएफ बीडीएल भानूर में आयुर्वेद जागरूकता व्याख्यान आयोजित

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)। आयुष मंत्रालय एवं केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के दिशा-निर्देशों के अनुपालन में राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान, हैदराबाद द्वारा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की बीडीएल, भानूर इकाई में विशेष आयुर्वेद जन-जागरूकता कार्यक्रम एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य आयुर्वेद आधारित जीवनशैली को प्रोत्साहित करने के साथ स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन में आयुर्वेद की महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति जागरूकता पैदा करना था। इस अवसर पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के अधिकारियों एवं जवानों को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों को अपनाने तथा प्राकृतिक एवं स्वस्थ जीवनशैली विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान के प्रभारी सहायक निदेशक डॉ. जी. पी. प्रसाद, एम.डी., पीएच.डी. (आयुर्वेद) ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित किया। उन्होंने दिनचर्या, ऋतुचर्या, संतुलित एवं सात्त्विक आहार तथा आयुर्वेदिक सिद्धांतों के माध्यम से विभिन्न रोगों की रोकथाम एवं स्वास्थ्य संवर्धन के व्यावहारिक उपायों की जानकारी दी। व्याख्यान के बाद आयोजित प्रश्नोत्तर सत्र में संस्थान के डॉ. जी. पी. प्रसाद एवं अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद) डॉ. संतोष माने ने अधिकारियों एवं जवानों की स्वास्थ्य संबंधी जिज्ञासाओं का वैज्ञानिक एवं आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से समाधान किया। स्वास्थ्य जागरूकता को व्यापक बनाने के उद्देश्य से संस्थान के पुस्तकालय एवं सूचना सहायक श्री के. श्रीनिवास राव ने प्रतिभागियों के बीच आयुर्वेद, घरेलू स्वास्थ्य उपायों एवं स्वस्थ जीवनशैली से संबंधित सूचना, शिक्षा एवं संचार सामग्री तथा जन-जागरूकता पुस्तिकाओं का वितरण किया। पर्यावरण संरक्षण एवं औषधीय पौधों के संवर्धन की दिशा में संस्थान की ओर से सीआईएसएफ, बीडीएल भानूर परिसर के उद्यान के लिए विभिन्न प्रकार की वनौषधियां एवं औषधीय पौधे भी भेंट किए गए। कार्यक्रम में सीआईएसएफ इकाई, बीडीएल भानूर के श्री सी. श्रीराम तेजस्वी, उप कमांडेंट के मार्गदर्शन में श्री अरशद अली खान, सहायक कमांडेंट (अग्निशमन), अन्य वरिष्ठ अधिकारियों तथा श्री उदय बाविस्कर, निरीक्षक सहित बड़ी संख्या में जवानों ने सक्रिय सहभागिता की।

कार्यक्रम के समापन पर सीआईएसएफ, बीडीएल भानूर के अधिकारियों एवं जवानों ने राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान की इस स्वास्थ्य जागरूकता पहल की सराहना की। प्रतिभागियों ने आयुर्वेद के उपयोगी सिद्धांतों को दैनिक जीवन में अपनाकर स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली विकसित करने का संकल्प व्यक्त किया।

किशन रेड्डी ने डॉ. टी. सुरेंद्र को 'मदर इंडिया नेशनल अवार्ड 2026' से सम्मानित किया

हैदराबाद, 25 अगस्त (शुभ लाभ ब्यूरो)।

जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही सेव अर्थ फाउंडेशन संस्था को उत्तर प्रदेश के अयोध्या स्थित स्वदेशी संस्थान इंडिया की ओर से 'मदर इंडिया नेशनल अवार्ड 2026' से सम्मानित किया गया। भारत की 80वीं स्वतंत्रता वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में देशभर से सामाजिक एवं जनसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय पुरस्कार अयोध्या स्थित सागर कला भवन में आयोजित समारोह में प्रदान किए गए। हैदराबाद की सेव अर्थ फाउंडेशन को भी उसके सामाजिक एवं पर्यावरणीय कार्यों के लिए 'मदर इंडिया नेशनल अवार्ड 2026' प्रदान किया गया।

अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण सेव अर्थ फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. टी. सुरेंद्र अयोध्या में आयोजित समारोह में शामिल नहीं हो सके। बाद में केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी ने डॉ. सुरेंद्र को शॉल ओढ़ाकर 'मदर इंडिया' संस्था का स्मारक एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि समाज के कल्याण के लिए कार्य करने वाले स्वयंसेवकों द्वारा दी जा रही सेवाएं अमूल्य हैं। ऐसे लोगों के प्रयासों की सराहना और सम्मान किया जाना चाहिए, ताकि समाजसेवा के प्रति अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिल सके।

सेव अर्थ फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. टी. सुरेंद्र ने स्वयंसेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है। उन्होंने मातृभूमि के लिए एक करोड़ पेड़ लगाने का संकल्प लिया है। इस अभियान के तहत अब तक पांच लाख से अधिक पौधे लगाने में योगदान दिया जा चुका है।

इसके साथ ही संस्था की ओर से वर्षा जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 3,000 से अधिक वर्षा जल संग्रहण संरचनाओं का निर्माण भी किया गया है। संस्था का उद्देश्य जल संरक्षण और हरित पर्यावरण के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखना है।

सेव अर्थ फाउंडेशन ने धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाई है। संस्था की ओर से 25,000 से अधिक भगवद्गीता की प्रतियां वितरित की जा चुकी हैं।

इसके अलावा स्कूल, मंडल एवं जिला स्तर पर सैकड़ों विद्यालयों में भगवद्गीता कंठस्थ करने से संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाना है।

डॉ. टी. सुरेंद्र को सामाजिक एवं पर्यावरणीय सेवा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए इससे पहले भी कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। इनमें विश्व गुरु वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, कोरोना वॉरियर, इंडियन आइकन, पर्यावरण मित्र, सेवरत्न, वनमाली और नेल्सन मंडेला एक्सीलेंस अवार्ड प्रमुख हैं।

ये सम्मान पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, सामाजिक सेवा और जनजागरूकता के क्षेत्र में उनके निरंतर प्रयासों को दर्शाते हैं।

सम्मान समारोह और इसके बाद आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग, सेव अर्थ फाउंडेशन के प्रतिनिधि, मित्र एवं स्वयंसेवक शामिल हुए। उपस्थित लोगों ने डॉ. टी. सुरेंद्र और संस्था की पूरी टीम को 'मदर इंडिया नेशनल अवार्ड 2026' मिलने पर बधाई दी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक गोपाल अग्रवाल द्वारा श्री शेषसाई इंटरप्राइजेज प्लॉट नंबर. 98/1, को-ऑपरेटिव इंडस्ट्रीयल एस्टेट, गांधी नगर, बालानगर के पास मेडचेल-मल्काजगिरि जिला. हैदराबाद 500037, तेलंगाना स्टेट से मुद्रित तथा प्लॉट नं. ए-23/5 तथा 6, दूसरा माला, ओपीआईई, बालानगर, हैदराबाद, मेडचल मलकाजगिरी जिला, तेलंगाना राज्य-500037 से प्रकाशित। आर. एन. आई रजिस्टर्ड नं. TELHIN/2019/78163, फोन नं. 040-29551811. E-mail : dailyshubhlabh@gmail.com.